RNI - MPBIL/2008/26448

डाक पंजीयन– म.प्र./भोपाल/4–167/2024–26

भला हो जिसमें देश का वह काम सब किये चलो

नवलय

रजत जयंती वर्ष

नवलय अनुबोध

पौष–माघ, युगाब्द 5127, वर्ष 18 अंक 10, प्रेषण तिथि 15 दिसम्बर 2025, पृष्ठ 36

मूल्य 25/– रु., प्रकाशन तिथि 14 दिसम्बर 2025, ISSN No. 2456 - 0499

212 वां अंक

अ - सफलता

अंक

क्या आप

प्रतिदिन 2.75 रू. वंचित वर्ग के बच्चों की शिक्षा के लिये दान कर सकते हैं?

यदि हाँ ! तो इस अभियान का अंग बनिये।
कम से कम 1000 रू. वार्षिक दान करें।

नवलय ज्ञानदान

चलो जलायें दीप वहाँ जहाँ अभी भी अंधेरा है।

योजना प्रारम्भ से अब तक, वंचित वर्ग के बच्चों की शिक्षा हेतु ₹ 5,69,344/- की सहायता दी जा चुकी है

इस माह जिनसे सहयोग राशि प्राप्त हुई :
1. श्री हजारीलाल मीणा, जयपुर

वार्षिक सहयोग राशि का भुगतान सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया की किसी भी शाखा में/ नेट बैंकिंग/गूगल पे/पेटीएम से कर सकते हैं

खाते का नाम - नवलय ज्ञानदान (Navalaya Gyandan)

खाता क्र. - 3164047076

बैंक - सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, जेल रोड, भोपाल

IFSCode – CBIN 0283134

Scan here to pay

NAVALAY HUZUR
क्यू आर कोड को स्केन कर राशि प्रेषित कर सकते हैं।

आपके द्वारा दिया गया दान आयकर धारा 80/जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगा

सम्पर्क करें : 9425005033, 9300494833

नवलय का मासिक प्रकाशन

नवलय अनुबोध

वर्ष 18 अंक 10, दिसम्बर -2025

संपादक
आशीष शर्मा

संपादक मण्डल
दीपक भसीन, राकेश कुमार जैन,
डॉ. पूर्णिमा दाते,

प्रबंधक
अनिल नेमा

प्रकाशक व मुद्रक
राकेश कुमार जैन

स्वामित्व
नवलय
54, जोन-2, महाराणा प्रताप नगर,
भोपाल - 462011
E-mail :
navalayaanubodh@gmail.com
Web.: www.navalaya.org
फोन : 9425005033, 9425011865

प्रेषण व्यवस्था
सत्येन्द्र श्रीवास

मुद्रण
श्री श्रद्धा ऑफसेट प्रिंटर्स,
एस–बी– लोअर ग्राउण्ड, विजय स्तम्भ, भोपाल
फोन : 0755–4235459

मूल्य : रू 25/-
वार्षिक शुल्क : रू 300/-
द्विवार्षिक शुल्क : रू 500/-

ISSN No. 2456 - 0499

मासिक पत्रिका

नवलय अनुबोध का इंटरनेट संस्करण हमारी वेबसाइट : www.navalaya.org पर उपलब्ध है।

सम्पादकीय	04
अभिमत	05
नज़रिया	06
सफलता और असफलता	07
कर्म फल, भाग्य और अस्तित्ववाद	08
क्या है प्रारब्ध ?	09
असफलता भाषायी समझ की	09
असफलता के निशान	10
सफलता में उम्र बाधा नहीं	11
भविष्य में झाँकने का प्रयास....	12
किताब के पन्नों से	12
हमारी असफल परियोजनाएं	13
अनिल अम्बानी - असफलता...	14
असफलता प्रजाति संरक्षण की	15
सार्वजनिक क्षेत्र की असफलताएं	16
असफल कानून व्यवस्था	17
भूदान और ग्राम दान - असफल...	18
वैश्विक मंच पर असफल भारतीय...	19
असफलता का स्मारक - मण्डेलश्वर...	20
असफल सरकारी लोक शिक्षण	21
असफल नियामक और नकली दवाएं	22
असफल - जन स्वास्थ्य सेवाएं	23
भारतीय नौसेना की असफल सुरक्षा	24
हिंदी सिनेमा-गीतों में छिपा दर्शन	25
भारतीय सिनेमा का सबसे असफल...	26
संघ लोक सेवा परीक्षा में पास फेल	26
भारतीय सिनेमा - सर्वाधिक फ्लॉप...	27
कैसे लें असफलता को ?	28
सफलता का एक सोपान - निरंतरता	29
शिक्षा क्षेत्र के आनंद कुमार - सुपर 30	30
सफलता के द्वार के लौटे व्यक्ति	31
महिलाएं जिनकी सफलता को...	32
21वीं सदी का नशा : इंस्टाग्राम,...	33
सन्दर्भवश	34

प्रस्तुत विचार लेखकों के अपने विचार हैं। नवलय अनुबोध का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है

सम्पादकीय

मानव इतिहास में बहुत समय से एक प्रश्न आज भी अनुत्तररित है. यह प्रश्न है क्या जीवन में जो कुछ घटित हो रहा है वह पहले से तय है ? या हर परिणाम के पीछे कोई कारण है. क्या है सफलता और असफलता का खेल ? क्यों किसी को सहज ही उपलब्ध है सब कुछ. भाग्य की देवी उस पर कृपालु है और किसी को पूरे प्रयासों के बाद भी जीवन भर कोई फल नहीं मिल पा रहा. क्या जीवन कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन है ? कितनी कौतुकपूर्ण घटनाएं घट रही हैं चारों ओर, ब्रम्हांड में निहारिकाओं के अबूझ संसार से लेकर भाग्यफल देखते ज्योतिषी तक और तोते का पिंजरे से निकलकर एक कार्ड उठाने तक का कौतूहल, बारहवीं में अनुत्तीर्ण एक छात्र भारतीय पुलिस सेवा में प्रवेश पा लेता है और सराय कालेखां के आसपास कई वर्षों से प्रयास करते अभ्यर्थी संघ लोक सेवा आयोग की प्रिलिम तक उत्तीर्ण नहीं कर पाते ? क्या जीवन में सफलता और असफलता निर्धारण किसी ऊपर वाले के पास है ?

उगते सूरज को नमस्कार के विपरीत, नवलय इस अंक को ''असफलता अंक'' के रूप में प्रस्तुत करता है. सामान्यतः सफलता के निशाँ होते हैं, शिखर होते हैं, असफलता की सिर्फ छोटी सी कहानी होती है. कुछ कहानियों के माध्यम से असफलता और उसके कारणों या बेवजह असफलता के आकलन का यह प्रयास है.

अंक में दो बिंदुओं पर विस्तार है, पहला, हमारे हाथ में क्या है और क्या नहीं. क्या सफलता बटेर हाथ लगने जैसी कोई घटना है ? या यह ईश्वर का विधान है जिसे पहले ही लिखा जा चुका है ? दार्शनिक क्या कहते हैं, विचारकों ने कैसे देखा है इस विषय को, इस पर चर्चा होगी. दूसरा, कैसी विसंगतियां हैं इतिहास की, एक कंपनी व्यापारी बनकर दक्षिण एशिया के एक बड़े हिस्से पर अधिकार कर लेती है, कैसे एक लाख की सेना, 12,000 की बाबर की सेना से परास्त होती है. कैसे एक पानी का पंप बनाने वाली कंपनी बंद हो जाती है लेकिन हर पानी के पम्प को उसके ब्रांड के नाम से जाना जाता है. क्यों और कैसे बंद हो गयी आईडीपीएल और कैसे एचएमटी की घड़ियाँ बाजार से लुप्त हो गयीं.

जीत हार के अतिरिक्त, थोड़ा सा दर्शन में भी जाना होगा, बुल्ले शाह क्यों कहते हैं ''बुल्ला की जाणा मैं कोण ? क्या गीता ज्ञान प्रासंगिक है या चार्वाक और राजा भाई गुर्जर सही कह रहे हैं, या नीत्जे ? कवि शैलेन्द्र के गीत की पंक्तियाँ हैं, किसी का दर्द मिल सके तो ले उधार, जीना इसी का नाम है. क्या है अस्तित्ववाद ? क्या हैं पूर्वी और पश्चिमी दार्शनिकों के मत. देखेंगे इस अंक में. क्या स्थायित्व मिथ्या है ? क्या जो कुछ दिखता है वह माया है ? कितना परिवर्तनशील है संसार ? सहारा मरुस्थल कभी हरा भरा था तो राजस्थान के मरुस्थल की रेत में वो शंख पाये जाते हैं जो समुद्र की गहराइयों के निवासी हैं. माउंट एवेरेस्ट की चोटी पर जो लवण उपस्थित हैं वे समुद्र में पाये जाते हैं. उसमें विविध प्राणी और वनस्पति जगत का इंद्रधनुष विभिन्न मौसम, क्या सब कुछ योजनाबद्ध है ? यदि हाँ तो क्या सच में 'लाभ हानि, जीवन मरण, यश अपयश' के अतिरिक्त सफलता भी किसी की निगरानी में है ?

प्रयास है यह अंक उन अबूझ प्रश्नों के उत्तर खोजने का. इसमें अचानक हारे हुए युद्ध, बंद हो गयी कम्पनियाँ जो किसी समय शिखर पर थीं, निजी प्रखरता के बाद किसी व्यक्ति का अचानक अवसान, ऐसे कई विचार जो सामायिक थे, दीर्घजीवी न हो पाए, उनके कारणों का विश्लेषण इस अंक में पाएंगे पाठक. क्या आशीर्वाद फलित होते हैं ? क्या ईश्वर से की गयी प्रार्थना स्वीकार होती है ? क्या सफलता प्राप्ति के मन्त्र काम करते हैं ? जब सारे अखबार गारंटीड सफलता के विज्ञापनों से भरे हैं तो इनका सच क्या है ? अगर श्रम सफलता की निश्चित कुंजी है तो हर मेहनती व्यक्ति सफल क्यों नहीं है ? प्रयास करेंगे जानने का, इस अंक में.

जीत हार, शिकस्त और फतह, अंग्रेजी में डिफीट और विक्ट्री, हिंदी में सफलता और असफलता के दार्शनिक पक्ष को विस्तार देता है यह अंक. असफलता के उदाहरणों से समझने का प्रयास करता है यह अंक, क्या सफलता और असफलता दोनों केवल तुक्का हैं ? सुधी पाठकों को इस गूढ़ विषय पर अंतर्दृष्टि देने का प्रयास है नवलय का ''असफलता अंक''. ■

पाठकों की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी.

वर्मा

कालजयी कथन

सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ
हानि, लाभ, जीवन, मरण, जस, अपजस, विधि हाथ

(गोस्वामी तुलसीदास - रामचरित मानस अयोध्या काण्ड द्वितीय सोपान)

मुनिनाथ ने बिलख कर कहा, ''हे भरत होनहार बड़ी बलवान है लाभ हानि जीवन मरण यश अपयश ईश्वर के हाथों में है।'' ■

अभिमत

सफलता - बस एक अमूर्त अनुभूति

–राकेश कुमार जैन

असफलता और सफलता को परिभाषित करना कठिन है। हर व्यक्ति के लिए इसके मायने अलग अलग होते हैं। यह वास्तव में एक अनुभूति मात्र है। आपकी जीवनदृष्टि पर यह अनुभूति निर्भर करती है। कोई, पैसा, पद, प्रतिष्ठा, पावर, संपत्ति, भोग सामग्री के संचयन में अपनी सफलता ढूंढता है, तो किसी के लिए अपना परिवार, स्वास्थ्य, बच्चे, शान्तिपूर्ण जीवन, संतोष, खुशी, अपनी रूचि के काम करने में ही अपना जीवन सफल लगता है। यदि स्वयं की अनुभूति के बजाय दूसरों की नजरों से सफलता या असफलता का भाव देखा जाये, तो हो सकता है आप दूसरों की नजरों में सफल हों पर खुद की नजरों में नहीं। ऐसे ही हो सकता है कि दूसरों की नजरों में असफल व्यक्ति स्वयं को सफल मानता हो।

एक पुरानी कहानी याद आती है। एक अति संपन्न, प्रतिष्ठित, संपत्तिवान व्यक्ति अपनी कार से यात्रा कर रहा था। एक सुनसान रास्ते पर यात्रा करते हुए उसकी नजर एक व्यक्ति पर पड़ी। वह फटेहाल व्यक्ति एक पेड़ के नीचे लेटा, अपनी गठरी को सिरहाने रख, बांसुरी बजा रहा था। उस सम्पन्न व्यक्ति को हैरानी हुई। वह अपनी कार रोककर उस व्यक्ति के पास गया और पूछा कि तुम क्या करते हो ? उसने कहा कि मैं बकरियां चराता हूं। उसने पुनः पूछा कि तुम कुछ और काम क्यों नहीं करते ? उस व्यक्ति ने कहा उससे क्या होगा ? तो संपन्न व्यक्ति बोला तुम आगे बढ़ोगे, पैसा कमाओगे। पुनः उस फटेहाल व्यक्ति ने पूछा उसके बाद? सम्पन्न व्यक्ति ने कहा, फिर और पैसा कमाओगे, और संपत्ति अर्जित करोगे, अच्छे मकान में रहोगे, नौकर चाकर सहित अनेक सुख सामग्री जुटाओगे ? उस फटेहाल व्यक्ति ने फिर पूछा उसके बाद ? तो वह सम्पन्न व्यक्ति बोला, उसके बाद तुम चैन की बंसी बजा सकते हो। तो उस फटेहाल व्यक्ति ने आश्चर्यचकित होकर पूछा, तो अभी मैं क्या कर रहा हूं ?

तो यह तो हुई नजरिये की बात। पर दुनिया के सभी मनुष्य इतने सन्तोषी नहीं हो सकते। हर व्यक्ति कुछ न कुछ करना चाहता है और उस कार्य में सफल होना भी। इसी में वह अपनी खुशी ढूंढता है। दरअसल सफलता और खुशी साथ साथ चलती है। जो आप चाहते हैं उसे पाना सफलता और जो आप पाते हैं उसे चाहना खुशी देता है। इसी प्रकार अपने चाहे हुए कार्य में असफल रहना, निराशा उत्पन्न करता है। तो कह सकते हैं कि असफलता और निराशा एक दूसरे की अभिन्न मित्र हैं। इन दोनों की इस अभिन्न मित्रता को तोड़ने वाला, अन्ततः सफलता प्राप्त कर लेता है। दुनिया ऐसे अनगिनत उदाहरणों से भरी पड़ी है जब लगातार कई बार, कई साल असफलता देखने वाले ने निराशा को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। दृढ़ इच्छाशक्ति, अपने काम और उद्देश्य के प्रति प्रतिबद्धता, जिम्मेदारीपूर्ण व्यवहार, अच्छा चरित्र, सकारात्मक दृष्टिकोण, हिम्मत न हारने की शक्ति, कार्य की निरंतरता, हमेशा सीखते रहने की उत्कंठा, अपने काम के प्रति बेहतरी और गर्व का अहसास आदि अनेक गुण आपको असफलता के बावजूद सफलता दिला सकते हैं। मार्टिन लूथर किंग जूनियर कहते हैं कि यदि आपको सड़क साफ करने का काम भी मिले तो उसे इतनी खूबसूरती से करो जैसे माइकलएंजेलो चित्रकारी करता था या शेक्सपियर लेखन। आपका काम इतना बेहतर होना चाहिए कि लोग देखकर कहें कि सफाई वाले ने अपना काम गर्व और अच्छी तरह किया।

इसी के साथ हरेक व्यक्ति को अपना एक ध्येय अवश्य चुनना चाहिए। किसी ने कहा है, ''जिस कार्य में आपकी प्रवृत्ति है, उसी में लगे रहिए, आपकी बुद्धि आपको जो मार्ग दिखाती है, उसे मत छोड़िए, प्रकृति आपको जो कुछ बनाना चाहती है, वही बनिए। आपको अवश्य विजय मिलेगी।'' कहावत है कि जिस मल्लाह को अपनी यात्रा के अंतिम बंदरगाह का ज्ञान नहीं, उसके अनुकूल हवा कभी नहीं बहती। अतः आवश्यकता सिर्फ इस बात की है कि हम अपने ध्येय और कर्तव्य की अनुभूति कर सकें। हमारा असल उद्देश्य उस कार्यक्षेत्र की खोज करना होना चाहिए, जिसमें हम पूरी तरह डूब सकें। साध्य का ख्याल हमारे ध्यान में हमेशा रहना चाहिए, तभी एक पूरे जीवन में किये गए परिश्रम और साधना से पाई उपलब्धि हमारे लिए किसी भी अन्य सफलता से अधिक मूल्यवान होगी। एक सच्चा ईमानदार जीवन, जिसे अनेकों कठिनाइयां और निराशाएं झुका पाने में सफल न हो सकीं, वह एक निरुत्साही, सपाट जीवन से कहीं अधिक वंदना करने योग्य है।

एक अन्य बात जो विचारणीय है वह यह कि जिस दिन हम यह मान लेते हैं कि किसी विशिष्ट लक्ष्य में असफल होने पर हमारा यह जीवन ही व्यर्थ है, उसी दिन से हमारी मौत हो जाती है। हमें मान लेना चाहिए कि शायद ईश्वर ने हमें किसी अन्य काम के लिए चुना हो।

अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति को किसी एक काम पर केंद्रित कर देना एकाग्रता है और एकाग्रता से हम किसी भी काम को करने में सफल हो सकते हैं। दुर्बल से दुर्बल व्यक्ति भी यदि अपनी आंतरिक शक्तियों को एक काम पर केंद्रित कर दे तो सफल हो सकता है।

इसलिए अपने अन्दर की शक्तियों का अनुभव कर, अपनी पसन्द का काम लक्ष्य बनाकर एकाग्रता से करना ही सफलता को अनुभूत कर लेना है। बस, इस अमूर्त अनुभूति को अपने तक सीमित रहने दें, इसके आधार पर दूसरों को आँकने का प्रयास हरगिज न करें। ■

– मो. 9425005033 Email- bankchetna@gmail.com

नज़रिया

भाग्य-प्रारब्ध-सफलता-असफलता

– दीपक भसीन

ओशो एक कहानी सुनाते थे. एक राजा ने किसी अपराध पर अपने एक मित्र को कोई दंड देकर कारागार भेज दिया. बाद में सोचा कि कोई ऐसी शर्त लगाकर जो सरल हो, और न्याय होता भी दिखे, इस व्यक्ति को स्वतंत्र कर दिया जाए. एक बड़े कमरे में इस व्यक्ति को भेजा गया, कहा गया, आँखों पर पट्टी बाँधी जाएगी. कमरे में 100 दरवाजे हैं, टटोल कर देखना है कौन सा खुला है. जो खुला है उससे निकल जाना तुम्हारी सजा माफ हो जाएगी तुम स्वतंत्र हो जाओगे. व्यक्ति ने द्वार टटोलने शुरू किये, जो दरवाजा खुला था उसके सामने आते ही उसकी नाक पर एक मख्खी बैठ गयी, उस मख्खी को हटाने के चक्कर में वह व्यक्ति खुला दरवाजा पार कर गया बिना उसे टटोले.

एक शहर में कुछ लोग बाजार में रोज की तरह चल रहे थे, एक दंपत्ति अपनी कार में पेट्रोल भरवाने के लिए लाइन में प्रतीक्षा कर रहा था. अचानक एक बहुत ऊंचा और भारी साइन बोर्ड हवा के दबाव से उड़ कर इनकी कार पर गिरता है. दंपत्ति की मृत्यु हो जाती है. एक राष्ट्रीय पर्व का अवसर है, गुजरात के भुज की एक सड़क पर स्कूली बच्चे हाथ में तिरंगा लेकर देशभक्ति के गीत गा रहे हैं, नागरिक उन बच्चों पर पुष्पवर्षा कर रहे हैं, अचानक धरती हिलती है, सड़क के किनारे की अट्टालिकाएं भूकंप के प्रभाव से सड़क पर गिर पड़ती हैं.

प्रारब्ध, कर्मफल, भाग्य, हर उस वस्तु या घटना का नाम है जिसके बारे में कोई अनुमान नहीं लगाया जा सकता. धार्मिक होने में एक सुविधा है कि हर सफलता को अपने नाम और हर असफलता को ईश्वर के नाम दर्ज किया जा सकता है, वरना सच यह है कि अधार्मिक देश अधिक सुखी समृद्ध और अधिक प्रगतिशील हैं. उस जेल से छूटने में असफल व्यक्ति का, उन छोटे बच्चों का और सड़क पर अपनी कार में बैठे दंपत्ति का प्रारब्ध किस कर्मफल से प्रभावित होना माना जाए ? अगर किसी निश्चित चित्र को बनाने का प्रयास करें तो गाजा में 60,000 से अधिक मृतकों का एक सा कर्मफल कैसे हो सकता है ? सफलता असफलता की बात करें तो संघ लोक सेवा आयोग की पूरी परीक्षा उत्तीर्ण करने का बाद भी अनेक बार नौकरी कई सफल प्रत्याशियों को किन्ही तकनीकी कारणों से नहीं मिलती. जीवन के क्षितिज में अनिश्चितता न केवल मानव के साथ बल्कि हर जीव के साथ है. सिर्फ मानव सफल असफल के बीच कोई निश्चितता की किसी पहेली का हल खोजने में व्यस्त है.

सच यह है कि विकल्प बड़े स्पष्ट और बहुत हैं. जस करहि तस फल चाखा एक है, दूसरी है निर्भय हो कर सोय, अनहोनी होनी नहीं होनी होय सो होय, एक बड़ा निर्णायक संकेत है इस्लाम से, जो कुछ भी हो रहा है सफलता या असफलता जीत या हार, वह अल्लाह की मर्जी है. एक ओर कृष्ण कह रहे हैं कर्म करो, फल की चिंता मत करो. क्या यह स्पष्ट संकेत है कि फल कर्म करने वाले के नहीं बल्कि किसी और के हाथ है ? अनिश्चितता के गहरे रहस्य को समझने के बहुत प्रयास हुए हैं, सामुद्रिक, ज्योतिष, लाल किताब, प्रश्न ज्योतिष के अतिरिक्त किसी वृक्ष के नीचे बैठे किसी व्यक्ति के सामने फैले कुछ लिफाफे और छोटे से पिंजरे से निकलते किसी तोते का एक लिफाफा उठाना दृष्टि में कौंध जाता है.

लाभ हानि जीवन मरण यश अपयश विधि हाथ एक व्यापक स्वीकार्यता है लेकिन सफलता के प्रति समर्पण योजनाबद्ध क्रियाशीलता को समझाता हुआ एक वाक्य बड़ा प्रासंगिक है लक में दो शब्द हैं, भाग्य में ढाई अक्षर हैं, नसीब में 3 अक्षर हैं किन्तु इनपर भारी है 4 अक्षरों के शब्द, श्रम. दैव दैव आलसी पुकारा के घोष को स्मरण रखना होगा. बिन चाहे सब कुछ मिल जाना भाग्य है, और मेहनत से मनचाहे को पाना सौभाग्य है. यही सत्य है.

भारत पर्वों की भूमि है, जहाँ हर उत्सव केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता और मानवीय भाग्य और कर्म के बीच से एक मार्ग जाता है भाग्य विधाता से किसी सम्बन्ध का, जो ज्ञान भक्ति या हठ मार्ग के रूप में लिखित है. यह विश्वास कि सफलता असफलता की डोर किसी अन्य के हाथ है, तो उन बातों पर भी विश्वास होने का कारण बनता है जिसके चलते अखबार भरे हैं विज्ञापनों से, निश्चित अवधि में गारंटीड सफलता. अकारण नहीं हैं धर्मगुरु और बाबा जिनका ईश्वर से सामीप्य का विश्वास जनसाधारण को उनके पास ले जाता है. सामान्य सी बात है कि परीक्षा के दिनों में पूजास्थलों के सामने भीड़ बढ़ती है, हर छोटी बड़ी अदालत के आसपास कोई धार्मिक स्थल अवश्य होता है. कर्मफल को तर्क के रूप में प्रस्तुत करते हैं. भक्तिकालीन कवि कहते हैं जो करहूँ सो भरहू नाथ तुम काहे के ? शुभ अशुभ दिशा विचार, चौघड़िया, सब एक ही दिशा में केंद्रित हैं, अभीष्ट की प्राप्ति, सफलता की प्राप्ति. मामला इतना विस्तृत है कि किसी दिन विशेष में कौन सा खाद्य निषिद्ध है, किस दिन कौन से देवता या देवी का उपवास रखा जाना है यह सब एक ही उद्देश्य की प्राप्ति के लिए है, वह उद्देश्य है सफलता, कामयाबी.■

– मो. 9425011865. Email : deepak_bhasin35@hotmail.com

कोई भी इंसान कभी असफल न होकर दिलचस्प नहीं बनता। जितना अधिक आप असफल होते हैं और ठीक हो जाते हैं और सुधार करते हैं, आप एक व्यक्ति के रूप में बेहतर होते हैं। कभी किसी ऐसे व्यक्ति से मिलें जिसने शून्य संघर्ष के साथ हमेशा सब कुछ ठीक किया हो ? उनके पास आमतौर पर एक पोखर की गहराई होती है, या वे मौजूद नहीं हैं।■

– क्रिस हार्डविक

सफलता और असफलता

– दिलीप कुमार जैमिनी

साहिर लुधियानवी के प्रसिद्ध गीत की एक पंक्ति है ''जहाँ में ऐसा कौन है के जिसको गम मिला नहीं ''बड़ा प्रासंगिक है सफलता और असफलता को समझने के लिए. सफलता और असफलता जीवन के दो अनिवार्य पहलू हैं, अचानक लॉटरी निकलना और किसी रेलगाड़ी का अंतिम क्षणों में रद्द होना, यह सब जीवन में अनुभव देते हैं और सीखने की प्रक्रिया को समृद्ध करते हैं। सफलता वह स्थिति है, जब हम अपने निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करते हैं, जबकि असफलता तब होती है, जब हमारे प्रयास अपेक्षित परिणाम नहीं देते। सफलता प्रसन्नता देती है, हालांकि, असफलता को नकारात्मक रूप में देखना उचित नहीं है. यह हमें सुधार का अवसर प्रदान करती है. कुछ नहीं होगा तो अनुभव होगा, यह वाक्य स्मरण रखना होगा. सफलता शब्द हर व्यक्ति के लिए अलग–अलग अर्थ रखती है. अधिकांश लोग सफलता को धन, प्रतिष्ठा, और सामाजिक स्थिति के रूप में देखते हैं। लेकिन क्या वास्तव में यही सफलता यही है ? वास्तव में सफलता का अर्थ केवल भौतिक और बाह्य उपलब्धियों तक सीमित नहीं हैय यह एक व्यापक अवधारणा है जो व्यक्तिगत विकास, संतोष, और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने की प्रक्रिया को भी शामिल करती है।

व्यक्तिगत संदर्भ में सफलता का अर्थ विभिन्न हो सकता है। कुछ लोग इसे अपने करियर में उन्नति के रूप में परिभाषित करते हैं, जबकि अन्य इसे अपनी व्यक्तिगत जीवन में सुख और संतोष प्राप्त करने के रूप में देखते हैं। यह भी महत्वपूर्ण है कि लोग यह समझें कि सफलता एक यात्रा है, न कि एक गंतव्य। जब कोई व्यक्ति अपने लक्ष्यों के प्रति मेहनत करता है और बेहतर बनने का प्रयास करता है, तब वह सचमुच सफल होता है।

सफलता की परिभाषा समय के साथ बदलती रहती है और यह प्रयासों को निरंतरता प्रदान करती है. असफलता एक ऐसी प्रक्रिया है जो हमारी तैयारी और रणनीतियों को सुधारने में मदद करती है। जब एक बार हम असफल होते हैं, तो हम पुनः विश्लेषण करते हैं कि कौन–सी बातें ठीक नहीं हुईं और किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। यह आत्म–मूल्यांकन हमें अगले प्रयास में और अधिक सजग और अनुभवी बनाता है। असफलता से मिलने वाली सीखें हमारे भविष्य के निर्णयों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस प्रकार असफलता वास्तव में हमें सिखाने का कार्य करती है और हमें मजबूत बनाती है। इस प्रकार, असफलता को एक अंत के रूप में नहीं, बल्कि एक सीखने की प्रक्रिया के रूप में लेना चाहिए। यह हमें आगे बढ़ने और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करती है, जिससे असफलता की वास्तविक महत्वपूर्णता को समझा जा सकता है। थॉमस एडिसन ने 1,000 से अधिक बार बल्ब के लिए प्रयोग किया, लेकिन उनकी असफलताओं ने उन्हें आखिरकार सफलता की ओर अग्रसर किया। सफलता का अर्थ केवल उपलब्धियां नहीं है, बल्कि यह असफलताओं से सीखने की प्रक्रिया है. कई बार यही असफलताएँ ऐसी प्रेरणा बन जाती हैं, जो हमें मजबूत बनाती हैं। इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि हम असफलताओं को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखें। दूसरा दृष्टिकोण सामाजिक मान्यता है। कई व्यक्तियों और समुदायों के लिए, सफलता का अर्थ बाहरी मान्यता और सामाजिक सम्मान प्राप्त करना है। ऐसे लोग अपनी उपलब्धियों के लिए समाज की प्रशंसा को महत्वपूर्ण मानते हैं। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति जो एक प्रतिष्ठित पुरस्कार या सम्मान प्राप्त करता है, समाज में उसकी पहचान और रुचि को बढ़ाता है। इस प्रकार की सफलता व्यक्ति की सामाजिक स्थिति को प्रभावित करती है और यह उसके जीवन के मूल्यांकन में महत्वपूर्ण होती है। असफलता का डर एक सामान्य मानव भावना है, जो कई लोगों को उनके सपनों और लक्ष्यों से दूर कर सकता है। यह डर अक्सर किसी भी नई चुनौती का सामना करते समय उत्पन्न होता है, विशेष रूप से कार्यस्थल या व्यक्तिगत जीवन में महत्वपूर्ण निर्णयों के समय। असफलता के संभावित परिणामों के बारे में सोचना मानसिक तनाव पैदा कर सकता है और आत्म–विश्वास को कम कर सकता है। ऐसे में, यह आवश्यक है कि हम इस डर को काबू में करने के उपायों पर ध्यान दें।

सफलता के मार्ग पर चलना हर व्यक्ति का स्वप्न होता है. इसे प्राप्त करने के लिए एक संगठित दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। सबसे पहले, लक्ष्य निर्धारित करना आवश्यक है। स्पष्ट और मापने योग्य लक्ष्य निर्धारित करने से व्यक्ति को अपनी प्राथमिकताओं को समझने और कार्य योजना बनाने में मदद मिलती है। स्पष्ट, मापने योग्य, प्राप्त करने योग्य, प्रासंगिक, और समयबद्ध लक्ष्यों का उपयोग करना बहुत फायदेमंद सिद्ध हो सकता है। समर्पण और दृढ़ता सफलता के महत्वपूर्ण पहलू हैं। कई बार, व्यक्ति कठिनाइयों का सामना करते हैं और असफलता का सामना करते हैं। ऐसे में, अपनी योजना पर दृढ़ रहना आवश्यक है। असफलता को एक सीखने के अनुभव के रूप में स्वीकार करना और उसे सुधार का अवसर मानना, व्यक्ति को आगे बढ़ने में मदद करता है। ■

(लेखक सेवानिवृत्त बैंक कार्यपालक हैं)

असफलता इतनी महत्वपूर्ण है। हम हमेशा सफलता की बात करते हैं। यह विफलता का विरोध करने या विफलता का उपयोग करने की क्षमता है जो अक्सर अधिक सफलता की ओर ले जाती है। मैं ऐसे लोगों से मिला हूं जो असफल होने के डर से प्रयास नहीं करना चाहते हैं। ■

–जे.के. राउलिंग

कर्म फल, भाग्य और अस्तित्ववाद

कर्म करो फल की चिंता मत करो यह बात कुरुक्षेत्र में कृष्ण ने बताई अर्जुन को. तुलसी रचित रामचरितमानस के बालकाण्ड ''होइ है वही जो राम रची राखा, को करि तर्क बढ़ावइ साखा'', इसका अर्थ, जो कुछ भी होना है वह ईश्वर की इच्छा है. दूसरी तरफ तुलसी कर्म की प्रधानता को सामने रखकर श्रीराम से कहलवा रहे हैं ''कादर मन का एक अधारा देव देव आलसी पुकारा''. कर्मफल को आधार मानते हुए कवि सेनापति कहते हैं ''जो करहूँ सो भरहू, नाथ तुम काहे के''. क्या सफलता असफलता पुरुषार्थ पर या भाग्य पर निर्भर है ?

पहले भाग्य और ईश्वर की बात करें तो सनातनी, मुस्लिम और ईसाई मत के अतिरिक्त किसी ऐसी शक्ति के केंद्र की कल्पना की गयी है जो सृष्टा है पूरी सृष्टि का, उसका सञ्चालन और विध्वंस की शक्ति उसी ईश्वर, अल्लाह और गॉड में निहित है. मान्यता का आधार यह है कि जो भी वस्तु बनी है उसे किसी ने बनाया है, और तार्किक रूप से, जिसने बनाया है वही सभी वस्तुओं और जीव जन्तुओं का भविष्य भी निर्धारित करता है. गुरु नानक के शब्द हैं ''कौन चुगावें कौन खिलाये मन में सिमरन कार्य'' जब पक्षी अपने छोटे बच्चों को छोड़कर अनेक योजन की उड़ान भरता है तो उसके बच्चों को कौन खिलाता है कौन चुगाता है, यह बात स्मरण रखनी होगी. दूसरी तरफ देखें तो संस्कृत का शब्द ईश्वर आता है संस्कृत के शब्द "ईश" और "वरच" (प्रत्यय) के जुड़ने से. ईश का अर्थ प्रभु, स्वामी या नियंत्रण करने वाला है। वर का अर्थ सर्वोपरि है। इस्लामिक मान्यता के अनुसार अल्लाह अकेला है, अल्लाह निरपेक्ष है, न उसकी कोई संतान है और न वह किसी की संतान है और न उसके बराबर कोई है। दार्शनिक कवि बुल्ले शाह के शब्द हैं बुल्ला की जाणा मैं कौन ? क्या अनादि काल से यह प्रश्न अनुत्तरित नहीं हैं कि हम कौन हैं और धरती पर क्यों आये हैं ? क्या उद्देश्य है हमारा धरती पर आगमन का ? एक शताब्दी पूर्व पश्चिम में दार्शनिकों ने कहा कि जब महत्वाकांक्षाएं अनेक हैं और हम अपने कर्मों से अपने भविष्य को गढ़ सकते हैं तो हमारे धरती पर आने के उद्देश्य एक कैसे हो सकते हैं ? यह विचार अस्तित्ववाद के नाम से जाना गया. धीरे धीरे यह दर्शन यूरोप की सीमायें लांघकर विश्व में फैला. फिर चर्चा होने लगी अस्तित्त्व के संकट की. विरोधों और अंतर्विरोधों के बीच यह दर्शन लम्बे समय तक प्रासंगिक बना रहा इसमें संदेह नहीं है.

यूरोप के औद्योगीकरण के साथ निजी महत्वकांक्षा और उसे पूरा करने के साधन सुलभ होने के चलते समूह के स्थान पर व्यक्तिगत कुशलता पर समाज का ध्यान केंद्रित हुआ. लेकिन इस प्रगति से मानव में एकाकीपन बढ़ा, कम से कम पहले विश्वयुद्ध के बाद यह प्रश्न प्रासंगिक हो गया कि प्रगति कितनी ही हो, जब जीवन युद्धों के चलते अनिश्चित है तो फिर एक शून्य का निर्माण हुआ. अब यहाँ पर धर्म प्रासंगिक हुआ क्योंकि समाजशास्त्री मानते हैं कि धर्म केवल मानव और ईश्वर के बीच के सम्बन्ध का विषय नहीं है बल्कि समाज की इकाई के रूप में मानव के आपसी संबंधों का भी विषय है. धर्म इस बात की सुविधा देता था कि असफलता का ठीकरा ईश्वर के नाम फोड़ा जाए. लेकिन इस समय विज्ञान विकसित होने लगा और अनेक ऐसे प्रश्न खड़े होने लगे जिनका उत्तर धर्म सम्पूर्णता में नहीं दे पा रहा था. ऐसे में अस्तित्ववाद एक निश्चित आकार लेने लगा. अस्तित्ववाद के प्रणेता विचारक थे फ्रेंच ज्यां पाल सात्र, जर्मन विचारक फ्रेडरिक नीत्से, मार्टिन हैदिग्गर और धार्मिक अस्तित्ववादी सोरेन क्रिककार्ड. इन विचारकों ने अपने विचारों को 5 विधाओं में अंकित किया. पहला है जीवन का अस्तित्व, उसके सार से अधिक आवश्यक है, दूसरा है वास्तविकता की पहचान, तीसरा है स्वतंत्रता और उसके साथ जुड़े उत्तरदायित्व, चौथा है भावनाएं और पांचवा है अब्सर्डिटी अर्थात बेतुकापन. एक धारणा यह भी रही कि हर मनुष्य का भाग्य पहले से लिखा जा चुका है लेकिन नीत्से का विचार था कि जैसे कुम्हार एक मिटटी का बर्तन बनाता है उसका हर हाथ का इशारा उस घड़े का निश्चित करता है उसी प्रकार मानव अपना भविष्य गढ़ने में समर्थ है. अनेक सफलता की कहानियां जिसमें नायक कठिनतम परिस्थितियों से निकलता है, इस बात का प्रमाण हैं. दूसरी बात है वास्तविकता की पहचान, वास्तविकता वह है जो सर्वमान्य है और दूसरी वह जो व्यक्ति के विचारों और पृष्ठभूमि से प्रभावित होती है. वास्तविकता की पहचान में अनेक लोगों ने अपनी इच्छा से और परिवार की इच्छा के विरोध में जो मन में आया वो किया और वे अपने क्षेत्र में शीर्ष तक पहुंचे. हेक्सलेर मानते हैं कि स्वतंत्रता और जिम्मेदारी दोनों एक ही सिक्के के पहलू हैं. सात्र थोड़ा आगे जाते हैं कि हर व्यक्ति स्वतंत्रता की बाध्यता से बंधा है और हर व्यक्ति के पास विकल्पों की स्वतंत्रता है लेकिन उसके परिणामों के लिए भी वही व्यक्ति उत्तरदायी है. अस्तित्ववाद के अगले बिंदु भावनाओं के बारे में नीत्से कहते हैं कि यह व्यक्ति की वास्तविक ऊर्जा है. वे कहते हैं कि तर्क और आत्मग्लानि से दबी भावनाओं को खुल कर व्यक्त करना चाहिए नहीं तो यह अवसाद का रूप ले सकती हैं. हीदेगेर कहते हैं कि भावनाओं में स्थिति को निरपेक्ष भाव से समझने की नैसर्गिक क्षमता है. अस्तित्ववाद के अगले चरण बेतुकापन या अबसर्डिटी को लेकर किरतगार्ड कहते हैं कि यह स्थिति तर्क शक्ति के शून्य होने पर उत्पन्न होती है. वे जीवन की निरर्थकता और अनिश्चितता की भी बात करते हैं, जिसपर विचार करना दुश्चिंता को जन्म देती है लेकिन यह भी जीवन का एक अभिन्न अंग है. ■

क्या है प्रारब्ध ?

प्रारब्ध शब्द का संस्कृत में अर्थ होता है, "जो प्रारंभ हो चुका हो" यानि पिछले जन्मो में किये गए अच्छे या बुरे कार्यो का परिणाम मिलना प्रारंभ हो गया हो और इसे भोगना ही है। वही प्रारब्ध से हमें जीवन का गहन ज्ञान भी प्राप्त होता है। सौभाग्य एक ऐसी स्थिति या अवसर है जो आशा के अनुरूप या आशा से अधिक हो. सौभाग्य के समानार्थी शब्द हैं उत्तम प्रारब्ध, अच्छी किस्मत, सुंदर या अच्छा भाग्य, खुश किस्मती, खुशनसीब, सआदतमंद, बाबरकत, यथेष्ट सु, कल्याण, मंगल, आनंद, सुख और किसी स्त्री के सौभाग्यवती अथवा सधवा होने की स्थिति, सुहाग, या अहिवात. गीता से उद्धरण लें तो प्रारब्ध कर्म क्या होता है का उत्तर मिलता है. वहीं प्रारब्ध से हमें जीवन का गहन ज्ञान भी प्राप्त होता है। प्रारब्ध को ही हम भाग्य कहते है। व्यक्ति जो भी कार्य करता है वह संचित होता रहता है और उन्ही में से जिनका फल इस जन्म में मिलने वाला होता है, तब वह प्रारब्ध बनकर सामने आता है। कुछ कर्म तो ऐसे होते है जिनका फल तुरंत मिल जाता है जैसे पानी पीना कर्म है और प्यास बुझ जाना फल लेकिन यह प्रारब्ध नहीं है। लेकिन प्रश्न यह है कि क्या प्रारब्ध से मुक्ति संभव है ?

भगवद गीता के अध्याय 3, श्लोक 9 में कहा गया है :–

"यज्ञार्थात् कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः" अर्थात, "बिना स्वार्थ के किया गया कार्य कर्म बंधन से मुक्त होता है।"

कर्म तीन प्रकार के माने जाते हैं, पहला संचित कर्म, वे कर्म जो कई जन्मों से संचित होते आ रहे है और संयोग बनने पर भविष्य में इनका फल मिलता है। दूसरे प्रारब्ध कर्म, वे कर्म जिनका संयोग बन चुका है और उसे इस जन्म में भुगतना ही है। तीसरा प्रकार है क्रियमाण कर्म, वे कर्म जो अभी इस जन्म में कर रहे है जिसका फल भविष्य में मिलता है।

प्रारब्ध कर्म मुख्यतः तीन प्रकार के होते है पहला इच्छित प्रारब्ध या सुखद प्रारब्ध, यह हमारे द्वारा अच्छे कार्यो का फल होते है जो सुख और प्रसन्नता देते है। इनमें सफलता, अच्छा परिवार, सुखी दाम्पत्य, सुविधाएं, धन आदि प्राप्त होता है। दूसरे अनिच्छित प्रारब्ध इनमें दुखद प्रारब्ध अर्थात असफलता, पीड़ा, मानसिक या शारीरिक कष्ट, बीमारी, धन हानि आदि भोगना पड़ता है। तीसरा प्रकार है मिश्रित प्रारब्ध या सुख–दुःख प्रारब्ध, जिसमें इसमें अच्छे और बुरे दोनों कर्मो का फल मिलता है जिसमें व्यक्ति दोनों का ही अनुभव करता है।

प्रारब्ध के प्रभाव को कम करने के लिए अपने इष्ट का प्रतिदिन नाम जप करने से व्यक्ति में सहनशीलता आने लगती है जिससे उनमें बुरे कर्मो के प्रारब्ध सहने की क्षमता क्षमता विकसित हो जाती है। प्रारब्ध टाला नहीं जा सकता लेकिन ध्यान नाम स्मरण प्रायाणाम, सत्संग और गुरु का सानिध्य, सेवा और पुण्य कर्म, धैर्य और स्वीकृति, प्रारब्ध को बदला नहीं जा सकता। कम से कम पूर्णतः नहीं, केवल इसके प्रभाव को कम किया जा सकता है उसके लिए आध्यात्मिक रूप से स्वयं को बल देना होगा जिससे इसका असर बहुत कम हो और आपको बहुत थोड़ा ही दुःख मिले। यदि आपका कोई प्रारब्ध बहुत मजबूत है तो उसे भोगना ही है चाहे वह अच्छा हो या बुरा, इसे टालना थोड़ा मुश्किल हो सकता है। इस तरह के एक या दो ही प्रारब्ध हो सकते है।

आध्यात्मिक गतिविधियों से कुछ प्रारब्धों के प्रभाव इतने शून्य प्रतीत हो जाते है की वे घटित तो होते है लेकिन आपको पता नहीं चलता है। आध्यात्मिकता में इतनी प्रबल शक्ति होती है कि बुरे से बुरे भी प्रारब्ध छोटा प्रतीत होता है लेकिन इसके लिए अपने अहंकार को त्यागना होगा, सत्कर्म करने होंगे और सेवाभाव रखना होगा ■

असफलता भाषायी समझ की

विश्व के इतिहास पटल पर लिखी अनेक प्राचीन भाषाएँ आज भी पढ़ी नहीं जा सकी हैं. ये भाषाएँ हैं हड़प्पा लिपि/सिन्धु घाटी लिपि जिसका काल ई. पू. 2600–1900 का है. इसी प्रकार लीनियर ए, मिनोअन सभ्यता की भाषा भी अब तक पढ़ी नहीं जा सकी है. प्रोटो लमिते स्क्रिप्ट जो ई. पू. 3100–2700 काल की है आज तक पढ़ी नहीं जा सकी है. रोंगोरोन्गो जो पैसिफिक महासागर के एक द्वीप की सभ्यता की भाषा है जो 1200–1500 काल की है आज तक पढ़ी नहीं जा सकी है.एट्रस्कन भाषा जो रोमन सभ्य के पहले विकसित हुई थी, आज तक पढ़ी नहीं जा सकी है. ओल्मेक लिपि जो मेक्सिको की लगभग ई. पू. 1200–400 काल की भाषा है आज तक पढ़ी नहीं जा सकी है. टार्टेरिया टैबलेट्स, जो रोमानिया में ई. पू. 5300 में थी, पढ़ी नहीं जा सकी. इसके बारे में विवाद है कि यह लेखन है या प्रतीक मात्र. ■

सफलता असफलता का सर्वोच्च शिखर एवरेस्ट

माउंट एवेरेस्ट विश्व की सबसे ऊंची चोटी होने के अतिरिक्त सबसे बड़ी चुनौती भी है. इतिहास देखें तो अब तक लगभग 7,269 अलग–अलग लोग एवरेस्ट की चोटी पर पहुँच चुके हैं। एवरेस्ट विजय के कुल अभियानों की संख्या 12,884 है. प्रथम प्रयास में एवरेस्ट शिखर विजय करने वालों का प्रतिशत 39 है. ■

असफलता के निशान

हिंदुस्तान मशीन टूल्स (एचएमटी) – एक समय में भारतीय बाजार में गुणवत्ता का प्रतीक था हिंदुस्तान मशीन टूल्स। घड़ियां, ट्रैक्टर, प्रिंटिंग मशीनरी, मेटल फॉर्मिंग प्रेस, प्लास्टिक प्रोसेसिंग मशीनरी, बियरिंग, कृषि और चिकित्सा जैसे उपकरण बनाने के लिए प्रसिद्ध थी एचएमटी। भारत सरकार के स्वामित्व वाली सार्वजनिक क्षेत्र की इंजीनियरिंग कंपनी एचएमटी का प्रारम्भ 1953 को बेंगलुरु में हुई थी। इस कम्पनी की सबसे लोकप्रिय उत्पाद थे इनकी घड़ियाँ। 1970 और 80 का दशक की हर उम्र की पीढ़ी के हाथ में एचएमटी की घड़ियां बंधी होती थी। एचएमटी की घड़ियों को जनता, तरुण, नूतन, प्रिया, निशांत और कोहिनूर जैसे नाम दिए गए थे। घड़ी बनाने वाली इस कम्पनी का समय खराब आया तो नई तकनीक और प्रतिस्पर्था के आगे यह टिक न सकी. 1990 के दशक में कंपनी की वित्तीय मुश्किलें शुरु हुई और 2016 तक पूरी तरह दिवालिया होने के बाद इससे बंद कर दिया गया। उल्लेखनीय यह है कि इनके तुमकुरु संयंत्र से कामगारों को नौकरी से हटाने का पत्र एक मई को दिया गया जो विश्व में मजदूर दिवस के रूप में मनाया जाता है.

राजदूत मोटरसाइकिल – वर्ष साठ, से अस्सी के दशक तक राजदूत, युवाओं में लोकप्रिय मोटर साइकिल थी. सस्पेंशन की गुणवत्ता के चलते यह ग्रामीण क्षेत्रों में भी बहुत लोकप्रिय हुई. रोचक बात यह है कि इसकी चाबी बड़े अनूठी आकृति की थी. वर्ष 1973 की 'बॉबी' फिल्म के बाद युवाओं में यह बहुत लोकप्रिय हुई. राजदूत मोटरसाइकिल का निर्माण एस्कॉर्ट्स ग्रुप करता था. लेकिन भारतीय एस्कॉर्ट्स कम्पनी और जापान की यामाहा ने मिलकर 1983 में यामाहा आरडी 350 राजदूत बाइक का एक नया और दमदार वर्जन लॉन्च किया। इस कम पेट्रोल की खपत और शानदार पिक अप के चलते यह भी अत्यंत लोकप्रिय हुई लेकिन 1990 के दशक में कई दूसरे विदेशी और भारतीय मोटरसाइकिल के भारतीय बाजार में उतरने से प्रतिस्पर्धा बढ़ने लगी। नए डिजाइन, बेहतरीन माइलेज और नई–उन्नत तकनीक वाली बाइक्स के आगे राजदूत की रफ्तार धीमी पड़ने लगी। जिसके बाद ये बाईक भारतीय सड़कों से गायब होती चली गयी।

नया एलएमएल वेस्पा – एलएमएल एक ऐसी भारतीय कंपनी थी जो मोटरसाइकिल, स्कूटर और मोपेड बनाने के लिए भारतीय बाजार में उतरी थी। 1980 और 90 के दशक में एलएमएल ने पिआजिओ के साथ साझेदारी कर बाजार में ''वेस्पा'' मॉडल्स के स्कूटर उतारे। जिसने मध्य वर्ग में काफी लोकप्रियता पायी. लेकिन आगे चलकर प्रतिस्पर्धा के दौर में पिआजिओ के साथ साझेदारी को खत्म होने और नए खिलाड़ियों के मैदान में उतरने के बाद एलएमएल पिछड़ने लगा। 1990 तक भारतीय दोपहिया बाजार में हीरो होंडा, बजाज, टीवीएस नए ब्रांड्स उतरे। इन कंपनियों ने ग्राहकों के बीच अपनी पहचान किफायती, भरोसेमंद और ईंधन–प्रभावी मॉडल्स के रुप में की जिससे एलएमएल पुराने मॉडल और तकनीक के मामले में बाजार की इस दौड़ में पीछे रह गयी और हमेशा के लिए इसकी रफ्तार थम गयी। वर्ष 2012 में, पिआजिओ ने भारत में फिर से प्रवेश कर वेस्पा ब्रांड के तहत स्कूटर्स बाजार में उतारे. लेकिन श्रमिक हड़तालों और वित्तीय परेशानियों के चलते एलएमएल को प्रोडक्शन में रुकावटों का सामना करना पड़ा, जिसके चलते आखिरकार 2018 में एलएमएल कंपनी बंद हो गई. बाजार समाचार यह है कि लोहिया मशीन लिमिटेड इलेक्ट्रिक टू–व्हीलर मार्केट में वापसी कर सकती है लेकिन अब तक ऐसा कुछ हुआ नहीं है.

एम्बेसडर कार – वर्ष 1942 में ब्रजमोहन बिड़ला ने पश्चिम बंगाल के कोलकाता शहर में हिंदुस्तान मोटर्स की स्थापना की थी. 1954 में कंपनी ने भारत में कारों को बनाने के लिए ब्रिटेन की कंपनी मॉरिस मोटर्स से हाथ मिलाया था. भारतीय बाजार में हिंदुस्तान एंबेसडर ने जो प्यार और रुतबा हासिल किया वो शायद ही किसी और कार ने किया होगा। यही वजह है कि आज भी इस कार का नाम लेते हुए लोगों के चहरे पर मुस्कान आ जाती है. लेकिन 60 सालों तक सड़कों पर राज करने वाली ये कार ब्रांड अब अपनी पहचान खो चुकी है. एंबेसडर को 1958 में पहली बार भारत में लाया गया था और 2014 में बंद होने से पहले इसने 56 साल का लंबा सफर तय किया है. हालांकि, समय की मांग के अनुसार नहीं बदलने के वजह से आज कंपनी पूरी तरह बंद हो चुकी है. वर्ष 2014 में हिंदुस्तान मोटर्स के प्लांट से आखिरी बार निकली थी एंबेसडर कार. लेकिन आज भी एम्बेसडर कार का प्रयोग कोलकोता में टैक्सी के रूप में प्रचलन में है.

कोडक – यादों को संजो कर रखने का सबसे बड़ा साधन था कोडक कैमरा। एक दौर था जब फोटोग्राफी की दुनिया पर राज था कोडक कम्पनी का। हम सबके घर में रखी ज्यादातर ब्लैक एंड व्हाईट और रंगीन तस्वीरें, कोडक के कैमरों और रील की ही देन है. कोडक की शुरुआत 1888 में जॉर्ज ईस्टमैन द्वारा हुई थी। उन्होंने पहली बार ऐसा कैमरा प्रस्तुत किया जिसे आम लोग भी प्रयोग कर सकते थे। कोडक ने फोटोग्राफी को आम जनता के लिए सुलभ और सस्ता बना दिया। कंपनी का प्रसिद्ध स्लोगन, ''You press the button, we do the rest,'' फोटोग्राफी की पूरी प्रक्रिया को सरल बनाने की उसकी सोच को दर्शाता था। 20वीं सदी के ज्यादातर हिस्सों में कोडक कैमरा और फिल्म उद्योग का पर्याय बन गया। 1940 के दशक

में 35mm वाले कोडक कैमरे का फिल्मों में भी काफी इस्तेमाल किया गया था। इसके अलावा दूसरे विश्व युद्ध में पत्रकारों ने इस कैमरे से युद्ध की यादगार तस्वीरें उतारी थी। 19वीं और 20वीं सदी में इस कैमरे का बोलबाला रहा। कोडक का फोटोग्राफी के साथ–साथ फिल्म निर्माण, फोटोग्राफिक पेपर, कैमरे और कैमरा रोल्स जैसे विभिन्न उत्पादों में भी एकाधिकार था। 1976 तक, अमेरिका में 85% कैमरों और 90% फिल्म बाजार पर कोडक का कब्जा था। कंपनी न केवल बाजार में अपना दबदबा बनाए हुए थी, बल्कि उन्होंने फोटोग्राफी के क्षेत्र में कई तकनीकी अविष्कार भी किए। लेकिन 21वीं सदी में बदली तकनीक और प्रतिस्पर्धा ने इस कैमरे को बाजार से बाहर कर दिया। 2004 तक ये कम्पनी घाटा झेलते–झेलते दिवालिया हो गयी। डिजिटल कैमरे, डिजिटल फोटोग्राफी और स्मार्टफोन के दौर में कोडक कम्पनी ने खुद को विकसित करने में विलम्ब किया. ग्राहक ने उसकी पुरानी तकनीक से दूरी बना ली और आज कोडक कम्पनी भी किसी पुरानी तस्वीर की तरह बाजार की दुनिया में धुंधली पड़ गयी है।

नोकिया – तकनीक के साथ न चल पाना या तकनीक अपनाने में थोड़ी सी देर भी कितनी घातक हो सकती है इसका सबसे बड़ा उद्दाहरण नोकिया मोबाइल फोन है. कभी शीर्ष पर रही यह कंपनी पिछड़कर सबसे पीछे खड़ी है जिसका मोबाइल की दुनिया में कभी दबदबा रखने वाली नोकिया कंपनी। नोकिया के मोबाइल फोन एक समय भारतीय बाजार में बहुत लोकप्रिय थे। सस्ते और टिकाऊ होने की वजह से हर हाथ में नोकिया का मोबाइल पहुंच चुका था। लेकिन दूसरी कंपनियों के बाजार में उतरने और स्मार्टफोन के दौर में नोकिया ने ऑपरेटिंग सिस्टम को अपग्रेड करने में थोड़ी देर कर दी। जिस वजह से मोबाइल फोन की दूसरी कंपनियों ने अपने एंड्रॉइड और आईओएस और नए–नए मॉडल–फीचर्स से बाजार पर कब्जा करने में सफल रहीं, परिणामस्वरूप नोकिया जैसी मजबूत कंपनी से ग्राहकों को भरोसा टूटता चला गया और आज भारतीय बाजार से इसके फोन लगभग गायब हो चुके हैं।

ऑनिडा टीवी – एकदम अलग विज्ञापन अभियान 'Neighbour's envy, owner's pride' के लिए जाना गया ब्रांड था ओनिडा टीवी. एक समय था जब टेलीविजन बनाने वाली कम्पनियों में ऑनिडा टीवी सबसे बड़ा ब्रांड था. उसके विज्ञापनों ने घर–घर में अपनी पहचान बना ली थी। ऑनिडा का टीवी घर में रखना शान की बात थी। लेकिन समय ने इसे भी भारतीय बाजार से गायब कर दिया। क्योंकि बदलते समय के साथ नई–नई कंपनियां तकनीक और नए डिजाइन वाले फ्लैट और दीवार में आसानी से टांगने वाले टीवी लेकर बाजार में उतरी। लेकिन ऑनिडा ने नई तकनीक को अपनाने में में देर की। जिसकी वजह से दूससरे ब्रांड जैसे सैमसंग, एलजीऔर सोनी ने स्मार्ट टीवी और हाई–रिजॉल्यूशन डिस्प्ले जैसे फीचर्स पर काम किया और दूसरी तरफ चीनी ब्रांड जैसे श्याओमी, वनप्लस, और टीसीएल ने भी कम कीमत पर उच्च गुणवत्ता वाले फीचर्स वाले टीवी बाजार में लाकर ऑनिडा जैसे घरेलू ब्रांड्स की मांग को और कम कर दिया। यही कारण थे कि नए कंपनियां ग्राहकों को लुभाने में आगे निकल गयी और ओनिडा के पुराने मॉडल और तकनीकों वाले टीवी घरों से बाहर हो गए. ■

सफलता में उम्र बाधा नहीं

सूरत की रहने वालीं 80 साल की बकुलाबेन पटेल तैराकी में 500 से भी ज्यादा मेडल और ट्रॉफी जीत चुकी हैं। इसके अलावा वह भरतनाट्यम में स्नातकोत्तर शिक्षा ग्रहण कर कर रही हैं और नृत्य की इस विधा में सबसे वरिष्ठ महिला बन, लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज करा चुकी हैं। यह सब उन्होंने 58 की उम्र से करना शुरू किया, इसके पहले वह एक आम गृहिणी थीं। गुजरात के सूरत की रहने वालीं बकुलाबेन पटेल ने छोटी उम्र में ही अपने माता–पिता को खो दिया, और इस वजह से उनकी पढ़ाई रुक गई। काफी कमियों के साथ रिश्तदारों के यहाँ पली–बढ़ी इसलिए अपने सपनों को पूरा नहीं कर पाईं। बचपन से ही उन्हें खेलों में रूचि थी लेकिन उसमें भी आगे नहीं बढ़ पाईं। बकुलाबेन सिर्फ 9वीं क्लास में थीं जब उनकी शादी हो गई. 50 की उम्र तक गाँव में रहते हुए उन्होंने अपने घर–परिवार को बखूबी संभाला। 1994 में उनके पति का निधन हो गया। इस समय जब वह अकेली हो गईं, तो नाती–पोते जीने का सहारा बने। बकुलाबेन रोज अपने पोते और पोती को स्कूल छोड़ने और लेने जाया करती थीं। इसी दौरान दादी ने बच्चों को खेल–खूद में हिस्सा लेते देखा और उनका बचपन का सपना फिर से जाग उठा।

पोते–पोती से प्रेरणा लेकर बकुलाबेन ने भी एथलेटिक्स शुरू किया। 59 की उम्र में उन्हें स्विमिंग में रूचि के चलते इन्होने प्रशिक्षण लेना प्रारम्भ किया. इस आयु में तैराकी सीखना सरल नहीं था. बकुलाबेन क्लासिकल डांस में भी सिद्धहस्त हैं. ■

सिद्धांत कुछ ऐसा लगता है कि जब तक इंसान असफल रहता है वो ईश्वर की संतान होता है, लेकिन जैसे ही वह सफल हो जाता है वो शैतान द्वारा अपना लिया जाता है। ■
– एच .एल . मेन्केन

भविष्य में झाँकने का प्रयास- लाल किताब

सफलता का अभीष्ट और असफलता का भय मानव जीवन का अभिन्न अंग है. जब भी ज्योतिष की बात आती है, तब लाल किताब का उल्लेख अवश्य होता है. यह पुस्तक मूल रूप से ज्योतिष और हस्तरेखा विज्ञान की बात करती है. इसका आधार वैदिक ज्योतिष उपायों को माना जाता है. इसकी सबसे पहली पुस्तक पंडित रूप चंद जोशी ने लिखकर करीब 90 साल पहले लाहौर में प्रकाशित की थी. इसके बारे में कहा जाता है कि रावण ने कहीं से विद्या हासिल करके इस ग्रंथ लिखा था. रूपचंद जोशी ने इसे सामुद्रिक विद्या का नाम दिया. सामुद्रिक का अर्थ है सागर. उनका लक्ष्य भविष्यवाणी की विभिन्न शाखाओं को एक साथ लाकर एक बनाना था. पहली बार यह बात सामने आई कि जो बात कुण्डली से पढ़ी जा सकती है उसे हथेली से भी देखा जा सकता है. लाल किताब वैदिक ज्योतिष के क्षेत्र में खास मानी जाती है, क्योंकि ये ग्रहीय ज्योतिष स्थितियों को हस्त रेखाओं के साथ जोड़कर ही किसी व्यक्ति के बारे में बताया जाता था. चूंकि ये किताबें लाल कवर में प्रकाशित हुईं, इसका नाम लाल किताब पड़ गया. लाल किताब बहुत स्पष्ट शब्दों में आदेश देती है कि इस प्रणाली से संबंधित कोई भी पुस्तक बिना चमक वाले लाल रंग में बंधी होनी चाहिए. वैसे भी लाल रंग हिंदू धर्म पवित्र रंग माना गया है. नदी से गुजरते समय उसमें सिक्के फेंकना, गाय को घास खिलाना, कुत्ते को रोटी देना, पौधों में दूध देना और अविवाहित कन्याओं को भोजन कराना– ऐसे सारे उपाय लाल किताब की ही देन हैं. इसका प्राचीन उर्दू अनुवाद आजकल पाकिस्तान के लाहौर में सरकारी संग्रहालय में सुरक्षित है. परन्तु इसका कुछ अंश गायब हैं. ये ऐसी सबसे ज्यादा प्रचलित किताब है, जिसकी उत्पत्ति भारत में हुई. लाल किताब के उपाय उत्तर भारत और पाकिस्तान के कई हिस्सों में एक लोक परंपरा के रूप में प्रसिद्ध हैं. लाल किताब को अरुण संहिता भी कहा जाता है. ■

किताब के पन्नों से

सफलता कोई मूल्य नहीं है - ओशो

मैं जब पढ़ता था तो वे कहते थे कि पढ़ोगे लिखोगे होगे नवाब, तुमको नवाब बना देंगे, तुमको तहसीलदार बनाएंगे। तुम राष्ट्रपति हो जाओगे। ये प्रलोभन हैं और ये प्रलोभन हम छोटे–छोटे बच्चों के मन में जगाते हैं। हमने कभी उनको सिखाया क्या कि तुम ऐसा जीवन बसर करना कि तुम शांत रहो, आनंदित रहो! नहीं। हमने सिखाया, तुम ऐसा जीवन बसर करना कि तुम ऊंची से ऊंची कुर्सी पर पहुंच जाओ। तुम्हारी तनख्वाह बड़ी से बड़ी हो जाए, तुम्हारे कपड़े अच्छे से अच्छे हो जाएं, तुम्हारा मकान ऊंचे से ऊंचा हो जाए, हमने यह सिखाया है। हमने हमेशा यह सिखाया है कि तुम लोभ को आगे से आगे खींचना, क्योंकि लोभ ही सफलता है और जो असफल है उसके लिए कोई स्थान है ?

इस पूरी शिक्षा में असफल के लिए जब कोई स्थान नहीं है, असफल के प्रति कोई जगह नहीं है और केवल सफलता की धुन और ज्वर हम पैदा करते हैं तो फिर स्वाभाविक है कि सारी दुनिया में जो सफल होना चाहता है वह जो बन सकता है, करता है। क्योंकि सफलता आखिर में सब छिपा देती है। एक आदमी किस भांति चपरासी से राष्ट्रपति बनता है! एक दफा राष्ट्रपति बन जाए तो फिर कुछ पता नहीं चलता कि वह कैसे राष्ट्रपति बना, कौन सी तिकड़म से, कौन सी शरारत से, कौन सी बेईमानी से, कौन से झूठ से ? किस भांति से राष्ट्रपति बना, कोई जरूरत अब पूछने की नहीं है! न दुनिया में कभी कोई पूछेगा, न पूछने का कोई सवाल उठेगा। एक दफा सफलता आ जाए तो सब पाप छिप जाते हैं और समाप्त हो जाते हैं। सफलता एकमात्र सूत्र है। तो जब सफलता एकमात्र सूत्र है तो मैं झूठ बोल कर क्यों न सफल हो जाऊं, बेईमानी करके क्यों न सफल हो जाऊं! अगर सत्य बोलता हूं, असफल होता हूं, तो क्या करूं ? तो हम एक तरफ सफलता को केंद्र बनाए हैं और जब झूठ बढ़ता है, बेईमानी बढ़ती है तो हम परेशान होते हैं कि यह क्या मामला है। जब तक सफलता, सक्सेस एकमात्र केंद्र है, सारी कसौटी का एकमात्र मापदंड है, तब तक दुनिया में झूठ रहेगा, बेईमानी रहेगी, चोरी रहेगी। यह नहीं हट सकती, क्योंकि अगर चोरी से सफलता मिलती है तो क्या किया जाए ? अगर बेईमानी से सफलता मिलती है तो क्या किया जाए ? बेईमानी से बचा जाए कि सफलता छोड़ी जाए, क्या किया जाए ? जब सफलता एकमात्र माप है, एकमात्र मूल्य है, एकमात्र वैल्यू है कि वह आदमी महान है जो सफल हो गया तो फिर बाकी सब बातें अपने आप गौण हो जाती हैं। रोते हैं हम, चिल्लाते हैं कि बेईमानी बढ़ रही है, यह हो रहा है। यह सब बढ़ेगी, यह बढ़नी चाहिए। आप जो सिखा रहे हैं उसका फल है यह, और पांच हजार साल से जो सिखा रहे हैं उसका फल है। सफलता की वैल्यू जानी चाहिए, सफलता कोई वैल्यू नहीं है, सफलता कोई मूल्य नहीं है। सफल आदमी कोई बड़े सम्मान की बात नहीं है। सफल नहीं सुफल होना चाहिए आदमी– सफल नहीं सुफल! एक आदमी बुरे काम में सफल हो जाए, इससे बेहतर है कि एक आदमी भले काम में असफल हो जाए। सम्मान काम से होना चाहिए, सफलता से नहीं। ■

– शिक्षा में क्रांति पुस्तक से

हमारी असफल परियोजनाएं

अमरावती : आंध्र प्रदेश के विभाजन के बाद वर्ष 2014 में 33,000 एकड़ में एक विश्व स्तरीय नगर बसाने की यह योजना थी. राजनैतिक परिवर्तन के चलतए वर्ष 2019 में त्रिस्तरीय राजधानी की कल्पना के चलते अमरावती योजना ठन्डे बस्ते में दाल दी गयी. विष्व बैंक ने 3000 मिलियन डॉलर की स्वीकृति वापिस ले ली. एशियन डेवलपमेंट बैंक ने भूमि अधिग्रहण में विलम्ब के चलते 200 मिलियन डॉलर की स्वीकृति निरस्त कर दी. किसानों की भूमि जो अधिग्रहित हुई वे न्यायालय चले गए. इस बीच आंध्र प्रदेश उच्च न्यायलय ने अमरावती को छह माह में विकसित करने का आदेश पारित कर दिया. अमरावती आज भी एक स्वप्न है.

नैनो सिटी : इसकी परिकल्पना 2002 में हॉटमेल के सह संस्थापक सबीर भाटिया ने प्रस्तुत की. हरियाणा में यह नगर अमेरिका की सिलिकॉन वैली के उत्तर के रूप में प्रस्तावित थी जिसका क्षेत्रफल 11,000 एकड़ था. हरियाणा सरकार ने 2010 में इस नगर की स्थापना के लिए दी गयी अनुमति निरस्त कर दी. इसके रियल एस्टेट पार्टनर पार्श्वनाथ डेवलपर आर्थिक कारणों से प्रगति नहीं कर पाए, वर्तमान में यह आवंटित भूमि अन्य विकास कार्यों के लिए निश्चित कर दी गयी है.

धारावी पुनर्विकास : भारत का सबसे बड़ा झोपड़पट्टी क्षेत्र धारावी मुंबई में स्थित है. वर्ष 1997 में इसके पुनर्विकास का प्रस्ताव रखा गया जिसमे एशिया के सबसे बड़े झोपड़पट्टी क्षेत्र को एक व्यावसायिक केंद्र के रूप में विकसित करना था. वर्ष 2016 और 2018 में ठेके देने की प्रक्रिया शुरू की गयी लेकिन किसी ने इसमें रूचि नहीं ली. इस क्षेत्र में रेलवे की भूमि भी आती है अतः भूअधिग्रहण एक लम्बी प्रक्रिया होती. स्थानीय निवासियों ने उचित मुआवजा न मिल पाने के भय से इस योजना का विरोध किया. वर्ष 2023 में यह ठेका अडानी समूह को दिया गया लेकिन अभी भी अनेक चुनौतियाँ हैं इस परियोजना के पूर्ण होने में.

मत्तेवाड़ा औद्योगिक केंद्र योजना : पंजाब में मत्तेवाड़ा वन क्षेत्र के समीप 955 एकड़ में एक औद्योगिक केंद्र बनाने की परियोजना की कल्पना की गयी. कालान्तर में सतलज नदी और आसपास के पर्यावरण पर पड़ने वाला कुप्रभाव और स्थानीय लोगों के विरोध के कारण वर्ष 2022 में इस परियोजना को निरस्त कर दिया गया.

भारतीय नौसेना का बहुउद्देशीय सपोर्ट वैसल योजना : 2013 में भारतीय नौसेना द्वारा एक बहुउद्देशीय सपोर्ट वेसल का निर्माण प्रस्तावित किया गया. वर्ष 2013 से 2020 तक ठेके नहीं दिए जा सके क्योंकि निविदाकर्ता वित्तीय रूप से समर्थ नहीं पाए गए. 2020 में कॉम्प्ट्रॉलर और ऑडिटर जनरल ने इस प्रोडक्ट की बहुत आलोचना की. वर्तमान स्थिति यह है कि नए ठेके देने की तैयारी की जा रही है

टाटा पावर की नंदगांव सौर ऊर्जा परियोजना : 100 मेगावाट सोलर एनर्जी का प्रोजेक्ट नंद गांव महाराष्ट्र में प्रस्तावित था, जहां पर हरित ऊर्जा का सृजन किया जाना था. यहां पर भू अधिग्रहण में किसानों के आंदोलन और आवश्यक अनुमतियां न मिलने के कारण इस परियोजना को स्थाई रूप से निरस्त किया गया.

रिलायंस नेवल ऑफशोर पेट्रोल परियोजना : वर्ष 2010 में पीपा वाव शिपयार्ड जिसे बाद में रिलायंस नेवल के नाम से जाना गया, जिसमे अगली पीढ़ी की तकनीक से सज्जित एक जलपोत बनाने का प्रस्ताव था. इसे 2016 तक पूर्ण होना था. वर्ष 2020 तक यह जलपोत जल सेवा को नहीं दिया गया रिलायंस नेवल क्योंकि कंपनी वित्तीय संकट में आ गयी और काम रोक दिया गया. वर्ष 2020 में यह परियोजना निरस्त कर दी गई. वर्तमान स्थिति यह है की नए ठेके दिए जा रहे हैं

लवासा परियोजना : यह भारत का पहला पर्वतीय नगर परियोजना थी. इसमें पर्यावरण की चुनौतियां और सरकारी अनुमतियां न मिलने के कारण 2017 में इसका काम रोक दिया गया और वर्ष 2018 में बैंकों ने यहां की परिसंपत्तियां जब्त कर लीं.

विज्हिंजम अंतर्राष्ट्रीय सीपोर्ट : 1991 में केरल में प्रस्तावित यह परियोजना अनेक कारणों जैसे मछुआरों का विरोध और वित्तीय संकट से विलम्बित रही और अब यह काम अडानी पोर्ट्स को सौंपा गया है. ■

नागरिक उड्डयन - असफल योजना

हवाई सेवा में निरंतरता, विस्तार और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की गुणवत्ता किसी भी देश की पहचान होती है. स्थिति यह है कि भारत में आज भी हवाई अड्डे बरसों पहले बनने के बाद, उपयोग में नहीं हैं. इसके उदाहरण हैं दोनकोंडा (आंध्र प्रदेश) दापारीजो (अरुणांचल) रूपसी, शेल्ला (आसाम) जोगबनी मुजफ्फरपुर रक्सौल (बिहार) डीसा (गुजरात), चाकुलिया, देवगढ़ (झारखण्ड), खंडवा, पन्ना (म.प्र.) एजवाल (मिजोरम), नदिरगुल, वारंगल (तेलंगाना) वेल्लोर थंजावूर (तमिलनाडु) कैलाशहर, कमालपुर खोवै (त्रिपुरा), आसनसोल, बालुरघाट और मालदा (पश्चिम बंगाल). इसके अतिरिक्त पाकिस्तान के विरुद्ध ऑपरेशन सिन्दूर के चलते कुछ हवाई अड्डे अस्थायी रूप से बंद किये गए जो इस प्रकार हैं धर्मशाला, हिण्डोन, शिमला, गग्गल, ग्वालियर, किशनगढ़, श्रीनगर, पटियाला, अमृतसर, जैसलमेर जम्मू, लेह, जोधपुर, बीकानेर पठानकोट, हलवाड़ा, जामनगर मुंद्रा भटिंडा ,भुंतर, लुधियाना,चंडीगढ़ भुज केशोद कांडला पोरबंदर और राजकोट. ■

अनिल अम्बानी - असफलता की कहानी

फोर्ब्स की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2021 में भारत में अरबपतियों की संख्या 102 थी जो वर्ष 2022 में बढ़कर 140 हो गयी. प्रकृति का नियम है प्रगति एक दिशा में संधान और एक सामान व्यवहार नहीं करती. अनेक उदाहरण ऐसे भी हैं जहाँ अपने वित्तीय साम्राज्य के शीर्ष पर बैठे श्रीमंत अपने बुरे दिनों में पाए गए हैं. अनिल अम्बानी, उद्योगपति धीरूभाई अम्बानी के पुत्र अपने भाई से सम्पत्तियों के 2008 में बंटवारे के बाद विश्व के छटवें धनी व्यक्ति थे. सम्पत्तियों के परिवार में बंटवारे में, मुकेश अंबानी के हिस्से में पैट्रोकैमिकल्स के कारोबार, रिलायंस इंडस्ट्रीज, इंडियन पेट्रोल कैमिकल्स कॉर्प लिमिटेड, रिलायंस पेट्रोलियम, रिलायंस इंडस्ट्रियल इन्फ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड जैसी कंपनियां आईं. अनिल अंबानी को आरकॉम, रिलायंस कैपिटल, रिलायंस एनर्जी, रिलायंस नेचुरल रिसोर्सेज जैसी कंपनियां मिलीं. वर्ष 2006 में अनिल अंबानी, लक्ष्मी मित्तल और अजीम प्रेमजी के बाद भारत के तीसरे सबसे अमीर बिजनेसमैन थे. फिर दुनिया के छठे सबसे अमीर आदमी भी बने. तब उनकी नेटवर्थ मुकेश अंबानी से 550 करोड़ रुपये अधिक थी. अनिल अम्बानी की असफलता के कई कारण थे।

आयोजन कुशलता की कमी के चलते रिलायंस पावर में जब सरकार ने बढ़ाये गैस के दाम के विरूद्ध अदालत ने सरकार के पक्ष में निर्णय दिया तो यह एक बड़ा झटका था अनिल अम्बानी के लिए जिसमे अनेक परियोजनाएं अटक गयीं. टेलीकॉम बाजार में अनिल अंबानी की कंपनियों की बड़ी हिस्सेदारी थी. अनिल अंबानी कम्युनिकेशंस के बिजनेस में होकर भी टेक्नोलॉजिकल बदलावों को समझने में फेल रहे. व्यवसाय में शीर्ष पर रहने के प्रयास में अनिल अंबानी ने तब एनर्जी से लेकर टेलीकॉम सेक्टर की जिन परियोजनाओं पर खर्च किया उनमें लागत अनुमान कहीं ज्यादा थे और लाभ निरंक था. पर उन्होंने अपनी रणनीति में बदलाव करने में देरी की, जिससे उनके ऊपर कर्ज बढ़ता गया और मुसीबतें बढ़ती गईं. अनिल अंबानी का पूरा फोकस कभी एक कारोबार पर रहा ही नहीं. एक से दुसरे व्यवसाय में जाने का क्रम अंततः उनकी असफलता का कारण बना. दिसंबर 2017 में अनिल अंबानी ने अपनी ऋण कटौती योजना के बारे में प्रेस के सामने बड़ी–बड़ी घोषणाएं कीं. परन्तु अनिल अंबानी की कंपनियों के कर्ज लेने में कोई कमी नहीं आई.

वास्तव में अनिल अंबानी ने ज्यादातर फैसले महत्वाकांक्षा के चक्कर में लिए. वह बिना किसी रणनीति के स्पर्धा को देखते हुए किसी भी कारोबार में कूद जाते थे. जिसका परिणाम रहा कि 2008 की ग्लोबल मंदी में उन पर इतना कर्ज हो गया कि वे दोबारा सम्हाल नहीं पाए. और एक समय ऐसा भी आया अनिल अंबानी ने लंदन कोर्ट के सामने खुद को कंगाल बताते हुए ये कह दिया था कि उनके पास इतने भी पैसे नहीं है कि वो अपने वकील की फीस भर सके. ■

भारत के करोड़पति - अर्श से फर्श तक

पिछले दशकों में भारत में अनेक धनपति शीर्ष से धरातल या रसातल तक जाते देखे गए हैं. कुछ उदाहरण :

सुब्रतो रॉय सहारा : इंडिया टुडे पत्रिका के अनुसार सुब्रतो एक समय में भारत शीर्षस्थ 10 प्रभावशाली व्यक्तियों में गिने जाते थे. वे भारत के दूसरे सबसे बड़े नौकरी प्रदाता थे. लेकिन 24,000 करोड़ के सहारा चिट फंड मामले की जाँच के बाद वे पतन की ओर अग्रसर हुए. अदालत द्वारा सुब्रतो रॉय दोषी पाए गए और उन्हें तिहाड़ जेल में 2 वर्ष तक रखा गया. 75 वर्ष की आयु में वर्ष 2023 में इनकी मृत्यु हो गयी.

रैनबैक्सी के सिंह बंधू : मालविंदर और शिविंदर भाइयों के पास रैनबैक्सी के 33.5% हिस्सा था. वर्ष 2008 में उन्होंने अपने पूर्वजों द्वारा अर्जित संपत्ति को 200 करोड़ में बेचा इसके बाद क्रमिक रूप से अनेक गलत निवेश किये. इनका सबसे बड़ा और गलत निवेश 3,000 करोड़ के ऋण था जो इन्होने अपने आध्यात्मिक गुरु गुरिंदर सिंह ढिल्लों को दिया. आज इनके हिस्से में अदलती कार्यवाहियां और कर्जदारों के नोटिस सही शेष रह गए हैं.

नीरव मोदी : फोर्ब्स की सूची में नीरव का नाम 2017 में अंकित हुआ. इनका ब्रांड विश्वप्रसिद्ध था. वर्ष 2018 में नीरव पर आरोप लगा कि उसने पंजाब नेशनल बैंक से 7 वर्षों के अंतराल में 14,000 करोड़ की धोखाधड़ी की है. उसने तत्काल देश छोड़ दिया और आज उसके प्रत्यर्पण के प्रयास किये जा रहे हैं.

विजय माल्या : को शराब व्यापार विरासत में मिला. वे इस व्यापार में सफल रहे. लेकिन एयरलाइन्स शुरू करने के बाद से स्थितियां बुरी होती चली गयीं. किंगफिशर एयरलाइन्स प्रारम्भ होने के बाद से ही मंदी आ गयी. बैंकों से गलत सुरक्षा देकर ऋण लेने और 9,000 करोड़ के मामले के सामने आने के बाद विजय माल्या ने देश छोड़ दिया.

रामलिंग राजू : इन्होने सत्यम कंप्यूटर सर्विसेज लिमिटेड की स्थापना वर्ष 1987 में की और सॉफ्टवेयर उद्योग में ऊँचाई दर्ज की. यह सॉफ्टवेयर, भारत की चौथी शीर्ष कंपनी रही. इन्होने कंपनी के लेखा जोखा में हेरसफेरी की ताकि कंपनी को लाभ में बताया जा सके. सत्य यह था कि कंपनी का धन भूमि खरीदने में लगा रहे थे. वर्ष 2008 की मंदी ने कंपनी को हानि में ला खड़ा किया. वे अपने भाई और 7 अन्य के साथ कारागार में डाल दिए गए. ■

असफलता प्रजाति संरक्षण की

द स्टेट ऑफ इन्डियाज बर्ड्स 2020 के अनुसार देश में पक्षियों की 101 प्रजातियां विलुप्तीकरण की तरफ बढ़ रहीं हैं, और इनकी सुरक्षा के उपाय तत्काल आवश्यक हैं. इस अध्ययन के लिए लगभग पक्षियों को खोजने वाले 15000 व्यक्तियों के लगभग एक करोड़ अध्ययनों का सहारा लिया गया जो पिछले 25 वर्षों से यह काम कर रहे हैं। पिछले 25 वर्षों के दौरान पक्षियों की 261 प्रजातियों में से लगभग 52 प्रतिशत प्रजातियां संकटग्रस्त हैं, जबकि पिछले 5 वर्षों के दौरान पक्षियों की देखी गई 146 प्रजातियों में से लगभग 80 प्रतिशत प्रजातियां विलुप्तीकरण की तरफ बढ़ रहीं हैं। संकटग्रस्त प्रजातियों में से अधिकतर प्रजातियाँ शिकार योग्य, सम्द्रों के तट पर मिलने वाली और प्रवासी प्रजातियाँ हैं। सलीम अली सेन्टर फॉर ओर्निथोलोजी एंड नेचुरल हिस्ट्री के डॉ आर जैपाल के अनुसार अब तो अनेक सामान्य प्रजातियाँ भी विलुप्तीकरण की कगार पर पहुँच चुकीं हैं. रिपोर्ट के अनुसार प्रजातियों पर संकट के इस दौर में भी मोर, कबूतर, रोजी स्टर्लिंग, ग्लॉसी इबिस, प्लेन प्रिनिया और ऐशी प्रिनिया जैसे पक्षियों की प्रजातियों के सदस्यों की संख्या लगातार बढ़ रही है। दूसरी तरफ सबसे संकट में बंगाल का गिद्ध (वाइट वल्चर), भारतीय गिद्ध, रिचर्ड्स पिपीट, लीफ वेब्लेर, पसिफिक गोल्डन प्लोवर और सैंड पाइपर जैसी प्रजातियाँ हैं। दिल्ली और उत्तर प्रदेश की सीमा पर नोएडा में स्थित ओखला पक्षी विहार में हाल में ही पक्षियों की संख्या का आकलन किया गया। इस आकलन में 115 प्रजातियों के कुल 21061 पक्षी पाए गए, जबकि पिछले गणना के दौरान 73 प्रजातियों के कुल 24347 पक्षी पाए गए थे। द स्टेट ऑफ द वर्ल्डस बर्ड्स नामक रिपोर्ट के अनुसार पूरे विश्व में पक्षियों की संख्या कम हो रही है, और हरेक आठ प्रजातियों में से एक प्रजाति पर विलुप्त होने का संकट है। कृषि में विस्तार के बाद पक्षियों को वनों के कटने, हमलावर पक्षियों और जानवरों से, शिकार से, जलवायु परिवर्तन से और विकास से मुख्य खतरे हैं। लगभग एक दशक पहले तक पर्वतों पर ऊचाई पर या किसी सुदूर टापू पर रहले वाले पक्षी ही विलुप्त होते थे, पर अब तो बहुत सारे प्रजातियाँ जो हमारे आसपास रहती हैं, भी विलुप्त होती जा रही हैं या फिर उनकी संख्या में तेजी से कमी आ रही है। पक्षियों की सारी प्रजातियों में से 40 प्रतिशत में कमी आ रही है, 44 प्रतिशत प्रजातियों की संख्या स्थिर है, 7 प्रतिशत की संख्या बढ़ रही है और 8 प्रतिशत प्रजातियों की सूचना उपलब्ध नहीं है। कुल 1469 प्रजातियाँ ऐसी हैं जिनपर विलुप्त होने का संकट है. पक्षियों की कुल ज्ञात 10996 प्रजातियों में से 13 प्रतिशत, यानि 1469 प्रजातियों, पर संकट अधिक है, और ये प्रजातियाँ विलुप्त होने की दिशा में तेजी से बढ़ रहीं हैं। पक्षियों का शिकार भी बड़े पैमाने पर किया जा रहा है।

भारत में सरकार ने संसद को सूचित किया है कि देश में में विलुप्त होने की कगार पर 73 प्रजातियां हैं. इन 73

प्रजातियों में 9 मेमल्स, 18 बर्ड्स, 26 रेप्टाइल्स और 20 एम्फीबियन की प्रजातियां विलुप्त होने की कगार पर है. पर्यावरण में तेज बदलाव इसकी एक बड़ी वजह मानी जा रही है. संसद में सरकार ने वैश्विक स्तर पर बायोडायवर्सिटी पर नजर रखने वाली संस्था इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर (आईयूसीएन) के हवाले से यह जानकारी दी. सरकार ने बताया कि 2011 में ऐसी 11 प्रजातियां थीं, जो विलुप्त होने की कगार पर थी. आईयूसीएन किसी भी प्रजाति को संकटग्रस्त बताता है, जब माना जाता है कि यह प्रजातियां जंगलों में विलुप्त होने के उच्च जोखिम का सामना कर रहे हैं.

लोकसभा में सरकार ने बताया था कि भारत में मेमल्स, बर्ड्स, रेप्टाइल्स, फिश ओर एम्फीबियन की 47 प्रजातियां गंभीर रूप से विलुप्त होने की कगार पर थीं. सरकार अब उन प्रजातियों को उच्चतम स्तर की सुरक्षा प्रदान करने के लिए वाइल्ड लाइफ (प्रोटेक्शन) एक्ट 1972 के शेड्यूल–1 के तहत शामिल करने की योजना बना रही है, जो विलुप्त होने की कगार पर हैं. गंभीर रूप से लुप्तप्राय मानी जाने वाली मेमल्स की 9 प्रजातियों में आठ स्थानीय हैं. इसका मतलब है कि यह प्रजातियां सिर्फ भारत में ही रहती हैं. इनमें कश्मीर स्टैग/हंगुल, मालाबार लार्ज–स्पॉटेड सिवेट, अंडमान श्रू, जेनकिन श्रू, निकोबार श्रू, नामधापा फ्लाइंग स्क्विरेल, लार्ज रॉक रैट और लीफलेटेड लीफनोज्ड बैट शामिल हैं. गंभीर रूप से विलुप्त होने की कगार पर 18 पक्षी की प्रजातियों में बीयर्स पोचर्ड, ग्रेट इंडियन बस्टर्ड, सोशिएबल लैपविंग, रेड हेडेड वल्चर, व्हाइट रम्प्ड वल्चर, इंडियन वल्चर और स्लेंडर बिल वल्चर शामिल हैं. इनके अलावा विलुप्त हो जाने वाली 26 रेप्टाइल्स की प्रजातियों में पांच भारत के लिए स्थानीय हैं जिनमें आइसलैंड पिट वाइपर भी शामिल हैं, जो कार निकोबार द्वीप समूह में एक ही स्थान तक सीमित है. एम्फीबियन में, कई प्रजातियां पश्चिमी घाट, उत्तर पूर्व और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में निवास तक सीमित हैं.■

सार्वजनिक क्षेत्र की असफलताएं

भारत के नियन्त्रक एवं महालेखापरीक्षक की रिपोर्ट को आधार मानें तो सार्वजनिक क्षेत्र का सत्य सामने आ जाता है. वर्ष 2021 की रिपोर्ट जो वर्ष 2022 में निर्गत की गयी के अनुसार 198 सरकारी कंपनियों और निगमों को हुआ 2,00,419 करोड़ का घाटा हुआ है और इनमें से 88 कंपनियों की कुल संपत्ति घाटे के चलते पूरी तरह खत्म हो गई. 31 मार्च, 2021 तक इन सरकारी का कुल शुद्ध मूल्य 1,13,894 करोड़ रुपये तक निगेटिव हो गया था. केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों की केंद्र सरकार (वाणिज्यिक) की सामान्य प्रयोजन वित्तीय रिपोर्ट–2022 की रिपोर्ट संख्या 27 जो संसद में प्रस्तुत की गयी के अनुसार 88 कंपनियों में से सिर्फ 20 ने वर्ष 2020–21 के दौरान 973 करोड़ रुपये का प्रॉफिट कमाया. रिपोर्ट 453 सरकारी कंपनियों और निगमों से जुड़ी है, रिपोर्ट के अनुसार 453 सरकारी कंपनियों और निगमों (छह वैधानिक निगमों सहित) और 180 सरकार–नियंत्रित दूसरी कंपनियों से संबंधित है. कम से कम 84 सीपीएसई (सरकार द्वारा नियंत्रित 23 दूसरी कंपनियों सहित) जिनके अकाउंट तीन साल या उससे ज्यादा समय से बकाया थे या परिसमापन के अधीन थे या पहले खाते देय नहीं थे, इस 2022 की रिपोर्ट में शामिल नहीं हैं. सरकारी कंपनियों और निगमों द्वारा दाखिल रिटर्न पर आधारित रिपोर्ट में कहा गया है कि 251 सरकारी कंपनियों और निगमों ने 2020–21 के दौरान 1,95,677 करोड़ रुपये का लाभ दर्ज किया जिसमें से 72 प्रतिशत (1,40,083 करोड़ रुपये) का योगदान 97 सरकारी कंपनियों और निगमों द्वारा किया गया.

रिपोर्ट में कहा गया है कि 112 सरकारी कंपनियों और निगमों ने वित्तवर्ष 2020–21 के दौरान 80,105 करोड़ रुपये का डिविडेंड घोषित किया. इसमें से केंद्र सरकार द्वारा प्राप्त लाभांश की राशि 36,982 करोड़ रुपये थी, जो सभी सरकारी कंपनियों और निगमों में केंद्र सरकार द्वारा कुल निवेश (5,12,547 करोड़ रुपये) पर 7.22 प्रतिशत रिटर्न का प्रतिनिधित्व करती है. रिपोर्ट में कहा गया है कि पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय के तहत 10 सरकारी कंपनियों ने 28,388 करोड़ रुपये का योगदान दिया, जो सभी सरकारी कंपनियों और निगमों द्वारा घोषित कुल लाभांश का 35.44 प्रतिशत है. रिपोर्ट के अनुसार 20 सीपीएसई द्वारा लाभांश की घोषणा पर भारत सरकार के निर्देश का अनुपालन न करने के चलते वर्ष 2020–21 के लिए तय लाभांश के भुगतान में 9,449 करोड़ रुपये की कमी हुई. रिपोर्ट यह भी कहती है कि वर्ष 2020–21 के दौरान 173 सीपीएसई को घाटा हुआ. ■

इसरो - असफलताओं के क्षण

वैज्ञानिक अनुसन्धान और शोध के मार्ग सीधे नहीं होते. जब देश गौरवान्वित है इसरो की उपलब्धियों पर, तो स्मरणीय हैं वे क्षण जो निराशा और आंसुओं का कारण बने. उल्लेखनीय है कि इसरो का सफलता का प्रतिशत 91 है. लेकिन पूरे विश्व में अंतरिक्ष अनुसन्धान ऐसी असफलताओं के उदाहरणों से भरी पड़ी है जिसमें जनहानि भी हुई और अंतरिक्ष यात्री की मृत्यु भी हुई. इसरो के असफल प्रयासों की सूची निम्न प्रकार है :

–18 मई 2025 को आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा से भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन का PSLV-C61 रॉकेट लॉन्च। EOS-09 सैटेलाइट को लेकर अंतरिक्ष की ओर बढ़ा, लेकिन उड़ान के ठीक 203 सेकंड बाद, कुछ ऐसा हुआ जिसने सभी को चौंका दिया – तीसरे चरण (PS3) में गड़बड़ी! मिशन मैन्युअली खत्म करना पड़ा।

–10 अगस्त 1979 को भारत का पहला सैटेलाइट प्रक्षेपण वाहन। दूसरे चरण में तकनीकी गड़बड़ी के कारण रॉकेट समुद्र में गिरा.

– PSLV-D1 (**20 सितंबर 1993**) **मिशन :** सॉफ्टवेयर में गड़बड़ी के कारण दूसरा चरण पार नहीं कर पाया.

– GSLV-D3 / GSAT-4 (**15 अप्रैल 2010**) **मिशन :** जिसमें पहली बार स्वदेशी क्रायोजेनिक इंजन का उपयोग किया था, इंजन फेल होने के कारण असफल रहा.

– IRNSS-1H (**31 अगस्त 2017**) **मिशन :** IRNSS-1H नेविगेशन सैटेलाइट का प्रक्षेपण असफल रहा क्योंकि हीट शील्ड अलग नहीं हुआ और सैटेलाइट चौथे स्टेज में ही फंसा रह गया.

– GSLV-F10 / EOS-03 (**12 अगस्त 2021**) **मिशन :** EOS-03 पृथ्वी अवलोकन सैटेलाइट का प्रक्षेपण। इसलिए असफल रहा क्योंकि क्रायोजेनिक चरण में खामी आ गयी.

– SSLV-D1 (**7 अगस्त 22**) **मिशन :** पहली बार SSLV का प्रक्षेपण में सेंसर फेल होने से सैटेलाइट गलत ऑर्बिट में चला गया.

– PSLV-C61 / EOS-09 (**18 मई 2025**) **मिशन :** EOS&09 पृथ्वी निगरानी सैटेलाइट का प्रक्षेपण इसलिए असफल रहा कि तीसरे चरण में तकनीकी गड़बड़ी से राकेट रास्ता भटक गया. ■

असफल कानून व्यवस्था

एनसीआरबी की रिपोर्ट के अनुसार, 2023 में देश में अपराधों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जो 1981 के बाद (2020 को छोड़कर) सबसे अधिक थी। साइबर अपराध, महिलाओं और बच्चों के खिलाफ अपराध, अपहरण, दुर्घटना और हिट एंड रन के मामलों में बढ़ोतरी दर्ज की गई, जबकि हत्या और भ्रष्टाचार के मामलों में कमी आई। दिल्ली में सर्वाधिक अपराध दर्ज हुए। एनसीआरबी ने देश में 2023 में हुए सभी अपराधों के मामले में रिपोर्ट जारी की है। आंकड़ों में देश में 1981 से 2023 तक हुए समस्त अपराधों का तुलनात्मक आंकड़े प्रस्तुत किये गए हैं. रिपोर्ट के अनुसार 2020 को छोड़ दें तो देश में 2023 में अपराध की सबसे अधिक घटनाएं दर्ज हुईं। इसमें साइबर क्राइम, महिलाओं और बच्चों के विरद्ध अपराधों में खासी बढ़ोतरी हुई। इसके अलावा किडनैपिंग, एक्सीडेंट और हिट एंड रन के मामले भी बढ़े। हालांकि, आंकड़ों के मुताबिक हत्या के मामलों में कमी आई है। एनसीआरबी आंकड़ों के मुताबिक, देश के तमाम राज्यों में 2023 में 62 लाख 41 हजार 569 मुकदमे दर्ज किए गए। जो की 2022 में 58,24,946 के मुकाबले 7.2 फीसदी अधिक रहे। अपराधों में सबसे अधिक बढ़ोतरी साइबर अपराधों में हुई। जिसमें 2022 के मुकाबले रिकॉर्ड 31 फीसदी से अधिक की बढ़ोतरी हुई। लोगों के साथ साइबर फ्रॉड, डिजिटल अरेस्ट, सेक्सटॉर्शन और एक्सटॉर्शन जैसी घटनाओं में सबसे अधिक बढ़ोतरी हुई। चोरी के मामलों में भी बढ़ोतरी दर्ज की गई है। जिसमें लोगों के घरों, दुकानों, पब्लिक ट्रांसपोर्ट से उनके सामान चोरी करने के साथ ही घर के बाहर खड़े वाहन और चोरी की अन्य वारदातें हुईं। रिपोर्ट के अनुसार अपहरण के मामलों में पांच प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई। बालिग और नाबालिगों के अपहरण के आए 1,16 404 मामलों में 92 हजार से अधिक महिलाओं का अपहरण किया गया। पांच ट्रांसजेंडर का भी अपहरण किया गया।

आंकड़ों से एक बात और सामने यह भी आई कि अपहरण के मामलों में नाबालिग सबसे अधिक किडनैप किए जा रहे हैं। महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों में भी बढ़ोतरी हुई है। बच्चों के खिलाफ होने वाले अपराधों में नौ फीसदी से भी अधिक की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। हालांकि, हत्या के मामलों में करीब तीन फीसदी और वरिष्ठ नागरिकों के खिलाफ होने वाले अपराधों में भी दो प्रतिशत से अधिक की कमी दर्ज की गई। सीबीआई और एसीबी समेत भ्रष्टाचार के खिलाफ देश में आए दिन होने वाले एक्शनों के बावजूद देश में भ्रष्टाचार के मामलों में करीब दो फीसदी की कमी दर्ज की गई है। देश में एक्सीडेंट और हिट एंड रन के मामलों में खासी बढ़ोतरी हुई है। केंद्र शासित प्रदेशों में दिल्ली में सबसे अधिक अपराध की घटनाएं दर्ज की गई। जबकि चार्जशीट का प्रतिशत यहां अन्य केंद्र शासित प्रदेशों से सबसे कम रहा। कोरोना काल 2020 में देश में अपराध के सबसे अधिक 42,54, 356 मामले दर्ज किए गए थे। जो कि 1981 से 2023 तक सबसे अधिक थे। महिलाओं के खिलाफ 2023 में 4,48,211 मामले दर्ज किए गए। जो कि 2022 के मुकाबले 0.7 फीसदी अधिक रहे। 2023 में महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों की यह संख्या 4,45,256 थी। महिलाओं के खिलाफ हुए अपराधों में अधिकतर उनके पति और रिश्तेदारों ने किए। इनमें 1,33,676 यानी 29.8 फीसदी मामलों में पति और रिश्तेदार शामिल रहे। महिलाओं के अपहरण के 19.8 फीसदी 88, 605 मामले सामने आए। महिलाओं पर उनकी मर्यादा भंग करने के इरादे से हमला करने के 83,891 मामले सामने आए जो 18.71% थे। जबकि 2023 में यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण अधिनियम (POCSO) के तहत 66,232 मामले अर्थात 14.8 प्रतिशत थे. ■

भारत की उड़न परी पी. टी. उषा

पीटी उषा को 'उड़न परी' के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय एथलेटिक्स की सबसे महान धाविकाओं में से एक हैं। उनका जन्म 27 जून 1964 को केरल के कोझीकोड जिले में हुआ था। गरीबी और संघर्षों के बावजूद उन्होंने अपनी मेहनत, लगन और अनुशासन से भारतीय खेल जगत में अपना एक अलग स्थान बनाया। 1980 और 1990 के दशक में भारतीय ऐथलेटिक्स में उनका दबदबा था, और उन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई स्वर्ण और रजत पदक जीते। वह भारतीय एथलेटिक्स की एक महान धाविका हैं। उनकी सफलता का राज उनके समर्पण और मेहनत में छिपा है। उषा ने अपने जीवन में कई मुश्किलों का सामना किया, लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी। हर असफलता को उन्होंने एक नई सीख माना और उससे आगे बढ़ने की प्रेरणा ली। वे हमेशा अपने अनुभवों से सीखती रहीं और खुद को बेहतर बनाने की कोशिश करती रहीं। हमें भी अपनी असफलताओं से घबराना नहीं चाहिए बल्कि उनसे सीख लेकर आगे बढ़ना चाहिए। असफलताएं हमें मजबूत बनाती हैं और सफलता की ओर ले जाती हैं। ■

भूदान और ग्राम दान - असफल प्रयोग

यह भारत में वर्ष 1951 में विनोबा भावे द्वारा शुरू किया गया एक सामाजिक– राजनीतिक आंदोलन था। स्वतंत्रता के बाद उन्होंने महसूस किया कि भूमिहीन का मुद्दा ग्रामीण भारत के सामने एक बड़ी समस्या है और वर्ष 1951 में उन्होंने भूदान आंदोलन या भूमि उपहार आंदोलन शुरू किया। भूदान आंदोलन का उद्देश्य धनी जमींदारों को भूमिहीन किसानों को अपनी भूमि का एक हिस्सा दान करने के लिये राजी करना था। भावे ने गाँव–गाँव घूमकर जमींदारों से अपनी जमीन दान करने का अनुरोध किया तो आंदोलन को गति मिली। भावे का दृष्टिकोण अहिंसा के दर्शन में निहित था। भूदान आंदोलन का अगला चरण ग्रामदान आंदोलन या ग्राम उपहार आंदोलन था जिसका उद्देश्य भूमि के सामूहिक स्वामित्त्व के माध्यम से आत्मनिर्भर गाँव बनाना था। ग्रामदान आंदोलन के तहत ग्रामीणों से आग्रह किया गया कि वे अपनी भूमि एक ग्राम परिषद को दान करें, जो ग्रामीणों को भूमि का प्रबंधन एवं वितरण करेगी। इस आंदोलन को कई राजनीतिक नेताओं का समर्थन मिला तथा इसे ग्रामीण भारत में भूमि के असमान वितरण की समस्या के समाधान के रूप में देखा गया। यह आंदोलन भारत के कई हिस्सों में सफल रहा, हजारों एकड़ भूमि जमींदारों द्वारा दान की गई। भूदान–ग्रामदान आंदोलन का भारतीय समाज एवं राजनीति पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा, इसने भूमिहीनता की स्थिति को कम करने, भूमि का अधिक समान वितरण करने तथा आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के साथ–साथ ग्रामीण समुदायों के सशक्तीकरण में मदद की। इसने समुदाय में सभी को समान अधिकार एवं जिम्मेदारियाँ देकर तथा समुदायों को स्वशासन की ओर बढ़ने हेतु सशक्त बनाकर प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण का मार्ग प्रशस्त किया। विभिन्न राज्यों में ग्रामदान अधिनियम की स्थित इस प्रकार है. वर्तमान में भारत के सात राज्यों में 3,660 ग्रामदान गाँव हैं, जिनमें से सबसे अधिक ओडिशा (1309) में हैं। अन्य छह राज्य आंध्र प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, राजस्थान, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश हैं। सितंबर 2022 में असम सरकार ने राज्य में दान की गई भूमि पर अतिक्रमण का सामना करने हेतु असम भूमि एवं राजस्व विनियमन (संशोधन) विधेयक, 2022 पारित 1961 तथा 1965 के अधिनियम निरस्त कर दिये। उस समय तक असम में 312 ग्रामदान गाँव थे।

इस आंदोलन की बड़ी कमियाँ थीं, दान की गई भूमि या तो अनुपजाऊ या मुकदमेबाजी के अधीन होती थी। दूसरा दान में प्राप्त भूमि को भूमिहीनों के बीच बहुत कम वितरित किया गया था। इसके अतिरिक्त यह उन क्षेत्रों में सफल नहीं हुआ जहाँ भूमि जोत में असमानता थी। साथ ही यह आंदोलन अपनी क्रांतिकारी क्षमता को उजागर करने में भी विफल रहा। ■

समय सीमा पर सरकारी असफलता

परियोजना समय पर पूरी हो, यह देश के विकास के लिए आवश्यक है. विडंबना यह है कि बड़ी परियोजनाएं समय से पूरी न होने के कारण इन परियोजनाओं पर लगने वाली आबंटित राशि से अधिक खर्च करना पड़ता है. इन परियोजनाओं में देरी के कारणों में भूमि अधिग्रहण में विलंब, पर्यावरण और वन विभाग की मंजूरियां मिलने में देरी और बुनियादी संरचना की कमी प्रमुख है। इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र की 150 करोड़ रुपये या इससे अधिक के खर्च वाली 380 प्रोजेक्ट की लागत तय अनुमान से 4.58 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा बढ़ गई है। एक रिपोर्ट में कहा गया है कि देरी और अन्य कारणों से इन प्रोजेक्ट की लागत बढ़ी है। सांख्यिकी और कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय 150 करोड़ रुपये या इससे अधिक की लागत वाली बुनियादी ढांचा परियोजनाओं की निगरानी करता है। मंत्रालय की रिपोर्ट में कहा गया है कि इस तरह की 1,521 परियोजनाओं में से 380 की लागत बढ़ गई है, जबकि 642 परियोजनाएं देरी से चल रही हैं। रिपोर्ट के अनुसार, इन 1,521 परियोजनाओं के क्रियान्वयन की मूल लागत 21,18,597.26 करोड़ रुपये थी, लेकिन अब इसके बढ़कर 25,76,797.62 करोड़ रुपये हो जाने का अनुमान है। इससे पता चलता है कि इन परियोजनाओं की लागत 21.63 प्रतिशत यानि 4,58,200. 36 करोड़ रुपये बढ़ गई है। कुछ योजनाएं 5 साल से अधिक की देरी से चल रही हैं.

रिपोर्ट के अनुसार, अक्टूबर, 2022 तक इन परियोजनाओं पर 13,90,065.75 करोड़ रुपये खर्च हो चुके हैं, जो कुल अनुमानित लागत का 53.95 प्रतिशत है। वैसे इस रिपोर्ट में 620 परियोजनाओं के चालू होने के साल के बारे में जानकारी नहीं दी गई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि देरी से चल रही 642 परियोजनाओं में से 136 परियोजनाएं एक महीने से 12 महीने, 120 परियोजनाएं 13 से 24 महीने की, 260 परियोजनाएं 25 से 60 महीने की और 126 परियोजनाएं 61 महीने या अधिक की देरी से चल रही हैं। इन 642 परियोजनाओं में हो रहे विलंब का औसत 42 महीने है। इन परियोजनाओं में देरी के कारणों में भूमि अधिग्रहण में विलंब, पर्यावरण और वन विभाग की अनुमति मिलने में देरी और बुनियादी संरचना की कमी प्रमुख है। इनके अलावा परियोजना का लोन, विस्तृत निर्माण को मूर्त रूप दिये जाने में विलंब, परियोजना की संभावनाओं में बदलाव, निविदा प्रक्रिया में देरी, ठेके देने व उपकरण मंगाने में देरी, कानूनी व अन्य दिक्कतें, भू–परिवर्तन आदि कारणों से भी इन परियोजनाओं में विलंब हुआ है। ■

वैश्विक मंच पर असफल भारतीय उत्पाद

अमेरिका द्वारा भारत पर लगाए गए शुल्क, विश्व व्यापार संगठन के वैश्विक व्यापार सिद्धांत, अमेरिका के निर्णय के बाद देश में बहस तेज हो गयी. मगर इन शुल्कों के बाद भारत में यह बहस भी छिड़ गई है कि देश को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए क्या करना होगा ? औद्योगिक संगठनों, कंपनियों के शीर्ष अधिकारियों और वरिष्ठ अर्थशास्त्रियों ने भूमि अधिग्रहण, बिजली क्षेत्र, कर, अनुपालन संबंधित प्रक्रियाओं और श्रम कानूनों सहित विभिन्न क्षेत्रों में अगले चरण के सुधार करने का अनुरोध किया है। ये सुधार कारोबार संचालन आसान बनाने के साथ ही भारतीय कंपनियों की प्रतिस्पर्धा में टिके रहने की बुनियादी क्षमता भी बढ़ाएंगे। इस बीच, नीति–निर्माताओं के कुछ अपने विचार हैं। केंद्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि भारत का 1.4 अरब लोगों का मजबूत घरेलू बाजार एक सहज एवं आरामदेह क्षेत्र बन गया है और भारतीय उद्योग जगत को मोटा मुनाफा भी दे रहा है इसलिए उन्हें दुनिया में अवसरों की तलाश में निकलने की जरूरत महसूस नहीं होती है। गोयल की टिप्पणी केवल उनकी नाराजगी या तंज बता कर खारिज नहीं की जा सकती। काफी हद तक यह सच है कि बड़े भारतीय विनिर्माण आधारित औद्योगिक घराने निर्यात बढ़ाने के जोरदार प्रयास करने के बजाय कई तरह के उद्योगों में उतरने और घरेलू बाजार में विस्तार में अधिक दिलचस्पी ले रहे हैं।

कई भारतीय ब्रांड की दुनिया में अच्छी खासी पहचान है मगर वे दुनिया की नामी कंपनियों की सूची में सम्मिलित नहीं हैं. इसका कारण देश में 1991 के आर्थिक सुधारों से पूर्व की व्यावसायिक नीतियों से है। उस समय सरकार सभी व्यावहारिक उद्देश्यों से यह तय करती थी कि कोई कंपनी कितना उत्पादन कर सकती है। प्रतिकूल परिस्थितियों के दौरान सरकार यह भी तय करती थी कि कोई कंपनी किस क्षेत्र में कारोबार करने के लिए उतर सकती है, उसमें कितनी इकाइयां हो सकती हैं। सरकार यह भी तय करती थी कि कंपनियां किस कीमत पर बाजार में अपने उत्पाद बेच सकती हैं। हालांकि, ऐसे दौर भी आए जब सरकार की तरफ से अधिक हस्तक्षेप नहीं हो रहे थे मगर भारतीय औद्योगिक घरानों को तब तक लाइसेंस का प्रबंधन करने की आदत लग चुकी थी। वे जो भी उत्पादन करते थे वे उपभोक्ताओं के पास अधिक विकल्प नहीं होने के कारण हाथों हाथ बिक जाते थे। यह बात कुछ हद तक स्पष्ट करती है कि हमारे पास एक या दो क्षेत्रों में विशेषज्ञता रखने वाली विशाल कंपनियों के बजाय इतने सारे भारतीय कंपनी समूह क्यों हैं। जनरल मोटर्स या फोर्ड ने कार एवं इनसे संबंधित उपकरण बनाकर अपनी एक खास पहचान बनाई। उन्होंने शायद ही कभी किसी दूसरे अलग क्षेत्रों में प्रवेश करने की कोशिश की। दूसरी ओर भारत में बड़े समूहों का उदय हुआ जिनमें टाटा, बिड़ला, गोदरेज, महिंद्रा एवं अन्य शामिल थे। जो समूह शुरू में अपना कारोबार एवं आकार बढ़ाने के लिए एक क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित कर रहे थे, मगर उन्हें भी दूसरे भिन्न क्षेत्रों में विस्तार करने में सहजता महसूस हुई। यह बात रिलायंस और अदाणी समूह की विस्तार योजनाओं में आराम से दिख जाती है। हालांकि, अदाणी समूह कम से कम बंदरगाह क्षेत्र में एक बड़ी वैश्विक कंपनी बनने के लिए प्रयासरत है.

वर्ष 1991 के बाद स्थितियां बेहतर जरूर हुईं मगर कई मुश्किलें बनी रहीं। कड़े नियमों और कम लागत पर पूंजी तक पहुंच आसान नहीं होने से केवल कुछ चुनिंदा उद्योग ही आगे बढ़ पाए, जबकि कई अन्य उद्यम प्रतिस्पर्धा में टिक नहीं पाने के कारण छोटे और गैर प्रतिस्पर्धी बने रहे। कुछ क्षेत्रों ने तमाम मुश्किलों से मुकाबला कर आगे बढ़ने में सफलता हासिल की। वाहन सहायक उपकरण और जेनेरिक फार्मा इसके उदाहरण हैं लेकिन इनमें भी वैश्विक स्तर पर दमखम रखने वाली कंपनियां उभर कर नहीं आई हैं। पूर्व में और अब भी कुछ सम्मानजनक प्रयास हुए हैं। कुछ दोष बड़े भारतीय उद्योग समूहों पर लगाए जा सकते हैं जिन्होंने अपने आकार और संसाधनों के बावजूद वैश्विक स्तर पर धाक जमाने का लक्ष्य साधने के बजाय घरेलू प्रणाली का प्रबंधन करना पसंद किया।

श्रम, अनुपालन, भूमि अधिग्रहण और अन्य समस्याओं पर काफी कुछ लिखा जाता है। ये सभी वास्तविक हैं मगर अक्सर जिस बात को दबा दिया जाता है वह यह है कि किसी भी सरकार ने घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा और गुणवत्ता बढ़ाने या उपभोक्ताओं के लिए लागत कम करने का कोई प्रयास नहीं किया। जिन देशों को हम निर्यात करते हैं वहां बेची जाने वाले उत्पादों की गुणवत्ता अक्सर अधिक होती है जबकि भारतीय उपभोक्ता घर पर उसी उत्पाद के लिए अधिक भुगतान करते हैं और गुणवत्ता भी उतनी अधिक नहीं होती है। इस्पात से लेकर सीमेंट, वाहन से लेकर पैकेट बंद खाद्य पदार्थ तक सभी के मामले में भारतीय उपभोक्ताओं का ख्याल नहीं रखा जाता है। यह स्थिति एक विकृत प्रोत्साहन को बढ़ावा देती है। भारत में काम करने वाली वैश्विक कंपनियां भी अक्सर विदेश में और घरेलू बाजार में जो सामान बेचती हैं उनकी गुणवत्ता में फर्क रखती हैं। शायद भारतीय नीति निर्माताओं को इस मुद्दे पर भी बहस करनी चाहिए। ■

अच्छे निर्णय के संकेत के साथ, किसी भी चीज से डरना नहीं, असफलता या पीड़ा या मृत्यु से भी नहीं, यह दर्शाता है कि आप जीवन को सबसे अधिक महत्व देते हैं। आप चरम पर रहते हैं, आप सीमा को धक्का देते हैं, आप अपना समय विरासतों के निर्माण में लगाते हैं। आप मरते नहीं हैं। ■

– क्रिस जैमिक

असफलता का स्मारक - मण्डेलश्वर बाँध

मध्यप्रदेश सरकार की एक महत्वपूर्ण परियोजना, जो 32 वर्ष पहले शुरू की गयी थी, और अब इसे समाप्त करने की घोषणा की जा चुकी है. खरगोन जिले में मंडलेश्वर क्षेत्र में नर्मदा नदी के ऊपर बनी महेश्वर जल विद्युत परियोजना, आज तक पूरी न हो पायी और इन 32 वर्षों में इस बाँध से एक यूनिट बिजली तक नहीं बन पाई, जबकि इस इस परियोजना पर अरबों रुपए लग चुके हैं. दरअसल, नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल की इंदौर विशेष पीठ ने महेश्वर बांध प्रोजेक्ट को पूरी तरह बंद करते हुए बांध के ढांचे, टरबाइन, अधिग्रहित जमीन सहित लगभग 6 हजार करोड़ की पूरी संपत्ति को नीलाम करने का निर्णय दिया है. इसके साथ सिंचाई, बिजली और रोजगार के सम्भावनाएं जो इस परियोजना के पूरे होने के साथ जुड़ी थीं, धुल धूसरित हो गयीं. अब इस बाँध की पूरी संपत्ति का आकलन किया जाएगा. फिर उन 17 कंपनियों का कर्ज चुकाया जाएगा, जिन्होंने इस परियोजना में अपना पैसा लगाया था. मंडलेश्वर में नर्मदा नदी पर इस बांध निर्माण का काम एस कुमार्स कंपनी को दिया गया. 400 मेगावाट बिजली यहां बनाई जानी थी. बजट की शुरुआती लागत 400 करोड रुपए के लगभग थी. लेकिन निर्माण कंपनी शुरू से ही विवादों में रही और कई बार इस प्रोजेक्ट का काम रोका गया. धीरे–धीरे परियोजना की लागत बढ़ती गई और करीब सात से आठ हजार करोड़ तक पहुंच गई. इसलिए कंपनियों ने भी पैसा लगाने से मना कर दिया. निर्माण के लिए उत्तरदायी कंपनी एस कुमार ने भी हाथ खड़े कर दिए. आखरी बार 2016 में इस प्रोजेक्ट पर मेंटेनेंस का काम हुआ था. इस प्रोजेक्ट का काम उस समय पूरी तरह रोक दिया, जब यह प्रोजेक्ट बिजली बनाने की क्षमता रखता था. लेकिन इस बांध के शुरू नहीं होने के पीछे सबसे बड़ी वजह डूब प्रभावित गांवों की पुनर्वसावट, उनका विस्थापन नहीं होना रही है. करीब 61 गांव ऐसे हैं, जिन्हें मुआवजा नहीं मिला, पुनर्वास नहीं मिला. इसमें आज भी इन गांवों के लोग दो प्रभावित क्षेत्रों में ही निवास कर रहे हैं. इन गांवों को खाली नहीं कराया जा सका. यह देश के बड़े बांधो में से एक है. इसमें 27 द्वार लगे है.

पंचाट ने स्पष्ट कर दिया कि अब और समय बढ़ाना कर्जदारों के हित में सही नहीं है. और इसी के साथ पंचाट ने इस प्रोजेक्ट के संपत्ति को नीलाम करने का निर्णय सुना दिया. इसमें बांध में लगी टरबाइन, ढांचा, विद्युत घर, उपकरण, अधिग्रहित जमीन सहित तमाम सम्पत्ति शामिल है. उल्लेखनीय है कि परियोजना में पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन, आरईसी लिमिटेड, भारतीय जीवन बीमा निगम, आईडीबीआई बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, हुडको, एडलवाइस एआरसी, एसबीआई, जनरल इंश्योरेंस कॉर्पोरेशन, यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस, नेशनल इंश्योरेंस कंपनी, ओरिएंटल इंश्योरेंस, न्यू इंडिया एश्योरेंस समेत 17 से ज्यादा कंपनियों की भारी–भरकम रकम अटकी हुई है. नीलामी राशि से इन कंपनियों का पैसा लौटाया जाएगा. ■

किरण शॉ मजूमदार - गढ़ी सफलता की परिभाषा

1970 के दशक के उत्तरार्ध में, बीसवें वर्ष की एक ऊर्जावान युवती बहुत दुखी और निराश थी। एक सामान्य भारतीय मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मी इस लड़की का सपना था डॉक्टर बनने का, लेकिन जब वह मेडिकल प्रवेश परीक्षा पास नहीं कर सकी, तो उसने प्राणिविज्ञान में स्नातक करने का निर्णय लिया। बाद में उसने विदेश के मेडिकल कॉलेजों में भी आवेदन किया, पर छात्रवृत्ति न मिलने के कारण उसे फिर से अपने मार्ग बदलने पड़े। तब उसने ऑस्ट्रेलिया की एक यूनिवर्सिटी से ''फर्मेंटेशन साइंस'' में स्नातकोत्तर डिग्री करने का निर्णय लिया। यही कोर्स उसके जीवन का निर्णायक मोड़ सिद्ध हुआ, क्योंकि इसने न केवल उसके सूक्ष्मजीव विज्ञान के प्रति दृष्टिकोण को पूरी तरह बदल दिया, बल्कि उसमें इस क्षेत्र के प्रति इतनी गहरी लगन और उत्सुकता जगा दी कि उसने ऑस्ट्रेलियाई विश्वविद्यालय में गोल्ड मेडल जीतकर शीर्ष स्थान प्राप्त किया। भारत लौटने के बाद उसने विभिन्न कंपनियों में नौकरी के लिए आवेदन करना शुरू किया, पर जो प्रतिक्रियाएँ उसे मिलीं, उन्होंने उसके सारे सपनों को तोड़ दिया। हर कंपनी ने उसकी योग्यता और प्रतिभा को तो स्वीकार किया, लेकिन फिर भी उसे नौकरी देने से इंकार कर दिया। कारण यह था कि उस समय भारत में फर्मेंटेशन से जुड़ी नौकरियाँ मुख्यतः "हार्ड ड्रिंक" कंपनियों तक सीमित थीं, और यह क्षेत्र पुरुष–प्रधान माना जाता था। उसकी योग्यता के अनुरूप जो पद उपयुक्त था, "मास्टर ब्रुअर" (मुख्य मद्यनिर्माता) वह किसी भी ब्रुअरी में सर्वोच्च पदों में गिना जाता था। कंपनियों को लगता था कि अगर यह पद किसी महिला को दिया गया, तो पुरुष कर्मचारियों का "अहं" आहत होगा और पूरी कार्यसंस्कृति प्रभावित हो जाएगी। लगातार मिली इन अस्वीकृतियों ने उस युवती को बेहद असहाय और निराश कर दिया। परंतु गहरे आत्ममंथन के बाद, एक दिन उसने स्वयं से कहा, "अगर ब्रुअरी कंपनियाँ मुझे नौकरी नहीं देना चाहतीं, तो क्या हुआ? मैं अपनी खुद की कंपनी शुरू करूंगी, ताकि न केवल ब्रुअरी उद्योग से प्रतिस्पर्धा कर सकूं, बल्कि अपने सूक्ष्मजीव विज्ञान के ज्ञान का उपयोग कर सस्ती दवाइयाँ भी बना सकूं!" और इसी तरह उसने अपने किराए के घर के गैरेज से एक ब्रुइंग और माइक्रोबियल हेल्थकेयर कंपनी की शुरुआत की, जो आज दुनिया की शीर्ष 5 बायोटेक कंपनियों में से एक है। ■

असफल सरकारी लोक शिक्षण

वर्ष 2014–15 से 2023–24 तक के बीते एक दशक में सरकारी स्कूलों की संख्या में 8% की कमी आई है, लेकिन निजी स्कूलों की संख्या में 14.9% की वृद्धि हुई है। 2014–15 में देश में 11,07,101 में से 2023–24 में 89,441 सरकारी स्कूल घटकर 10,17,660 रह गए हैं और इसी अवधि में निजी स्कूलों की संख्या 2,88,164 से 42,944 बढ़कर 3,31,108 तक हो गई है। एक राष्ट्रीय समाचारपत्र की रिपोर्ट अनुसार, मध्य प्रदेश में 29,410 और उत्तर प्रदेश में 25,126 की कमी आई है जो कुल मिलाकर सरकारी स्कूलों की संख्या में हुई 89,441 की कमी का 60.9% है। जबकि अकेले उत्तर प्रदेश में 19,305 निजी स्कूलों की वृद्धि हुई, जो देश में निजी स्कूलों की संख्या में हुई कुल 42,944 की वृद्धि का 44.9% है।

मध्यप्रदेश, 2014–15 में 1,21,849 में से 2023–24 में 92,439 तक की गिरावट के साथ उन 9 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की सूची में सबसे ऊपर है, जिन्होंने सरकारी स्कूलों में गिरावट के राष्ट्रीय प्रतिशत को पार कर लिया है। मध्य प्रदेश के बाद जम्मू–कश्मीर का स्थान है, जहां सरकारी स्कूलों की संख्या 2014–15 में 23,874 से घटकर 2023–24 में 18,758 रह गई है। इसी अवधि में, ओडिशा के सरकारी स्कूलों की संख्या 58,697 से घटकर 48,671 रह गई है। अरुणाचल प्रदेश के स्कूलों की संख्या 3,408 से घटकर 2,847, उत्तर प्रदेश के सरकारी स्कूलों की संख्या 1,62,228 से घटकर 1,37,102 पर, झारखंड में 41,322 से घटकर 35,795 रह गई है। नागालैंड में 2,279 से 1,952 पर की गिरावट देखी गई, गोवा में स्कूलों की संख्या घटकर 906 में से 789 रह गई है जबकि उत्तराखंड में सरकारी स्कूलों की संख्या घटकर 17,753 में से 16,201 रह गई। इस बीच अच्छी खबर बिहार से है जहां सरकारी स्कूलों की संख्या 2014–15 में 74,291 से बढ़कर 2023–24 में 78,120 हो गई है। केन्द्रीय मंत्री के अनुसार, शिक्षा संविधान की समवर्ती सूची में है और ''स्कूलों को खोलना, बंद करना और युक्तिसंगत बनाना संबंधित राज्य सरकार और केंद्र शासित प्रदेश के प्रशासनिक अधिकार क्षेत्र में है।'' उन्होंने कहा, ''बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम– 2009 बच्चों को निर्धारित क्षेत्र या पड़ोस की सीमाओं के भीतर प्राथमिक विद्यालयों तक पहुंच प्रदान करता है। आरटीई अधिनियम की धारा 6 के अनुसरण में, सभी राज्यों ने अपने पड़ोस के मानदंडों के क्षेत्र या सीमाओं को अधिसूचित किया है।'' शिक्षा का अधिकार अधिनियम की धारा 6 के अनुसार सरकार और स्थानीय प्राधिकारियों को बच्चों के घरों से एक निश्चित दूरी के भीतर स्कूल स्थापित करना आवश्यक है। इससे पहले नवंबर 2023 में नीति आयोग ने एक रिपोर्ट में स्कूलों के विलय, शिक्षकों की संख्या में वृद्धि और शिक्षक शिक्षा में सुधार को सीखने के परिणामों को बढ़ाने के लिए आवश्यक उपायों के तौर पर रेखांकित किया था।

देश में निजी स्कूलों में 10 राज्यों ने निजी स्कूलों की संख्या में राष्ट्रीय वृद्धि के 14.9% प्रतिशत को पार कर लिया है, जिसमें बिहार सबसे आगे है, जहां 2014–15 में निजी स्कूलों की संख्या 3,284 से बढ़कर 2023–24 में 9,167 हो गई है, जो 179.14% है। इसी अवधि में, ओडिशा के निजी स्कूलों की संख्या 3,350 से बढ़कर 6,042 हो गई। उत्तर प्रदेश में निजी स्कूलों की संख्या 77,330 से बढ़कर 96,635 हो गई है। ■

ऑटो चालक से करोड़पति - सत्य शंकर बिंदु

सपनों को देखने के लिए नींद की जरूरत होती है। लेकिन उन सपनों को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत, धैर्य और जुनून की भी जरूरत होती है। बेंगलुरु के सत्य शंकर की प्रेरक कहानी भी कुछ ऐसी ही है। बिंदु जीरा मसाला सोडा के संस्थापक सत्य शंकर बिंदु कभी ऑटो चालक के रूप में काम करते थे। 1987 में एंबेसडर चलाते समय उन्हें एहसास हुआ कि अकेले गाड़ी चलाने से उनके सपने पूरे नहीं होंगे। उन्होंने ऑटो पार्ट्स का व्यवसाय शुरू किया। फिर 1989 में एक टायर की दुकान खोली। इस दौरान, उन्होंने वित्त प्रबंधन के बारे में सीखा। इस अनुभव के आधार पर, 1994 में उन्होंने प्रवीण कैपिटल प्राइवेट लिमिटेड की शुरुआत की जो पुराने वाहनों के लिए ऋण प्रदान करती है। वर्ष 2002 में, उन्हें बिंदु जीरा मसाला सोडा का विचार आया, जो जीरे से बना एक अनूठा पेय था। उनकी कंपनी एसजी कॉरपोरेट्स को इस उत्पाद से अपार सफलता मिली और ऑटोरिक्शा चालक सत्य शंकर जल्द ही पेय क्षेत्र में एक दिग्गज बन गए। आज सत्य शंकर द्वारा स्थापित एसजी ग्रुप कर्नाटक के पुत्तुर में स्थित है। खाद्य एवं पेय पदार्थ, ऑटोमोबाइल स्पेयर्स, ऑटो फाइनेंस, ऑर्गेनिक फार्मिंग और फ्रूट प्रोसेसिंग में मजबूत उपस्थिति के साथ यह कंपनी एक बहु–क्षेत्रीय व्यवसाय के रूप में विकसित हो चुकी है। एसजी ग्रुप का वार्षिक टर्नओवर अब लगभग 800 करोड़ रुपए है। सत्य ने 2004 में सिपऑन नाम से फ्रूट जूस ब्रांड लॉन्च किया। इसमें आम, सेब और गुलाबी अमरूद जैसे फ्लेवर थे। 2009 में उन्होंने स्नैक्स ब्रांड लॉन्च किया। आज वह वह रोल्स–रॉयस के मालिक हैं। जिसकी कीमत 11 करोड़ रुपए से अधिक है। इसे और भी खास बनाने वाली बात यह है कि इसे 'सत्य शंकर के लिए खास तौर पर बनाया गया' लिखा हुआ है। सत्य शंकर की सफलता की यात्रा यह साबित करती है कि अगर कोई व्यक्ति उसके लिए काम करने को तैयार हो तो कोई भी सपना बड़ा नहीं होता। ■

असफल नियामक और नकली दवाएं

दवा गुणवत्ता नियंत्रण में नियामक की असफलता के अनेक उदाहरण हैं।

– पहली खबर एंटीबायोटिक सहित नकली दवाओं की आपूर्ति के आरोप में कुछ लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किए जाने से जुड़ी थी। इन लोगों पर आरोप हैं कि वे महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश और झारखंड में सरकारी अस्पतालों को घटिया एवं नकली दवाओं की आपूर्ति कर रहे थे। जो गोलियां और टैबलेट अस्पतालों को भेजी गई थीं, उनमें ज्यादातर टैल्कम पाउडर और स्टार्च से तैयार की गई थीं। उनमें कोई औषधीय रसायन था ही नहीं।

– इसके बाद केंद्रीय औषध मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) द्वारा हाल में किए गए एक सर्वेक्षण में पाया गया कि बाजार में उपलब्ध दवाएं (कुछ प्रमुख एंटीबायोटिक, एंटैसिड, एंटीपायरेटिक्स और रक्तचाप की दवाएं) गुणवत्ता के मामले में कमजोर थीं। इन दवाओं का लोग अक्सर इस्तेमाल करते हैं। इनमें कुछ दवाओं का उत्पादन एवं बिक्री हिंदुस्तान एंटीबायोटिक्स, एल्केम, टॉरेंट और दूसरी नामी कंपनियां करती हैं।

– विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भारत में निर्मित खांसी की दवा के विरुद्ध चेतावनी जारी की जिस दवा को उज्बेकिस्तान में 20 बच्चों की मृत्यु के लिए उत्तरदायी माना गया. मध्य प्रदेश और राजस्थान में नकली खांसी की दवा से 22 बच्चों की मृत्यु हुई. जाम्बिया में बच्चों की मौत पर विश्व स्वस्थ संगठन ने चेतावनी जारी की कि इन मौतों के लिए भारत में बनी खांसी की दवा थी. वर्ष 2022 में नेपाल ने भारत की 16 कंपनियों की दवाओं के अमानक होने के कारण आयात पर रोक लगा दी. विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भारत में बनी कोल्ड्रिफ, रिफ्रेश और रिलीफ नामक खांसी की दवाओं के बारे में सदस्य देशों को चेतावनी जारी की.

जिन ब्रांडों के नमूने गुणवत्ता पर असफल रहे उनमें से कुछ तो अपनी–अपनी श्रेणियों में बाजार के अग्रणी हैं। भारत में दवा निरीक्षक हर महीने बाजार में उपलब्ध दवाओं की जांच करते रहते हैं। सीडीएससीओ ने लगातार पाया है कि इनमें से कुछ दवाओं के नमूने गुणवत्ता मानकों की शर्तें पूरी नहीं कर पा रहे हैं। तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री जे पी नड्डा द्वारा लोक सभा को दी गयी जानकारी के अनुसार वर्ष 2022–23 में 96,713 दवा सैंपल जांचे गए जिनमे 3053 अमानक और 424 नकली पाए गए. 663 व्यक्तियों पर मुकदमे चलाये गए. वर्ष 2023–24 में 1,06,150 नमूने जांचे गए जिसमे 2988 अमानक और 282 नकली पाए गए. घटिया और नकली दवाएं कई कारणों से देश की आर्थिक उत्पादकता एवं वृद्धि पर नकारात्मक प्रभाव डालती हैं। इन प्रभावों की पड़ताल के लिए एशिया, लैटिन अमेरिका और अफ्रीका के देशों में कई अध्ययन किए गए हैं। हैरत की बात है कि इस विषय पर भारत में ऐसा एक भी अध्ययन नहीं हुआ है।

तब भी यह समझने में विशेष कठिनाई नहीं होनी चाहिए कि देश की अर्थव्यवस्था पर घटिया एवं नकली दवाओं का बड़ा असर क्यों होता है। ये दवाएं बीमारियां ठीक करने में कारगर नहीं होतीं और अक्सर लोगों को अधिक समय तक बीमार रखती हैं। कभी–कभी ये जानलेवा भी साबित होती हैं। इससे इलाज का खर्च बढ़ जाता है और कामकाज का नुकसान भी होता है। इससे नौकरी जा सकती है और इलाज के लिए कर्ज भी लेना पड़ जाता है। ऐसी दवाओं की वजह से भारी संख्या में लोग गरीबी के जंजाल में फंस जाते हैं। घटिया और नकली दवाएं किसी भी उम्र के लोगों की जान ले सकती हैं मगर नवजात शिशुओं और बुजुर्गों के लिए ये ज्यादा खतरनाक होती हैं। इनसे लोगों की सेहत को दीर्घकालिक खतरे भी बढ़ जाते हैं जैसे बीमारियों से लड़ने की क्षमता कमजोर होना या दवाओं का रोगाणुओं पर बेअसर होना।

निम्न एवं उच्च आय वाले सभी देशों को इस समस्या का सामना करना पड़ सकता है मगर भारत के लिए यह समस्या दो कारणों से ज्यादा ही बड़ी है। पहला कारण भारत की जनसँख्या है। संयुक्त राष्ट्र के अनुमानों के अनुसार भारत अब दुनिया में सबसे अधिक आबादी वाला देश बन गया है, इसलिए यहां समस्याएं भी कई गुना बड़ी हो गई हैं। घटिया और नकली दवाएं स्वास्थ्य के लिए खतरा पैदा कर रही हैं। लोगों की काम करने की क्षमता प्रभावित होने से देश के सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर कम हो सकती है। पिछले कई दशकों से भारत ने 'दुनिया का दवाखाना' कहलाने के लिए अथक प्रयास किए हैं। जेनेरिक दवा और किफायती टीके बनाने का अपना हुनर वह दुनिया को दिखा ही चुका है। मगर नकली एवं घटिया दवाओं की बाढ़ आने से दूसरे देश भारत से दवाओं का आयात करने में हिचकेंगे और इसका फायदा प्रतिस्पर्धी देशों को मिल जाएगा। इस समस्या से निपटने के लिए काफी कम प्रयास किए गए हैं। जब भी दवा विनिर्माता घटिया दवाएं बनाते या भेजते पकड़े जाते हैं, उन्हें सजा मुश्किल से ही मिलती है। सजा होती भी है तो कुछ हजार रुपये के जुर्माने तक सिमटकर रह जाती है, जिसे चुकाने में उन्हें कोई तकलीफ नहीं होती। घटिया दवाओं के पूरे बैच ही बाजार से वापस मंगाने जैसे कड़े कदम नियामकीय प्राधिकरण कभी नहीं उठाते। ■

असफल - जन स्वास्थ्य सेवाएं

देश के ग्रामीण क्षेत्र में चिकित्सा कर्मियों तथा बुनियादी ढांचे की बेहद कमी है। प्रति 1800 पर एक का अनुपात है, 78% डॉक्टर शहरी क्षेत्र में सेवाएं दे रहे हैं। दरसल स्वास्थ्य सेवाओं की आपूर्ति की भारी कमी है। यहां तक कि तमिलनाडु जैसे तुलनात्मक रूप से विकसित राज्य में पेशेवरों की 30% से अधिक कमी है। देश में 61% पीएचसी में केवल एक डॉक्टर है, 7% पीएचसी बिना डॉक्टर के हैं, 33% पीएचसी में लैब तकनीशियन और 20% में फार्मासिस्ट नहीं हैं। इसका कारण स्पष्ट है. सरकार के पास मेडिकल कॉलेज खोलने के संसाधन नहीं हैं. निजी मेडिकल कॉलेज खोलने के साथ एक निश्चित संख्या का अस्पताल होना आवश्यक शर्त है. निजी मेडिकल कॉलेज में पढाई का खर्च उठाने की क्षमता औसत भारतीय की नहीं है. भारत गाँव में बसता है, जहाँ शहर जैसी सुविधाएँ न होने के कारण डॉक्टर सेवाएं नहीं देना चाहते. इसका एक सीधा मार्ग या होता कि अनिवार्य ग्रामीण सेवा देने के बाद ही चिकित्सक का पंजीकरण हो सकेगा. इसमें से रास्ता खोजा गया कि डॉक्टर बनने के बाद यदि ग्रामीण सेवा नहीं करनी तो एक निश्चित राशि सरकार के पास दंडस्वरूप जमा करनी होगी. विसंगति यह है कि एक ओर महाराष्ट्र सरकार ने 4,500 डॉक्टर्स के पंजीयन इस आधार पर निरस्त किये कि उन्होंने अनिवार्य ग्रामीण क्षेत्र में सेवाएं नहीं दीं तो कर्णाटक सरकार इस आशय का बिल ला रही है कि डॉक्टर्स के लिए ग्रामीण सेवा अनिवार्य नहीं है. उड़ीसा जैसे राज्य में 3,000 यानी आधे डाक्टर के पद खाली हैं। दरअसल स्वास्थ्य सेवाओं की इस बदहाल स्थिति का एक प्रमुख कारण यह है कि स्वास्थ्य बजट में कोई वास्तविक वृद्धि नहीं हो रही है, न सार्वजनिक क्षेत्र को मजबूत करने की कोई ठोस योजना है। दक्षिण के राज्यों में स्थिति बेहतर है क्योंकि वहां स्वास्थ्य का बुनियादी ढांचा बेहतर है। कोविड ने भारत की बदहाल स्वास्थ्य सेवाओं की असलियत को बेनकाब कर दिया था और यह साबित कर दिया था कि भारत का स्वास्थ्य ढांचा ऐसी किसी आपदा को झेलने में असमर्थ है।

स्वास्थ्य सेवाओं का हाल यह है कि 70% लोग निजी क्षेत्र पर निर्भर हैं। अगर किसी कारणवश निजी स्वास्थ्य सेवाएं चरमरा जाय तो देश में स्वास्थ्य का पूरा ढांचा ध्वस्त हो जाएगा। स्थिति यह है कि ग्रामीण क्षेत्रों के अतिरिक्त श्रेणी 2 और 3 के शहरों में भी पर्याप्त स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध नहीं हैं और टीयर 1 के शहरों में सुपर स्पेशलाइजेशन का रुझान है। निजी क्षेत्र में पारदर्शिता का घोर अभाव है. सरकारी सुविधाओं का हाल यह है कि मरीज स्वास्थ्य संबंधी खर्च का 61% स्वयं वहन करते हैं। जिसके फलस्वरूप 6.3 करोड़ लोग हर साल गरीबी रेखा के नीचे खिसक जाते हैं। दरअसल भारत में स्वास्थ्य के क्षेत्र में इस पिछड़ेपन की जड़ें देश के औपनिवेशिक अतीत में मौजूद हैं। औपनिवेशिक काल में जिस तरह स्वास्थ्य और शिक्षा सबसे उपेक्षित थे और शासन मूलतः औपनिवेशिक शोषण और अभिजात्य वर्ग की सेवा के लिए था। स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति कमोबेश वही नीति आज भी कायम है।

अपर्याप्त संसाधनों के चलते प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र मरीजों से वसूली कर रहा है, जो गरीबों के लिए यह बोझ असहनीय होता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार आदर्श स्थिति में डॉक्टर और मरीज का अनुपात एक हजार मरीज पर एक डॉक्टर होना चाहिए। लेकिन भारत में यह अनुपात लगभग डेढ़ गुना, 1445 मरीज पर एक डॉक्टर है। ग्रामीण क्षेत्रों में हाल और बुरा है जहां अधिकांश प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में केवल एक डॉक्टर है। शिशु चिकित्सक अथवा महिला चिकित्सक और भी कम हैं।

खेदजनक है कि भारत से टीबी मलेरिया जैसी बीमारियों तक का अभी उन्मूलन नहीं हो सका है। मध्य प्रदेश में 18ः आबादी समीपस्थ प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र से 5 किमी से अधिक की दूरी पर है। स्पष्ट है यह दूरी गर्भवती महिलाओं के लिए और गम्भीर मरीजों के लिए यह दूरी बहुत भारी पड़ती होगी। ग्रामीण भारत में 3100 पर एक बिस्तर उपलब्ध है। बिहार में 18,000 लोगों पर एक बिस्तर उपलब्ध है। उ.प्र. में 39,000 लोगों पर एक बिस्तर उपलब्ध है। गांवों में औसतन 26 हजार आबादी पर एक डॉक्टर उपलब्ध है जबकि विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानक के अनुसार प्रति एक हजार आबादी पर एक डॉक्टर होना चाहिए। वास्तव में भारत में स्वास्थ्य पर जीडीपी का मात्र 2% के आसपास खर्च किया जाता है जबकि हमारी जैसी अन्य अर्थव्यवस्थाओं में जीडीपी का 3 से 5% तक खर्च किया जाता है। चिकित्सकों की लगातार बनी रहने वाली कमी और जो असमान वितरण है, वह एक बड़ी समस्या है। ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सकों की भीषण कमी है। डाक्टरों के भर्ती की प्रक्रिया बेहद धीमी और छिटपुट तरीके से है। नतीजतन ग्रामीण इलाकों में अधिकांश लोग झोला छाप डॉक्टरों पर निर्भर हैं। उच्चतम न्यायालय की पीठ, जिसमें जस्टिस गवई और जस्टिस नागरत्ना थीं, ने भी शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के बीच भेदभाव पर गम्भीर चिंता व्यक्त की है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि स्वास्थ्य सेवाओं पर सार्वजनिक खर्च बढ़ाया जाय। इसे कम से कम जीडीपी का 5% किया जाय। ग्रामीण क्षेत्र में बुनियादी ढांचे को मजबूत किया जाय और डाक्टरों को ग्रामीण क्षेत्र में सेवा के लिए पर्याप्त प्रोत्साहन दिया जाय। निजी स्वास्थ्य सेवाओं को और पारदर्शी बनाया जाए और चिकित्सा के नाम पर होने वाली लूट पर अंकुश लगाया जाए. ■

भारतीय नौसेना की असफल सुरक्षा

पिछले एक दशक में भारतीय नौसेना के अनेक पोत विभिन्न कारणों से दुर्घटनाग्रस्त हुए हैं.

– जनवरी वर्ष 2022 को भारतीय नौसेना के विध्वंसक आईएनएस रणवीर पर मुंबई में डॉक किए जाने के दौरान विस्फोट हुआ, जिसमें तीन नाविकों की मौत हो गई और 11 घायल हो गए, यह विस्फोट जहाज के एयरकंडीशनिंग डिब्बे में हुआ और संभवतः फ्रीऑन गैस रिसाव से जुड़ा था.

– अक्टूबर 2021 में भारतीय नौसेना के विध्वंसक आईएनएस रणविजय पर आग लगने की घटना हुई, चार नाविक घायल हुए. दुर्घटना के समय पोत विशाखापत्तनम नौसेना बंदरगाह में खड़ा था.

– अप्रैल 2019 में कर्नाटक के कारवार में बंदरगाह में प्रवेश करते समय आईएनएस विक्रमादित्य पर लगी आग से निपटने की कोशिश करते समय एक भारतीय नौसेना अधिकारी की मौत हो गई थी.

– जुलाई 2019 की एक घटना में आईएनएस प्रलय, एक वीर श्रेणी के कोरवेट में आग लग गई थी, लेकिन कोई हताहत नहीं हुआ था.

– जून 2016 में मुंबई में आईएनएस बेतवा के पलट जाने और उसके किनारे पर गिरने से दो नाविकों की मौत हो गई और 14 अन्य घायल हो गए थे.

– जून 2016 में कर्नाटक के कारवार में मरम्मत के दौर से गुजर रहे आईएनएस विक्रमादित्य पर सीवेज प्लांट से जहरीले धुएं के रिसाव के कारण एक नागरिक सहित दो लोगों की मौत हो गई थी और दो अन्य घायल हो गए.

– अप्रैल 2016 में आईएनएस निरीक्षक पर ऑक्सीजन सिलेंडर विस्फोट में एक नाविक की टांग कट गई थी, जबकि दो अन्य घायल हो गए थे.

– जून 2016 में गोवा में आईएनएस विराट पर आग लगने से एक नाविक की मौत हो गई थी और तीन अन्य घायल हो गए थे.

– मार्च 2014 में मुंबई के मझगांव डॉक लिमिटेड में स्थित उन्नत युद्धपोत में एक कंटेनर से लीक हुई कार्बन डाइऑक्साइड गैस की वजह से एक अधिकारी की मौत हो गई और एक कर्मचारी घायल हो गया था.

– फरवरी 2014 में डीजल से चलने वाली पनडुब्बी आईएनएस सिंधुरत्न में आग लगने के बाद उसमें धुआं घुसने से दो नाविकों की मौत हो गई थी और 94 सदस्यीय चालक दल के सात सदस्यों को बाहर निकाला गया था. जांच बोर्ड ने अपनी प्रारंभिक रिपोर्ट में कहा था कि कुछ केबलों में आग लगने के कारण तीसरे डिब्बे में धुआं फैल जाने की वजह से यह हादसा हुआ.

– फरवरी 2014 में टैंक–लैंडिंग जहाजों के शार्दुल वर्ग का नवीनतम जहाज आईएनएस ऐरावत विशाखापत्तनम के तट पर फंस गया था. युद्धपोत के प्रोपेलर स्थायी रूप से क्षतिग्रस्त हो गए और जहाज को फिर से चालू करने के लिए उन्हें बदलना पड़ा था.

– जनवरी 2014 में स्वदेश निर्मित फ्रिगेट मुंबई बंदरगाह के निकट आते समय फंस गया और एक अज्ञात वस्तु से टकरा गया था. फ्रिगेट की सोनार प्रणाली में दरार पाई गई थी, जिसके कारण रीडिंग में त्रुटि हुई थी और संवेदनशील उपकरणों में खारे पानी का प्रवेश हुआ था.

– जनवरी 2014 में 22वें किलर मिसाइल वेसल स्क्वाड्रन के साथ तैनात, आईएनएस विपुल के एक डिब्बे में छेद का पता चला था. जिसके कारण इसे परिचालन मिशन पर वापस बंदरगाह में लौटना पड़ा, इसे मरम्मत के लिए भेजा जाना था.

– जनवरी 2014 में डीजल–इलेक्ट्रिक पनडुब्बियों की अपनी श्रेणी का अग्रणी जहाज, सिंधुघोष मुंबई में नौसेना बंदरगाह पर फंस गया था. पनडुब्बी को फिर से तैराया गया और उसे ज्यादा नुकसान नहीं हुआ. घटना के समय, यह पूरी तरह से सशस्त्र था, जिसमें 70 कर्मियों की पूरी टुकड़ी थी.

– दिसंबर 2013 में रत्नागिरी जिले के पास एक मछली पकड़ने वाला ट्रॉलर फ्रंटलाइन फ्रिगेट से टकराने के बाद डूब गया था, जिससे ट्रॉलर पर सवार 27 लोगों में से चार घायल हो गए थे. ट्रॉलर बिना लाइट के चल रहा था. जहाज पर कोई हताहत नहीं हुआ था.

– दिसंबर 2013 में एक स्टील्थ फ्रिगेट जिसने कई विदेशी मिशनों को अंजाम दिया, आईएनएस तरकश को मुंबई में डॉकिंग के दौरान जेटी से टकराने पर इसके पतवार को नुकसान पहुंचा था. इसमें कोई हताहत नहीं हुआ था.

– दिसंबर 2013 में पूर्वी नौसेना कमान का एक माइनस्वीपर, विशाखापत्तनम में नौसेना डॉकयार्ड में मरम्मत के दौरान इस जहाज में आग लग गई थी. आग ने जहाज के अंदरूनी हिस्से को अपनी चपेट में ले लिया था, लेकिन उसे बुझाया नहीं जा सका था. कोई हताहत नहीं हुआ.

– अगस्त 2013 में आईएनएस सिंधुरक्षक के टॉरपीडो डिब्बे में विस्फोट होने से उसमें सवार अठारह चालक दल के सदस्य सहित तीन अधिकारी और 15 नाविक –शहीद हो गए थे. ■

आप विफलता पर निर्माण करते हैं। आप इसे एक कदम पत्थर के रूप में उपयोग करते हैं। अतीत पर दरवाजा बंद करो। आप गलतियों को भूलने की कोशिश नहीं करते हैं, लेकिन आप उस पर ध्यान नहीं देते हैं। आप इसे अपनी कोई ऊर्जा, या अपना कोई समय, या अपना कोई स्थान नहीं होने देते। ■

– जॉनी कैश

हिंदी सिनेमा-गीतों में छिपा दर्शन

हार जीत और जीवन की सार्थकता के रहस्य ने मानव को आदिकाल से स्तब्धता में रखा है. स्वाभाविक था कि रचनात्मकता में यह बात प्रकट होती है, कम से कम हिंदी सिनेमा के गीतों में.

– संसार में लोग कहाँ से आते हैं और मरने के बाद कहाँ चले जाते हैं? यह सवाल धर्मग्रंथों का मूल विषय रहा है और दार्शनिकों ने भी इस गूढ़ विषय पर बहुत सोच–विचार किया है. फिल्म जगत के बहुचर्चित गीतकार गीतकार साहिर लुधियानवी इस विचार को शब्द देते हैं. संसार की हर शय का इतना ही फसाना है, एक धुँध से आना है, एक धुँध में जाना है, ये राह कहाँ से है, ये राह कहाँ तक है, ये राज कोई राही समझा है न जाना है.

जीवन जितना बड़ा सत्य है मृत्यु भी उतना ही बड़ा सत्य है. मृत्यु के बाद जीवन है कि नहीं ? और मृत्यु के बाद लोग कहाँ चले जाते हैं ? ये प्रश्न जबसे दुनिया बनी है, तबसे एक अनुत्तरित प्रश्न की तरह इस संसार में मौजूद है. गीतकार आनंद बक्षी के शब्द हैं ''दुनियाँ से जानेवाले, जाने चले जाते हैं कहाँ, कैसे ढूँढे कोई उन को, नहीं कदमों के भी निशान, जाने हैं वो कौन नगरीया, आये जाये खत ना खबरियां, आये जब जब उन की यादें, आये होठों पे फरियादें, जा के फिर ना आनेवाले, जाने चले जाते हैं कहाँ. संसार से कुछ ले जाने का नियम होता तो अब तक ये दुनिया खाली हो गई होती. आदमी तो वो मुसाफिर है जो खाली हाथ संसार से जाता है और संसार से जाने के बाद सिर्फ अपनी अच्छी–बुरी यादें छोड़ जाता है. यही दार्शनिक भाव लिए हुए गीतकार आनंद बक्षी का लिखा हुआ फिल्म "अपनापन" का ये गीत है, ''आदमी मुसाफिर हैं, आता हैं, जाता हैं, आते जाते रस्ते में, यादें छोड जाता हैं, क्या साथ लाये, क्या तोड़ आये, रस्ते में हम क्या क्या छोड आये, मंजिल पे जा के याद आता हैं''. दूसरी तरफ गीतकार संतोष आनंद का लिखा हुआ फिल्म "शोर" में लिखते हैं ''एक प्यार का नगमा हैं, मौजों की रवानी हैं, जिन्दगी और कुछ भी नहीं, तेरी मेरी कहानी हैं, कुछ पाकर खोना है, कुछ खोकर पाना हैं, जीवन का मतलब तो, आना और जाना हैं, दो पल के जीवन से, एक उम्र चुरानी हैं''. जीवन की नश्वरता को समझते हुए गीतकार हसरत जयपुरी ने फिल्म "अंदाज" में यही सत्य भाव दर्शाते हुए ये बहुत लोकप्रिय गीत लिखा है ''जिंदगी एक सफर हैं सुहाना, यहां कल क्या हो किस ने जाना, मौत आनी हैं, आयेगी एक दिन, जान जानी हैं, जायेगी एक दिन ,ऐसी बातों से क्या घबराना'' जीवन के सफर में कब क्या अच्छा–बुरा घटित होने वाला है, इसे लेकर सारी दुनिया परेशान है. इस सवाल का जबाब पाने को आम जनता, ज्योतिषी और दार्शनिक सब अपने–अपने अंदाज में सोचते विचारतें हैं और अँधेरे में तीर चलातें हैं. सच बात तो ये है की ईश्वर के अलावा कोई नहीं जानता की क्या होने वाला है. गीतकार इन्दीवर इसका उत्तर देते हैं ''जिंदगी का सफर, हैं ये कैसा सफर, कोई समझा नहीं, कोई जाना नहीं, है ये कैसी डगर, चलते हैं सब मगर, कोई समझा नहीं, कोई जाना नहीं. जिन्दगी को बहुत प्यार हम ने किया, मौत से भी मोहब्बत निभायेंगे हम, रोते रोते जमाने में आये मगर, हंसते हंसते जमाने से जायेंगे हम, जायेंगे पर किधर, हैं किसे ये खबर, कोई समझा नहीं, कोई जाना नहीं''. जीवन सबके लिए एक पहेली है. वो खुशनसीब लोग हैं जो अपने जीवन की पहेली को सुलझा पातें हैं. ज्यादातर लोग इस पहेली में बुरी तरह से उलझकर संसार से विदा हो जाते हैं. यही दार्शनिक अंदाज लिए हुए गीतकार योगेश का ये गीत फिल्म आनंद का है ''जिंदगी, कैसी हैं पहेली हाये, कभी तो हंसाये, कभी ये रुलाये, जिन्हों ने सजाये यहां मेले, सुख दुख संग संग झेले, वही चुनकर खामोशी, यूँ चले जाये अकेले कहाँ''. जीवन की निरंतरता पर यह गीत बड़ा प्रासंगिक है ''जिन्दगी के सफर में गुजर जाते हैं जो मकाम, वो फिर नहीं आते, वो फिर नहीं आते. सुबह आती हैं, रात जाती हैं, यूँही, वक्त चलता ही रहता हैं, रुकता नहीं, एक पल में ये आगे निकल जाता हैं. आदमी ठीक से देख पाता नहीं, और परदे पे मंजर बदल जाता हैं, एक बार चले जाते हैं, जो दिन रात सुबह शाम, वो फिर नहीं आते. ■

असफलताओं के बाद सफल लिंकन

संभवतः असफलताओं से कभी निराश न होने तथा दृढ़ता न खोने वालों में सबसे बड़ा नाम अब्राहम लिंकन का है। गरीबी में जन्मे लिंकन ने जिंदगी भर कई मुसकिलों और असफलताओं का सामना किया। वे कई बार हार मान सकते थे, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया, उन्होंने ऐसा नहीं किया इसलिए वे अमेरिका के इतिहास में सबसे महान राष्ट्रपति बन पाए। राजनीती के शीर्ष और इतिहास में अपना स्थान दर्ज करने के पूर्व उनकी असफलताओं का एक लम्बा इतिहास रहा है. वर्ष 1832 में वे नौकरी खो चुके थे, इसी वर्ष वे विधान सभा का चुनाव हार गए, वर्ष 1833 में उन्हें व्यवसाय में लम्बा घाटा हुआ, वर्ष 1835 उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई वर्ष 1836 उनका नर्व्स ब्रेकडाउन हो गया और वर्ष 1838 में वे स्पीकर का चुनाव हार गए, वर्ष 1843 कॉग्रेस के नामनेशन रेस में हार गए, वर्ष 1849 भू–अधिकारी के लिए खारिज कर दिए गए और वर्ष 1854 सीनेट का चुनाव हार गए और वर्ष 1856 उप–राष्ट्रपति की रेस में पीछे रह गए तो वर्ष 1858 दोबारा उप–राष्ट्रपति का चुनाव हार गए. अंततः वे वर्ष 1860 अमेरिका के राष्ट्रपति बने ■

भारतीय सिनेमा का सबसे असफल निर्देशक

भारतीय सिनेमा के इतिहास में सबसे असफल निर्देशक वह व्यक्ति है, जिसकी 26 फिल्में फ्लॉप रहीं, लेकिन फिर भी उसे सम्मान से देखा जाता है. फिल्म निर्माण एक अस्थिर और अनिश्चित विधा है. इस क्षेत्र में सफलता की कोई गारंटी नहीं है। फिर भी, सबसे बड़े अभिनेता और निर्देशक किसी तरह दर्शकों की नब्ज पकड़ लेते हैं। इसके विपरीत वे लोग हैं जो उस नब्ज को पकड़ने में विफल हो जाते हैं। इस स्पेक्ट्रम के बीच में एक फिल्म निर्माता है, जो लगातार फ्लॉप फिल्में देता रहा और फिर भी लीजेंड कहलाया। बॉलीवुड के इतिहास में सबसे ज़्यादा फ्लॉप फिल्में बनाने वाले व्यक्ति रामगोपाल वर्मा हैं। निर्देशक ने 80 के दशक के अंत में अपने करियर में कुल 31 फिल्में बनाई हैं। हालाँकि, आश्चर्यजनक रूप से, इन 31 में से 26 फिल्में बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप रहीं। वास्तव में, वह फिल्मों में अपने 30 साल के करियर में केवल एक ब्लॉकबस्टर देने में सफल रहे हैं। उनकी आखिरी क्लीन हिट 25 साल पहले 1998 में रिलीज हुई सत्या थी। लेकिन अपनी पीढ़ी के सबसे प्रभावशाली फिल्म निर्माताओं में से एक माने जाते हैं। उनके निर्देशन में शूल, सत्या, कंपनी, कौन, रक्त चरित्र और सरकार शामिल हैं। इनमें से ज्यादातर फिल्में बॉक्स ऑफिस पर धमाका कर गईं या औसत कमाई करने वाली रहीं। लेकिन उन्हें भारतीय सिनेमा के इतिहास में मील का पत्थर फिल्म माना जाता है। वर्मा की सफलताओं में ब्लॉकबस्टर रंगीला, सत्या, भूत, कंपनी और सरकार शामिल हैं। रामगोपाल वर्मा इस समय अपने करियर के सबसे बुरे दौर से गुजर रहे हैं। उनकी पिछली तीन फिल्मों को बॉक्स ऑफिस पर डिजास्टर करार दिया गया है, जिन्होंने 1 करोड़ रुपये से भी कम की कमाई की है। ■

एक बड़े बजट की असफल फिल्म

अस्सी के दशक में अनेक फिल्में बनाई गयीं. कुछ बॉक्स ऑफिस पर अत्यंत सफल रहीं तो कुछ फिल्में दर्शकों को पसंद नहीं आईं. एक ऐसी ही फिल्म थी जिसके फ्लॉप होने के साथ न सिर्फ दिग्गज निर्देशक कमाल अमरोही का करियर खत्म कर दिया, बल्कि पूरी इंडस्ट्री को कर्ज में डुबा दिया। इस फिल्म का नाम था 'रजिया सुल्तान', जिसकी हीरोइन हेमा मालिनी और हीरो थे धर्मेंद्र। दोनों की जोड़ी तब हिट की गारंटी मानी जाती थी, लेकिन फिल्म चली नहीं. हिंदी सिनेमा की सबसे बड़ी फ्लॉप फिल्मों में एक बनी इस फिल्म के निर्देशक कमाल अमरोही थे, जिन्होंने इससे पहले 'पाकीजा' और 'महल' जैसी शानदार फिल्मों का निर्देशन किया था, लेकिन उनकी फिल्म 'रजिया सुल्तान' ने पूरे हिंदी सिनेमा को तबाही की कगार पर पहुंचा दिया था। 'मुगल–ए–आजम' और 'बाहुबली' जैसी कई ऐतिहासिक फिल्मों ने भारतीय सिनेमा पर अपनी गहरी छाप छोड़ी है, लेकिन 'रजिया सुल्तान' को बॉलीवुड के इतिहास की महाफ्लॉप फिल्म कहा जाता है। निर्देशक ने 'पाकीजा' की रिलीज के बाद दिल्ली सल्तनत की पहली महिला शासक रजिया सुल्तान पर फिल्म बनाना शुरू किया था, लेकिन भारत की एकमात्र महिला मुस्लिम शासक की इस फिल्म का दर्शकों ने साफ नकार दिया था। फिल्म पर काम 1975 में शुरू हुआ था। कई बदलावों के बाद यह 1983 में रिलीज हुई। कमाल अमरोही स्पेशल इफेक्ट्स के लिए हॉलीवुड भी गए थे। उन्होंने इसे बनाने में 10 करोड़ रुपये खर्च किए थे, जिसकी वजह से यह उस वक्त भारत की सबसे महंगी फिल्म बन गई थी। कमाल अमरोही ने फिल्म पर जहां अपने सारे पैसे लगा दिए, वहीं उन्होंने इसे बनाने के लिए कर्ज भी लिया। वितरकों से लेकर निवेशकों तक का पैसा दांव पर लगा था। स्थिति यह थी कि कमाल ने क्रू मेंबर्स से भी पैसे उधार लिए थे। उन्हें विश्वास दिलाया कि वह मुनाफा होने के बाद उन्हें पैसे वापस करेंगे। हालांकि, फिर उन्हें अपनी जेब से पैसे भरने पड़े थे। इस फिल्म ने बस 2 करोड़ रुपये कमाए थे। जैसे–तैसे करके निवेशकों ने तो अपने पैसे निकाल लिए, लेकिन कमाल कंगाल हो गए थे। इसके बाद कमाल ने लंबा ब्रेक लिया। बाद में वह 2 फिल्में 'मजनून' और 'बहादुरशाह जफर' बनाने वाले थे, जो किसी कारण बन नहीं पाईं। 1993 में कमाल का निधन हो गया और 'रजिया सुल्तान' उनकी आखिरी फिल्म बनकर रह गई। ■

संघ लोक सेवा परीक्षा में पास फेल

औसतन 10 से 13 लाख अभ्यर्थी इस परीक्षा में भाग लेने के लिए आवेदन करते हैं. लगभग पचास प्रतिशत प्रीलिम्स या प्राथमिक परीक्षा से ही अनुपस्थित होते हैं. अर्थात 5 से 6 लाख अभ्यर्थी ही प्रिलिम परीक्षा देने आते हैं. इनमें से 50ः परीक्षार्थी प्रिलिम में ही असफल रहते हैं. संघ लोक सेवा की परीक्षा में अप्रत्याशित प्रश्न रखने की परंपरा है. जिस वर्ष राष्ट्रपति चुनाव था उस वर्ष राष्ट्रपति के चुनाव काल में केरल और मिजोरम से राष्ट्रपति चुनाव में वोटों की संख्या पर प्रश्न आये. जब यूक्रेन युद्ध शुरू हुआ तो उस काल में हुई परीक्षा में यूक्रेन के पडोसी देशों पर प्रश्न पूछे गए. वर्ष 2024 में 1105 पदों की घोषणा हुई और सफलता का प्रतिशत 0.2% था. ■

भारतीय सिनेमा - सर्वाधिक फ्लॉप फिल्मों का हीरो.

21 वीं सदी भारतीय सिनेमा के लिए एक विभिन्न युग है। भारतीय फिल्म इतिहास में पहली बार, बड़े सितारे अपने काम की बोझ को कम कर दिया है। वे साल में एक या दो फिल्मों में अभिनय करते हैं, कुछ और भी कम। इससे अधिक सुपरस्टारों के लिए कम हिट भी हुए हैं, लेकिन अधिकतर के लिए कम फ्लॉप्स भी हैं। यह पिछले सदी से बहुत अलग है जब कई अभिनेता हर साल बारह से अधिक फिल्मों में काम करते थे, कुछ और भी ज्यादा। इस प्रकार के घटनाक्रम ने इस सुपरस्टार के लिए ले आया है, जिनके पास 180 फ्लॉप सिनेमा हैं, जो भारत में किसी भी प्रमुख अभिनेता के सबसे अधिक हैं.

मिथुन चक्रवर्ती भारतीय सिनेमा में एक अभिनेता के रूप में सबसे अधिक फ्लॉप फिल्मों फ्लॉप्स के साथ यह अविश्वसनीय रिकॉर्ड रखते हैं. इन्होने पांच दशकों तक फिल्मी करियर में 270 फिल्मों में काम किया है। इनमें से एक रिकॉर्ड 180 फ्लॉप्स रहे हैं (133 फ्लॉप्स और 47 पूरी तरह से असफल फिल्में)। इस आंकड़े का मुख्य कारण है कि मिथुन ने 80 और 90 के दशक में कई कम बजट वाली फिल्मों में काम किया। शुरुआती 2000 के दशक में, मिथुन के पास 33 लगातार फ्लॉप्स थे। 2007 से लेकर, अभिनेता परियोजनाओं को चुनने में अधिक ध्यान दे रहे हैं और उनकी फ्लॉप सिनेमा की गिनती पिछले दशक में ठहर गई है। मिथुन को लोकप्रियता उच्च दर्जे की है लेकिन उनकी फिल्मों में दो–तिहाई असफल हैं। कारण यह है कि उन्होंने उन फिल्मों के साथ क्या किया है जो सफल रही हैं। मिथुन ने अपनी पहली फिल्म 'मृगया' के साथ राष्ट्रीय बेस्ट एक्टर के राष्ट्रीय पुरस्कार जीता। उन्होंने बॉलीवुड को अपनी पहली ही फिल्म 'डिस्को डांसर' में 100 करोड़ रुपये का हिट दिया। 80 के दशक में, मिथुन ने कई अन्य हिट फिल्मों में भी काम किया, सोलो और संगठन दोनों में। इस सब के साथ–साथ, उनके डांस मूव्स ने उन्हें बॉलीवुड में एक सुपरस्टार बना दिया।

सभी फिल्म नायकों के नाम फ्लॉप सिनेमा की संख्या जुडी है. इस सूची में जीतेंद्र (106 फ्लॉप) धर्मेंद्र (99 फ्लॉप), गोविंदा (75 फ्लॉप), संजय दत्त (70 फ्लॉप) अनिल कपूर (55 फ्लॉप), अजय देवगन (48 फ्लॉप), सलमान खान (36 फ्लॉप) शाहरुख खान (24 फ्लॉप) और आमिर खान (17 फ्लॉप) फिल्में कर चुके हैं. ■

क्रिकेट में असफलता-सफलता की आंख मिचौनी

भारत के लिए क्रिकेट खेलना हर क्रिकेटर का सपना होता है. 140 करोड़ की जनसंख्या वाले इस देश में यह ख्वाब हर किसी का पूरा नहीं हो पाता है. कुछ ऐसे भी खिलाड़ी रह जाते हैं जो फर्स्ट क्लास मैचों में जबरदस्त खेल दिखाने के बावजूद टीम इंडिया के लिए नहीं खेल पाते हैं. उन्हीं खिलाड़ियों में एक एम.वी. श्रीधर भी थे. दाएं हाथ का यह बल्लेबाज इंटरनेशनल क्रिकेट के लिए तरसता रह गया. उसे निराशा ही हाथ लगी.

श्रीधर ने 1988–89 और 1999–2000 के बीच अपने करियर में 21 फर्स्ट क्लास शतक लगाए. श्रीधर हैदराबाद के उन तीन बल्लेबाजों में से एक थे जिन्होंने प्रथम श्रेणी में तिहरा शतक लगाया था. उनके अलावा वीवीएस लक्ष्मण और अब्दुल अजीम ने ऐसा किया था. 1994 में आंध्र प्रदेश के खिलाफ उनकी 366 रनों की पारी रणजी ट्रॉफी में तीसरा सबसे बड़ा व्यक्तिगत स्कोर है. इससे बड़ी पारी भाऊसाहेब निंबालकर (नाबाद 443 रन) और संजय मांजरेकर (377 रन) ने खेली है. उस पारी के दौरान श्रीधर ने एक ऐसा रिकॉर्ड बनाया जो आज भी कायम है. जब वह विकेट पर थे, हैदराबाद ने 850 रन बनाए (वह 30 रन पर 1 विकेट पर आए और 880 रन पर 5 विकेट पर आउट हुए), जो किसी भी बल्लेबाज के क्रीज पर रहने के दौरान किसी टीम द्वारा बनाए गए सर्वाधिक रन थे. क्रिकेट से संन्यास के बाद श्रीधर कई भूमिकाओं में रहे. वे हैदराबाद क्रिकेट के सचिव पद पर भी रहे. एम.वी. श्रीधर टीम इंडिया के मैनेजर भी रहे. साल 2008 में जब भारत की टेस्ट टीम ऑस्ट्रेलिया दौरे पर थी तो उन्होंने कुख्यात 'मंकीगेट' विवाद को सुलझाया था. विवाद को सुलझाने में उनका अहम योगदान था. इससे हरभजन को न केवल सजा से राहत मिली बल्कि भारतीय टीम की नैतिक जीत भी हुई. श्रीधर का पूरा परिवार क्रिकेट प्रेमी था, और उन्होंने कम उम्र में ही क्रिकेट में रुचि दिखानी शुरू कर दी थी.

क्रिकेटर के अलावा वह एक योग्य डॉक्टर थे और उन्होंने हैदराबाद के उस्मानिया मेडिकल कॉलेज से मेडिसिन की पढ़ाई की थी. इस कारण उन्हें डॉ. श्रीधर के नाम से भी जाना जाता था. क्रिकेट के साथ–साथ मेडिकल की पढ़ाई को संतुलित करना उनके लिए एक बड़ी चुनौती थी, लेकिन उन्होंने दोनों क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया. क्रिकेट के अलावा श्रीधर को नृत्य और संगीत में भी रुचि थी। वे कॉलेज में नाटकों का मंचन और स्क्रिप्ट लेखन भी करते थे. साल 2017 में 51 वर्षीय श्रीधर को अपने घर पर दिल का दौरा पड़ा. उन्हें अस्पताल पहुंचाया गया, जहां उन्हें मृत घोषित कर दिया गया.■

कैसे लें असफलता को ?

जीवन में असफलता का सामना करना एक सामान्य अनुभव है, और यह हर व्यक्ति के जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग है। जब हम असफलताओं का सामना करते हैं, तो यह आवश्यक है कि हम सही दृष्टिकोण अपनाएं। पहला कदम है असफलता को एक चुनौती के रूप में देखना। इसे एक अवसर मानें, जिसके माध्यम से आप खुद को सुधार सकते हैं। असफलता के पीछे का कारण समझने का प्रयास करें, ताकि आप अपने अगले प्रयास में बेहतर कर सकें।

दूसरा महत्वपूर्ण तरीका है सकारात्मक सोच बनाए रखना। सकारात्मक दृष्टिकोण आपको चारों ओर की नकारात्मकता से बचने में मदद करता है। इसे सुनिश्चित करने के लिए, आप अपनी सोच में सकारात्मकता को शामिल करेंय जैसे कि 'मैंने इतना सीखा है' और 'अगली बार मैं और बेहतर करूंगा'। इस दृष्टिकोण से, आप खुद को नए प्रयासों के लिए प्रेरित कर सकेंगे। इसके अलावा, अपनी असफलताओं पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, अपनी सफलताओं को याद करने का प्रयास करें।

तीसरा तरीका है समर्थन के लिए अपने आस–पास के लोगों से मदद लेना। अपने दोस्तों, परिवार, या सहकर्मियों से बात करें। वे आपको साझा अनुभवों के माध्यम से प्रेरित कर सकते हैं और आपके दृष्टिकोण को सकारात्मक बना सकते हैं। असफलता के बारे में खुलकर बात करने से आप अपने मन में उपजी चिंताओं को कम कर सकते हैं। अंततः, ध्यान और समर्पण के माध्यम से आप अपनी असफलताओं को पार कर सकते हैं। ध्यान अभ्यास जैसे उपाय आपके मानसिक स्थिति को स्थिर रखने में मदद कर सकते हैं। इस तरह के उपायों के माध्यम से, आप अपने मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रख सकते हैं और अगली चुनौती का सामना और भी अधिक आत्मविश्वास के साथ कर सकते हैं।

इन कहानियों से यह स्पष्ट होता है कि असफलता से न डरें, बल्कि इसे सीखने और आगे बढ़ने का अवसर मानें। जीवन में असफलता और सफलता महत्वपूर्ण चरण हैं और हर अनुभव हमें कुछ न कुछ सिखाता है। जीवन में सफलता और असफलता के तत्व एक–दूसरे के पूरक हैं। सफलता हमें प्रेरणा और आत्म–विश्वास प्रदान करती है, जबकि असफलता सीखने का एक महत्वपूर्ण साधन बनती है। जब हम अपनी असफलताओं का सामना करते हैं, तो हम व्यक्तिगत और पेशेवर दोनों स्तरों पर वृद्धि की राह में कदम रखते हैं। असफलता केवल एक अंत नहीं है, बल्कि यह सफलता की ओर ले जाने वाला एक अनुभव है, जिससे हम जो कुछ भी करते हैं, उसमें ग्राउंडिंग पाते हैं। असफलता के माध्यम से हमने जो सबक सीखे हैं, वे हमेशा हमारे साथ रहते हैं। यह स्थिति हमें अपने लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मजबूर करती है। जब हम चीजों को अपनी गलतियों से सीखते हैं, तो हम और अधिक प्रतिस्पर्धात्मक और समझदारी से अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम होते हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि असफलता की उपस्थिति सफलता के बिना अधूरी है। सफलता के अद्वितीय उपहारों को अनुभव करना हर किसी की इच्छा होती है, लेकिन यह याद रखना जरूरी है कि इस पथ पर अनेकों विफलताएँ भी होती हैं। सफल व्यक्तियों ने अक्सर असफलताओं का सामना किया है, लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी। उनके लिए, असफलता एक संकेत था कि उन्हें अपनी रणनीतियों या दृष्टिकोण में सुधार करने की आवश्यकता है। इस प्रकार, असफलता हमें सदैव आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। ■

सफलता के द्वार से वापसी - ओलम्पिक

सफलता की परछाई है असफलता. अंतर्राष्ट्रीय खेलों में यह दृश्य देखा जाता है कि अनेक कारणों से ओलिंपिक मैडल विजेता खिलाडी से अनेक कारणों से वापिस लिए जाते हैं. मैदान में सर्वोच्च प्रदर्शन और मीडिया में छा जाने के बाद, अचानक यह निर्णय लिया जाता है कि खिलाडी द्वारा मादक दवाओं के सेवन की पुष्टि या अन्य कारणों से उस खिलाडी को दिया गया पदक वापिस लिया जाता है. उल्लेखनीय यह है कि यह घटनाएं वेट लिफ्टिंग और एथेलेटिक्स में देखी जाती हैं.

यह घटना इतनी विस्तृत है कि लगभग पूरा विश्व इससे प्रभावित है. कुल पदक वापसी की संख्या है, 162 जिसमे 55 स्वर्ण, 52 रजत और 55 कांस्य पदक हैं. देशों की बात करें तो रूस शीर्ष पर है, जहाँ के 49 खिलाडियों के पदक वापिस लिए गए, अमेरिका के 13, यूक्रेन और बेलारूस के 11, कजाकिस्तान के 10, बल्गारिया के 7, तुर्की के 5, चीन स्पेन हंगरी उज्बेकिस्तान रोमानिया और स्वीडन से 4–4 पदक वापिस लिए गए, ब्रिटैन माल्दोवा और अर्मेनिआ के 3–3 खिलाडियों से, अजबइजान उत्तर कोरिया और ग्रीस से 2–2 खिलाडियों और बहरैन कनाडा आयरलैंड जमैका पोलैंड क्यूबा जॉर्जिया इटली लुथियाना मंगोलिया नॉर्वे सोवियत रूस के एक एक खिलाडी से पदक वापिस लिया गया है. ■

सफलता का एक सोपान - निरंतरता

अल्पावधि के सफलता के अनेक उदाहरण हैं लेकिन एक उदाहरण ऐसा भी है जो कालजयी कहा जा सकता है. सर्दियों में हर घर में, हर महिला के पर्स पायी जाने वाली हरे रंग की ट्यूब जिसका ब्रांड है बोरोलीन. वर्ष था 1929 और कोलकाता के एक अमीर व्यापारी थे गौरमोहन दत्ता. वे पहले विदेशी दवाइयां आयात करते थे, लेकिन स्वदेशी आंदोलन से प्रेरित होकर उन्होंने जीडी फार्मास्यूटिकल्स कंपनी शुरू की. उनका उद्देश्य था ऐसी दवाइयां बनाना जो आयातित चीजों जितनी अच्छी हों, लेकिन हर भारतीय की जेब के हिसाब से सस्ती. बोरोलीन को बोरिक एसिड, लैनोलिन और जिंक ऑक्साइड मिलाकर बनाया गया. यह क्रीम गहरे घावों, फुंसियों और स्किन की हर समस्या का एक ही समाधान थी. कश्मीर में ठंड से फटी त्वचा ठीक करने के लिए, कन्याकुमारी में तेज धूप से बचाने के लिए, हर जगह इसका इस्तेमाल होने लगा. यह हर उम्र और हर किस्म की त्वचा के लिए एकदम मनपसंद क्रीम थी.

कंपनी की पहली फैक्ट्री पश्चिम बंगाल के चकबागी में 20 एकड़ में स्थापित हुई जमीन पर बनी, और दूसरी गाजियाबाद के मोहननगर में. बोरोलीन के अलावा अब कंपनी सुथोल एंटीसेप्टिक लिक्विड बनाती है, जो गर्मियों में काम आता है, एलेन हेयर ऑयल, ग्लोसॉफ्ट फेस वॉश, पेनोरब लिक्विड पेन रिलीवर जैसे उत्पाद भी. गर्मी में सुथोल की बिक्री ज्यादा होती है, सर्दियों में बोरोलीन की. बोरोलीन का नाम दो शब्दों से आया – बोरो बोरिक पाउडर से और ओलीन लैटिन के ओलियन से. इसका लोगो हाथी वाला है, जो शुभता और स्थिरता का प्रतीक है. 80 साल से ज्यादा से यह लोगो नहीं बदला. कई लोग तो इसे हाथी वाली क्रीम भी कहते हैं. जब 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ, तो गौरमोहन के बेटे देबासिस दत्ता जो कंपनी के एमडी थे इस अवसर पर उन्होंने 1,00,000 से ज्यादा बोरोलीन ट्यूबें मुफ्त बांटीं. बताया जाता है कि इसके प्रशंसक पंडित जवाहरलाल नेहरू से लेकर भारत की बड़ी हस्तियां रहीं. आज जब बाजार सौंदर्य प्रसाधनों और स्किन प्रोडक्ट्स से अटा पड़ा है, बोरोलीन अपनी सफलता के स्थायित्व के 9 दशक पार कर चुका है. ■

सफलता के शिखर से पतन - बायजूस

शिक्षा के क्षेत्र में इस कम्पनी का कभी बड़ा नाम था, टीम इंडिया की जर्सी पर बायजू का लोगो रहता था. शाहरुख खान जैसा सुपरस्टार कंपनी के विज्ञापन करता था. बायजू रविंद्रन इस कंपनी के प्रवर्तक थे, ट्यूशन व्यवसाय में मिली सफलता के बाद बायजू रविंद्रन नौकरी छोड़ कोचिंग के कारोबार में उतर गए. वर्ष 2007 में एक टीचर के वे लोकप्रियता के शीर्ष पर थे. वर्ष 2011 में उन्होंने थिंक एंड लर्न नाम की कंपनी बनाई और बायजू का ऑनलाइन वर्जन लॉन्च लेकर आए. बायजू रविंद्र का यह प्रयोग सफल रहा क्योंकि उनकी ऑनलाइन क्लासेज के वीडियो लाखों छात्रों तक पहुंचे. इसके बाद साल 2015 में उन्होंने बायजू ऐप लॉन्च किया, जिसके चलते यह कंपनी एडटेक सेक्टर में देश की नंबर 1 कंपनी बन गई. कोरोना महामारी में लॉकडाउन लगा तो स्कूल, कॉलेज और कोचिंग सेंटर सब बंद हो गए. यह समय बायजू के लिए वरदान साबित हुआ और कंपनी का व्यवसाय खूब बढ़ा.वर्ष 2020 में यह विश्व का सबसे ज्यादा वैल्यूएशन वाला एडटेक स्टार्टअप था. इस समय कंपनी की वैल्यूएशन 85 हजार करोड़ रुपये के आसपास था. इसी अवधि में कंपनी ने कई स्टार्टअप्स शुरू किए. कंपनी ने आकाश इंस्टीट्यूट, आई रोबोट ट्यूटर, हैशलर्न, व्हाइट जूनियर और टॉपर जैसी कई कपंनियों का अधिग्रहण कर लिया. इसके लिए बायजू ने 1.2 बिलियन डॉलर का कर्ज तक ले लिया.

कोरोना काल में बायजू ने जबरदस्त तरक्की हासिल की, लेकिन महामारी के खत्म होने के बाद मानो बायजू की बर्बादी की उल्टी गिनती शुरू हो गई. कोविड प्रतिबंध खत्म होने के बाद ऑनलाइन कोचिंग को लेकर छात्रों की रूचि कम होने लगी. इससे बायजू के कारोबार को बड़ा धक्का लगा. छात्रों की घटती संख्या के कारण बायजू की आय कम हो गई लेकिन भारी–भरकम निवेश के कारण खर्च बरकरार रहे. एक समय ऐसा आ गया जब कंपनी की मासिक आय 30 करोड़ रही जबकि खर्च 150 करोड़ रुपये था.बायजूस, एक समय देश और दुनिया का सबसे मूल्यवान टेक स्टार्टअप था, लेकिन मूल्यांकन में भारी कटौती के बाद फंडिंग खत्म होने के बाद बुरे संकट में चला गया.

कर्ज के कारण कंपनी की वित्तीय स्थिति लगातार बिगड़ती गई. जब सिंतबर 2022 में करीब 18 महीने की देरी से कंपनी ने अपने वित्तीय आंकड़े जारी किए तो सच्चाई सामने आई. आंकड़ों से पता चला कि बायजूस को वित्त वर्ष 2021 में 4,589 करोड़ का घाटा हुआ. इसके बाद से लगातार कंपनी में कॉरपोरेट गवर्नेंस और अकाउंट्स में गड़बड़ी की बातें सामने आई. कंपनी को छंटनी जैसे फैसले लेने पड़े. निवेशकों की चिंता के बाद सरकार ने इस मामले में दखल दिया. केंद्रीय जांच एजेंसी प्रवर्तन निदेशालय ने कंपनी परिसरों के साथ फाउंडर बायजू रविंद्रन के ठिकानों पर छापे मारे. ■

शिक्षा क्षेत्र के आनंद कुमार - सुपर 30

शिक्षाविद आनन्द कुमार सुपर 30 कार्यक्रम के नाम से जाने जाते हैं जो उन्होंने पटना, बिहार से 2002 में प्रारम्भ किया था. वे आर्थिक रूप से पिछड़े छात्रों को आईआईटी संयुक्त प्रवेश परीक्षा की तैयारी करवाते हैं. वर्ष 2018 के आँकड़ों के अनुसार, उनके द्वारा प्रशिक्षित 480 में 422 छात्र भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के लिये चयनित हो चुके हैं। डिस्कवरी चैनल ने भी इनके कार्यों पर लघु फिल्म बनाई, और उन्हें संयुक्त राज्य अमेरिका के मैसच्युसेट्स प्रौद्योगिकी संस्थान तथा हार्वर्ड विश्वविद्यालय द्वारा उनके कार्यों पर बोलने के लिये निमंत्रण मिला।

आनन्द कुमार का जन्म पटना, बिहार में हुआ था। उनके पिताजी भारतीय डाक विभाग में कर्मचारी थे. पारिवारिक स्थिति के चलते उनकी शिक्षा निजी विद्यालयों के अधिक खर्चों के कारण संभव नही थी तो आनन्द कुमार ने हिन्दी माध्यम के सरकारी विद्यालय में दाखिला लिया, जहाँ उन्हें गणित से अत्यधिक लगाव हो गया। स्नातक शिक्षा के दौरान उन्होंने संख्या सिद्धांत पर कुछ पेपर जमा किये, जिसे मैथमैटिकल स्पेक्ट्रम तथा द मैथमैटिकल गजट में प्रकाशित किया गया। उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में प्रवेश सुरक्षित कर लिया मगर पिताजी की मृत्यु तथा खराब आर्थिक स्थिति के कारण वे दाखिला ले न सके। वे सुबह गणित पर काम करते तथा शाम को परिवार की मदद हेतु माँ के साथ पापड़ बेचने में हाथ बटाते थे। उन्होंने अतिरिक्त पैसे कमाने के लिये बच्चों को गणित पढाना भी प्रारम्भ किया। इनके सुपर 30 संगठन में गरीब छात्रो को IIT की मुफ्त कोचिंग दी जाती है। आनंद कुमार एक गणितज्ञ होने के साथ–साथ एक अच्छे शिक्षक भी हैं. वर्ष 1992 में उन्होंने गणित पढ़ाना आरम्भ कियाऔर इसके बाद 2002 में उन्होंने गरीब छात्रों के विशेष निवेदन पर, जो कि आईआईटी संयुक्त प्रवेश परीक्षा की महंगी कोचिंगों की फीस नहीं दे सकते थे, सुपर 30 कार्यक्रम प्रारम्भ किया, जिसके कारण उन्हें प्रतिष्ठा मिली। इनको पहचान तब मिली जब वर्ष 2009 में डिस्कवरी चौनल ने सुपर 30 पर 3 घंटा लम्बा कार्यक्रम प्रसारित किया. और इसी वर्ष अमेरिकी समाचारपत्र द न्यूयॉर्क टाइम्स ने आधे पन्ने पर उनके बारे में दो लेख लिखा। अभिनेत्री व् पूर्व मिस जापान नोरिका फुजिवारा पटना आयीं तथा उन्होंने आनन्द कुमार के कार्यों पर एक लघु फिल्म बनायी। उन्हें बीबीसी के कार्यक्रमों में भी स्थान मिला है। उन्होंने अपने अनुभवों के बारे में भारतीय प्रबंध संस्थान, अहमदाबाद, कई आईआईटी, ब्रिटिश कोलम्बिया विश्विद्यालय, टोक्यो विश्वविद्यालय, तथा स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय में भाषण दे चुके हैं। उनके आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को निःशुल्क शिक्षा देने के काम के कारण लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी उनका नाम दर्ज हुआ। टाइम पत्रिका ने सुपर 30 को बेस्ट ऑफ एशिया 2010 की सूची में भी स्थान दिया। इन्हें 2010 में इंस्टिट्यूट ऑफ रीसर्च एण्ड डॉक्युमेंटेशन इन सोशल साइंसेस द्वारा एस रामानुजन पुरस्कार दिया गया।

सुपर 30 को पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा के विशेष सिपहसालार राशिद हुसैन ने देश का सर्वश्रेष्ठ संस्थान कहा। न्यूजवीक पत्रिका ने आनन्द कुमार के कार्यों का संज्ञान लेते हुए उनके संस्थान को चार सर्वाधिक अभिनव संस्थान में स्थान दिया। उन्हें नवम्बर 2010 में बिहार सरकार का सर्वोच्च पुरस्कार ''मौलाना अबुल कलाम आजाद शिक्षा पुरस्कार'' मिला और उन्हें जर्मनी के सैक्सोनी प्रान्त के शिक्षा विभाग द्वारा सम्मानित किया गया। आनन्द कुमार को राष्ट्रपति राम नाथ कोविन्द द्वारा ''राष्ट्रीय बाल कल्याण पुरस्कार'' प्रदान किया गया। कैलिफोर्निया के सैन जोस में ऑर्गनाइजेशन की 25 वीं सालगिरह के मौके पर एक समारोह में 'फाउंडेशन फॉर एक्सीलेंस' (एफएफई) द्वारा 46 वर्षीय कुमार को 'एजुकेशन एक्सीलेंस अवार्ड 2019' दिया गया। वर्ष 2021 का स्वामी ब्रह्मानंद पुरस्कार सम्मान भी प्राप्त हुआ है। ■

जलसंरक्षण सफलता के नायक - राम बाबू तिवारी

''धौरा तेरा पानी, गजब करी जाए, गगरी न फूटे, खसम मर जाए''. जिस इलाके में एक मटकी पानी की तुलना महिलाएं अपने पति से कर बैठती है, ऐसे क्षेत्र के रहने वाले हैं राम बाबू तिवारी। सूखा प्रभावित बुंदेलखंड के एक छोटे से गांव अधांव के राम बाबू तिवारी का पूरा बचपन पानी के लिए संघर्ष करते हुए बीता है। बुंदेलखंड इलाके के कुछ दोस्तों के साथ मिलकर बनाई पानी चौपाल। जिसका उद्देश्य था पानी के प्रति जागरूकता फैलाना। उन्होंने गांव–गांव जाकर पानी चौपाल करना शुरू किया। पानी चौपाल के माध्यम से लोगों को जोड़ने का प्रयास करने लगें। समय के साथ उन्होंने एक ऐसा माहौल खड़ा कर दिया कि लोग आपने आस–पास की झीलों तालाबों के बारे में बात करने लगे। साफ और सुरक्षित बनाने लगे। समय के साथ उन्होंने पूरे बुंदेलखंड क्षेत्र में अब तक 5000 जल मित्र बना दिए। जागरूकता लाने के लिए उन्होंने धार्मिक कार्यक्रम से लेकर नुक्कड़ नाटक तक सब कुछ किया, लोगों को भंडारा खिलाकर श्रम दान से जोड़ा और इस तरह 10 साल की मेहनत के बाद वह बुंदेलखंड के 75 तालाबों का पुनः निर्माण करने में सफल हो गए हैं। ■

सफलता के द्वार के लौटे व्यक्ति

संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा उत्तीर्ण करना हर भारतीय युवा का स्वप्न होता है. लेकिन अनेक व्यक्ति इस परीक्षा में सफल होने के बाद भी अन्य विकल्पों की तरफ चल पड़े. ऐसे कुछ व्यक्ति है :

रोमन सैनी : वर्ष 1991 में जन्मे रोमन राजस्थान के एक मध्यम वर्गीय शिक्षित परिवार से आते हैं. मात्र 16 वर्ष की आयु में उन्होंने आल इंडिया इंडिया मेडिकल संस्थान में प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण की और इसी संस्थान को चिकित्सक के रूप में सेवाएं दीं. 22 वर्ष की आयु में उन्होंने संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा में 18वां स्थान प्राप्त किया और जबलपुर में सहायक कलेक्टर के रूप में पदस्थ हुए. वर्ष 2016 में उन्होंने सेवा से त्यागपत्र देकर शिक्षण के क्षेत्र में प्रवेश किया. वे अनअकैडमी नामक निजी शिक्षण संस्थान चलाते हैं.

जयराम रमेश : प्रसिद्ध अर्थशास्त्री और राजनीतिज्ञ ने संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा उत्तीर्ण की लेकिन उन्होंने नौकरी करने की अपेक्षा अर्थशास्त्र विषय में आगे बढ़ने का निर्णय लिया. वे कालांतर में केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री रहे.

अरविन्द केजरीवाल : भारतीय राजस्व सेवा के संघ लोक सेवा आयोग द्वारा चयनित अधिकारी रहे, नौकरी से त्यागपत्र दिया और राजनीति में आये, वे दिल्ली राज्य के मुख्यमंत्री रहे.

रघुराम राजन : संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद नौकरी न कर अर्थशास्त्र को चुना और वे भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर रहे.

प्रणय स्वरुप : संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा उत्तीर्ण कर भारतीय पुलिस सेवा में अधिकारी रहे. नौकरी से त्यागपत्र देकर वे फिल्म निर्माण के क्षेत्र में आये. आज वे तेलुगु फिल्म उद्योग का एक बड़ा नाम हैं.

नंदिनी के आर : संघ लोक सेवा आयोग परीक्षा 2016 में सफलता के शीर्षस्थ स्थान को प्राप्त करने के बाद भी उन्होंने नौकरी नहीं की और शिक्षा के क्षेत्र में काम करने का निर्णय लिया.

सुभाष चंद्र बोस : आईसीएस के परीक्षा में चौथा स्थान प्राप्त करने के बाद नेताजी ने नौकरी न कर देश सेवा के मध्यम राजनीति को चुना और स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लिया.

कपिल सिब्बल : वर्ष 1973 में संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा उत्तीर्ण की. अपनी इच्छित विदेश सेवा में चयन न होने के कारण उन्होंने आईएएस की नौकरी न कर उन्होंने हारवर्ड विश्वविद्यालय से कानून की पढाई की और सुप्रीम कोर्ट में वकालत करने को वरीयता दी. वे देष के अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल और मानव संसाधन मंत्री रह चुके हैं.

एम् एस स्वामीनाथन : भारत में हरित क्रांति के प्रणेता वैज्ञानिक संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा उत्तीर्ण कर भारतीय पुलिस सेवा में चयनित अधिकारी थे. उन्होंने कृषि विज्ञान और अनुसन्धान को चुना.

टी आर अँधिआरुनझा : वर्ष 1958 में संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा उत्तीर्ण कर भारतीय विदेश सेवा में चयन के बाद उन्होंने कानून को अपना रुचि का क्षेत्र बनाया.

इकबाल धालीवाल : 1996 की संघ लोक सेवा आयोग परीक्षा में उत्तीर्ण लोगों की सूची में इनका शीर्षस्थ स्थान था. वर्ष 2002 में उन्होंने सेवा से त्यागपत्र देकर अब्दुललतीफ जमाल पावर्टी एक्शन लैब अमेरिका में सेवाएं दे रहे हैं.

लोकसभा में प्रस्तुत जानकारी के अनुसार 2008 के बाद कुल 59 आईएएस और आईपीएस अधिकारी सेवाओं से त्यागपत्र दे चुके हैं. ■

TELCO में पहली महिला इंजीनियर सुधा मूर्ति

सुधा मूर्ति की कहानी भारतीय कॉर्पोरेट इतिहास में एक प्रेरणादायक उदाहरण बन चुकी है। उन्होंने TELCO (अब टाटा मोटर्स) का एक विज्ञापन देखा जिसमें लिखा था "Lady candidates need not apply", तो उन्हें यह बहुत अन्यायपूर्ण और भेदभावपूर्ण लगा। उन दिनों (1970 के दशक में) इंजीनियरिंग जैसी पुरुष–प्रधान फील्ड में महिलाओं की भागीदारी बेहद सीमित थी। लेकिन सुधा ने इस रूढ़ि को चुनौती देने का साहस दिखाया। उन्होंने जे.आर.डी. टाटा को एक संक्षिप्त पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने पूछा कि टाटा जैसे प्रतिष्ठित समूह से इस प्रकार की लैंगिक भेदभाव की उम्मीद नहीं की जाती। उन्होंने तर्क दिया कि योग्यता का निर्धारण लिंग के आधार पर नहीं, प्रतिभा और मेहनत से होना चाहिए। इस पत्र ने जे.आर.डी. को इतना प्रभावित किया कि उन्होंने तुरंत सुधा मूर्ति को इंटरव्यू के लिए आमंत्रित किया। इंटरव्यू में उन्होंने अपने ज्ञान, आत्मविश्वास और निष्ठा से सबको प्रभावित किया और उन्हें टेल्को में नौकरी मिल गई। उनका जन्म उत्तरी कर्नाटक में शिगांव में 19 अगस्त 1950 को हुआ था। पति नारायण मूर्ति ने जब इंफोसिस की स्थापना की तो सुधा मूर्ति ने उन्हें 10000 रुपये उधार दिए और अपनी नौकरी छोड़कर कंपनी शुरू करने में पति की मदद की। सुधा मूर्ति ने आठ उपन्यास लिखे हैं। सुधा मूर्ति के दो बच्चे हैं। बेटी अक्षता मूर्ति ब्रिटेन में रहने वाली भारतीय फैशन डिजाइनर हैं और यूके के पूर्व प्रधानमंत्री ऋषि सुनक की पत्नी हैं। ब्रिटिश के पूर्व प्रधानमंत्री ऋषि सुनक सुधा मूर्ति के दामाद हैं। ■

महिलाएं जिनकी सफलता को दुनिया ने नमन किया

– रूचिता तुषार नीमा

असफलता ही सफलता का मार्ग निर्धारित करती है। असफलता अकेले नहीं आती, अपने साथ लाती है खुद पर से विश्वास का कम होना, निराशा, व्यथित मन, अकेलापन और भी बहुत कुछ, जिससे इंसान अवसाद में चला जाता है। लेकिन डंका उसी का बजता है, जिसने अपनी इन कमियों पर विजय प्राप्त की, जिसने कभी हार नहीं मानी और सफलता के चरम को छुआ और अगर हम बात करें महिलाओं की, जिन्होंने सफलता का परचम फहराया तो उनके लिए तो मुश्किलें अनगिनत रही होंगी। कुछ भारतीय महिलायें हैं –

1. महामहिम द्रौपदी मुर्मू – आदरणीय द्रौपदी मुर्मू पहली आदिवासी महिला हैं। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू झारखंड के राज्यपाल के रूप में देश की पहली आदिवासी महिला राज्यपाल थी और अब देश के राष्ट्रपति के रूप में वे पहली आदिवासी महिला राष्ट्रपति हैं। आर्थिक स्थिति ठीक न होने का कारण, कॉलेज की पढ़ाई करने के बाद परिवार की आर्थिक जरूरतें पूरी करने के लिए वे नौकरी करने लगीं। इस दौरान वे साथ रह रहीं लड़कियों के लिए खाना बनातीं, बाजार से उनकी जरूरत के सामान लातीं और ऑफिस भी जाती थीं। पति और बेटों की असमय मृत्यु के बाद पूरी तरह से टूट चुकी मुर्मू जी ने स्वयं को सम्हाला और स्कूल में अध्यापन का कार्य शुरू हुआ, और यही से उनकी सामाजिक और राजनीतिक यात्रा की शुरुआत हुई। अपने कर्तव्यनिष्ठ और ईमानदार स्वभाव के कारण वो आज देश की प्रथम महिला है।

2. पद्म श्री कल्पना सरोज – कल्पना सरोज का जन्म महाराष्ट्र के एक गरीब दलित परिवार में हुआ था। मात्र 12 वर्ष की उम्र में उनका विवाह हो गया और उन्हें मानसिक व शारीरिक प्रताड़ना का सामना करना पड़ा। घर वालों की बदनामी से बचने के लिए समाज ने उन्हें और उनके परिवार को अलग–थलग कर दिया भी था। गहरे अवसाद में उन्होंने आत्महत्या का प्रयास किया, लेकिन उन्होंने हिम्मत जुटायी और 16 वर्ष की उम्र में वापस मुंबई आकर दिन में दो रुपये की मजदूरी पर सिलाई का काम शुरू किया। धीरे.धीरे उन्होंने सरकारी ऋण लेकर अपना खुद का बुटीक खोल लिया। साल 2001 में कमानी ट्यूब्स कंपनी दिवालिया हो चुकी थी। मजदूरों ने कल्पना के पास मदद मांगने आएकृउन्होंने कंपनी को खरीदकर फिर से जीवन दिया और उसे ₹100 करोड़ से भी ज्यादा टर्नओवर के संगठन में बदल दिया। आज कल्पना सरोज केवल एक सफल व्यवसायी ही नहीं, बल्कि महिला सशक्तिकरण की मिसाल हैं। उन्होंने पद्मश्री सम्मान प्राप्त किया और अपनी मेहनत से ₹2 की दिहाड़ी से ₹2000 करोड़ रूपये के व्यावसायिक साम्राज्य का निर्माण किया। कल्पना सरोज ने अपनी मेहनत और आत्म.विश्वास से दिखा दिया कि सफलता के मार्ग पर कोई भी छोटा कदम बेकार नहीं होता।

3. अरुणिमा सिन्हा – इनकी कहानी आशा, साहस और अटूट दृढ़ संकल्प की है। एक दुर्घटना में अपना पैर गंवाने के बाद, उन्होंने माउंट एवरेस्ट फतह करने का फैसला किया और दुनिया की पहली दिव्यांग महिला पर्वतारोही बनीं, जिन्होंने सभी सात महाद्वीपों की सबसे ऊंची चोटियों पर चढ़ाई की है। उनकी कहानी दर्शाती है कि कैसे चुनौतियों को पार करके असाधारण उपलब्धियां हासिल की जा सकती हैं।

4. कमल कुंभार – एक दिहाड़ी मजदूर की बेटी, जिन्होंने असफल शादी से निकलकर कमल पोल्ट्री और एकता सखी प्रोड्यूसर कंपनी की स्थापना की, जिससे उस्मानाबाद क्षेत्र की 3,000 महिलाओं को ग्रामीण उद्यम स्थापित करने में मदद मिली।

5. मंगते चुंगनेइजैंग ''मैरी'' कॉम – एक भारतीय ओलंपिक मुक्केबाज, राजनीतिज्ञ और राज्यसभा की पूर्व सदस्य हैं। वह छह बार विश्व एमेच्योर मुक्केबाजी चौम्पियनशिप जीतने वाली और पहली सात विश्व चौंपियनशिप में से प्रत्येक में पदक जीतने वाली एकमात्र महिला मुक्केबाज हैं, और आठ विश्व चौम्पियनशिप पदक जीतने वाली एकमात्र मुक्केबाज (पुरुष या महिला) हैं। 25 अप्रैल 2016 को, भारत के राष्ट्रपति ने मैरी कॉम को भारतीय संसद के ऊपरी सदन, राज्यसभा के सदस्य के रूप में नामित किया। कॉम का जन्म मणिपुर के चुराचांदपुर जिले के मोइरांग लमखाई के कागाथेई गांव में हुआ था। वह एक गरीब कॉम परिवार से थी। उसके माता–पिता, किरायेदार किसान थे, जो झूम खेतों में काम करते थे। कॉम विनम्र परिवेश में पली–बढ़ी, अपने माता–पिता को खेत से जुड़े कामों में मदद करती, स्कूल जाती और शुरुआत में एथलेटिक्स और बाद में एक साथ मुक्केबाजी सीखती।

इन सबके साथ ही अनेक भारतीय महिलाएं है, जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों मे भी असफलता से हार न मानकर, अपनी हिम्मत और समझदारी से सफलता के चरम को छुआ और दुनिया में संदेश दिया कि हार कर बैठ जाना ही जीवन का उद्देश्य नहीं है। अपने हौसलों की उड़ान से अपनी मंजिल को प्राप्त कर दूसरों के लिए राह बनाना ही सफलता है।■

ई मेल – tushar.rn86@gmail.com

21वीं सदी का नशा : इंस्टाग्राम, फेसबुक और रील्स...

– डॉ. विजय गर्ग

आज की दुनिया में, जहाँ तकनीक ने हमारे जीवन के हर पहलू को छू लिया है, वहीं सोशल मीडिया एक ऐसी ताकत बनकर उभरा है जिसने मनोरंजन और सूचना के तरीके को पूरी तरह से बदल दिया है। लेकिन, इंस्टाग्राम, फेसबुक और खास तौर पर रील्स का बढ़ता चलन अब एक 'नए नशे' के रूप में देखा जा रहा है। यह नशा किसी मादक पदार्थ की तरह ही हमारे दिमाग और व्यवहार पर गहरा असर डाल रहा है। आखिर क्यों बन रहा है यह 'नशा'? रील्स और शॉर्ट वीडियो का फॉर्मेट हमारी तुरंत संतुष्टि की जरूरत को पूरा करता है। इसके पीछे का विज्ञान ''डोपामाइन नामक हॉर्मोन से जुड़ा है। हर नई रील, लाइक या कमेंट पर हमारे दिमाग में डोपामाइन तेजी से निकलता है, जो हमें खुशी और इनाम की अनुभूति कराता है। यह ठीक वैसा ही है जैसा शराब या जुए की लत में होता है। सोशल मीडिया प्लेटफार्म्स को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि एक के बाद एक वीडियो आते रहते हैं, जिससे ''और देखने'' की लालसा बनी रहती है और हम समय की परवाह किए बिना घंटों स्क्रॉल करते रहते हैं। दूसरों की 'परफेक्ट' लाइफस्टाइल, यात्रा या उपलब्धियों को देखकर मन में यह डर बैठ जाता है कि कहीं हम कुछ मिस न कर दें, जिससे बार–बार ऐप्स चेक करने की आदत पड़ जाती है।

यह 'डिजिटल नशा' सिर्फ समय की बर्बादी नहीं है, बल्कि इसके दूरगामी और गंभीर परिणाम होते हैं। खुद की तुलना वीडियो में दिखने वाले लोगों से करने पर हीन भावना और निराशा पैदा होती है। लगातार शॉर्ट और तेज–तर्रार कंटेंट देखने से हमारी एकाग्रता की क्षमता कम होती है, जिससे पढ़ाई या काम पर ध्यान लगाना मुश्किल हो जाता है। इसे डिजिटल डिमेंशिया तक कहा जा रहा है। रात को देर तक रील्स देखने से नींद का चक्र बिगड़ता है। लंबे समय तक एक ही जगह बैठे रहने से मोटापा और अन्य स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं बढ़ सकती हैं। वास्तविक जीवन के संवाद और रिश्तों पर ध्यान कम हो जाता है, जिससे परिवार और दोस्तों के साथ संबंधों में तनाव आता है। लाइक और व्यूज की चाहत में युवा खतरनाक और जान जोखिम में डालने वाले स्टंट करने लगते हैं। युवाओं का कीमती समय जो शिक्षा, कौशल विकास या रोजगार जैसे जरूरी सवालों पर लगना चाहिए, वह मनोरंजन और स्क्रॉलिंग में बर्बाद होता है।

समाधान की ओर : डिजिटल डिटॉक्स

इस 'नशे' से निकलने के लिए जरूरी है कि हम आत्म–नियंत्रण और डिजिटल डिटॉक्स को अपनाएं। समय सीमा तय करें: मोबाइल में मौजूद स्क्रीन टाइम फीचर का इस्तेमाल करके ऐप्स के लिए समय निर्धारित करें। वैकल्पिक गतिविधियों को अपनाएं। खाली समय में किताबें पढ़ें, आउटडोर गेम्स खेलें या कोई नया कौशल सीखें। अनावश्यक नोटिफिकेशनों को बंद कर दें ताकि बार–बार फोन देखने की आदत कम हो। सोने से कम से कम एक घंटा पहले मोबाइल को खुद से दूर रखें।

निष्कर्ष के तौर पर, इंस्टाग्राम, फेसबुक और रील्स जैसे प्लेटफॉर्म मनोरंजन के अच्छे साधन हो सकते हैं, लेकिन जब ये 'नशे' में बदल जाते हैं तो ये हमारी सेहत, रिश्तों और भविष्य को बर्बाद कर सकते हैं। 21वीं सदी में हमें इस नए खतरे को पहचानना होगा और डिजिटल दुनिया में रहते हुए भी संतुलन बनाना सीखना होगा।

व्यक्तिगत स्तर पर – समय–सीमा तय करें: दिन में कितने घंटे सोशल–मीडिया इस्तेमाल करेंगे। स्क्रीन–फ्री समय रखें – शाम को मोबाइल–इस्तेमाल कम करें, पढ़ाई–मिलन के लिए समय दें। वास्तविक मिलन–जुलन बढ़ाएँ कृ मित्र–परिवार के साथ आमने–सामने बातचीत, खेल–कूद, हौबीज। यदि लगता हो कि कंट्रोल खो रहा है, तो पेशेवर मदद लें – साइकोलॉजिस्ट–काउंसलिंग उपयुक्त हो सकती है।

पारिवारिक/शैक्षणिक स्तर पर माता–पिता–शिक्षक–बच्चों में संवाद बढ़ाएँ, सोशल–मीडिया के लाभ–हानि पर खुलकर चर्चा करें। स्कूल–कॉलेज में डिजिटल नागरिक शिक्षा शामिल करें कि कैसे सोशल–मीडिया सुरक्षित, संतुलित रूप से इस्तेमाल करें। परिवार में रात–का समय–मोबाइल–मुक्त रखें कृ उदाहरण–स्वरूप, भोजन–के समय–स्क्रीन बंद।

नीति–निर्माता/प्रौद्योगिकी–स्तर पर प्लेटफॉर्म्स को डिजाइन–दृष्टि से समीक्षा करनी होगी। जैसे कि यूजर इंगेजमेंट बढ़ाने के बजाय यूजर वेल–बीइंग पर ध्यान देना। सरकार–संस्थान सामाजिक–मीडिया लत पर रिसर्च, नीति, मैनुअल्स बनाएं।

भारत जैसे देश में, जहां युवा जनसंख्या बड़ी है और स्मार्टफोन–उपयोग तेजी से बढ़ रहा है, यह विषय और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। हमें यह समझना होगा कि सोशल–मीडिया खुद बुरा नहीं, बल्कि अनियंत्रित, असमझ उपयोग हमें परेशान कर सकता है। हममें–से हर एक–व्यक्ति, परिवार और समाज को मिलकर इस "डिजिटल नशे" की दिशा में सतर्क रहना है, संतुलित उपयोग अपनाना है, और आवश्यक हो तो मदद लेने से नहीं डरना है। ■

– सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब, मो. 9465682110

सन्दर्भवश

–दिल्ली का हवा गुणवत्ता सूचकांक चिंता का विषय है. सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी स्वागतेय है कि 'हम हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठ सकते'. पछुआ हवाओं की अनुपस्थिति इस वायु प्रदूषण का बड़ा कारण माना जा रहा है. इन हवाओं की अनुपस्थिति जलवायु परिवर्तन का दुष्परिणाम है, जिसका तात्कालिक समाधान नहीं हो सकता. सघन वनीकरण, निर्माण गतिविधियों पर नियंत्रण, लोक परिवहन को निजी वाहनों के प्रयोग पर वरीयता और पराली जलाने पर नियंत्रण से ही वायु गुणवत्ता सुधारी जा सकती है.

– कई बरस पहले देश की चीनी सीमा पर किसी सड़क की मरम्मत के लिए खर्च स्वीकृति के लिए यह जानना आवश्यक हुआ कि यह सड़क हमने कब बनाई थी, तो पता चला कि यह सड़क हमने कभी बनाई ही नहीं थी, चीन हमारी सीमा में कब सड़क बना गया हमें होश नहीं था. ऐसा ही मामला मध्य प्रदेश के निमाड़ में सामने आया कि जिस स्कूल को सरकार शासकीय स्कूल समझकर दशकों से वेतन और अन्य खर्चों को वहन कर रही थी, वह वास्तव में एक निजी स्कूल था. अब उस स्कूल को कुछ करोड़ का वसूली नोटिस भेजा गया है. निर्धारित आयु की अवधि के बाद भी शासकीय सेवा में बने रहने के अनेक मामले यदा कदा सामने आते हैं, जेलों में सजा काट रहे अनेक लोग वास्तव में वे नहीं हैं जिन्हें अदालत ने सजा सुनाई, किसी की जगह किसी और का नौकरी करना अपवाद नहीं है हमारे देश में. दुष्यंत के शब्द हैं, आइये आँखें मूंद लें, ये नजारे अजीब हैं.

– मतदाता सूची में स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन की कहानी में नया मोड़ है, 26 बीएलओ (बूथ लेवल अधिकारी) अकाल मृत्यु को प्राप्त. काम का दबाव, इस रिवीजन के औचित्य, समय सीमा और लक्ष्यों के पुनर्निर्धारण पर चर्चा शुरू है. सरकारी कर्मचारी काम के दबाव के चलते अगर आत्महत्या करता, तो रोज रिक्रूटमेंट ड्राइव चलानी पड़ती. एक दृष्टि इस रिवीजन के काम के दबाव पर। करीब 800 से 1000 वोटरों की जांच करनी थी एक माह में, औसत 4 वोटर हर परिवार में मान लें तो 250 घर विजिट करने थे 30 दिन में, क्या सितम हो रहा था कौन सा ऐसा काम का दबाव था ? और अगर यह काम असंभव था तो कई कर्मचारी इनाम कैसे पा रहे काम पूरा करने पर ? एक एसडीएम ने अपने क्षेत्र में रिवीजन पूरा कर अपने सारे बीएलओ के साथ पार्टी की, ढोल बजाया गया. मध्यप्रदेश सरकार ने एक बीएलओ को काम पूरा करने पर हेलीकॉप्टर यात्रा का ईनाम दिया. आत्महत्या करुणा का मसला नहीं है, जो कानूनन अपराध है उसका महिमा मंडन ठीक नहीं. मुद्दा यह है कि इस रिवीजन के विरोध में सारा बवाल दो राज्यों में ही क्यों है. बहरहाल चुनाव आयोग ने समयसीमा बढ़ा दी है।

– खबर ये है कि पूर्व अमेरिकन राष्ट्रपति बिडेन के एक सैकड़ा के लगभग आदेश अध्यादेश ट्रंप इस बिना पर रद्द करने वाले हैं कि वे ऑटोपेन से दस्तखत हैं. यह एक ऐसा पेन है जिससे हजारों बार एक से हस्ताक्षर किए जा सकते हैं. ऑटोपेन आज सीखा है अमेरिका ने, हमारे देश में सरपंच की सील सचिव के जेब में, बलवंतराय मेहता के पंचायती राज की अवधारणा जितनी पुरानी है. मनरेगा मजदूरों के जॉब कार्ड, बैंक पासबुक और एटीएम कार्ड सरपंच के झोले में होना आम बात है. मजे की बात यह है कि अगर ऑटोपेन होता तो उस रात महामहिम फखरुद्दीन अली को सोते से जगाना न पड़ता, ऑटोपेन एकदम सही सही दस्तखत बना देता आपातकाल की घोषणा पर.

– नीट यूजी में नकली दिव्यांगता प्रमाण पत्र के एक मामले में प्राथमिकी दर्ज होने का समाचार है. पूर्व में एक राज्य के अनेक शिक्षक नौकरी पाने के लिए नकली श्रवण विकलांगता का प्रमाण पत्र देने के दोषी पाये थे. एक बड़े देश की एयरलाइंस के प्रवक्ता का कहना है कि हवाई यात्रा में व्हील चेयर की मांग करने वाले अधिकतम भारतीय हैं, जिन्हें वास्तव में व्हीलचेयर की आवश्यकता नहीं है. ऐसे में व्हील चेयर के जो वास्तविक उपयोगकर्ता हैं उन्हें यह सुविधा नहीं मिल पाती. यदि एयरलाइंस व्हील चेयर के उपयोग पर कोई शुल्क वसूलने की सोचे तो उसे दिव्यांगों के प्रति असंवेदनशील माना जायेगा. इसी एयरलाइन के आगमन पर उतरते, हर भारतीय यात्री से पूछा जाता है, गलती से आप कंबल तो नहीं ले जा रहे ? ये सम्मान है हमारे नागरिकों का. संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा में भी अनेक आवेदक छूट लेने के लिए फर्जी प्रमाण पत्र देने के आरोप झेल रहे हैं.

– बिहार चुनाव के परिणाम आये तो आर. के. लक्ष्मण का कार्टून याद आया. दृश्य यह है कि एक कमरा जिसका दरवाजा खुला है अंदर एक बड़ी टेबल पर बहुत से नेता बैठे हैं, दरवाजे पर खड़ा नेता पत्रकारों से कह रहा है, हमने पूरे दिन हार पर मंथन किया और निर्णय यह है कि हम इसलिए हारे कि मतदाताओं ने हमें वोट नहीं दिया!

– इंडिगो एयरलाइंस के परिचालन में व्यवधान, मात्र कंपनी का आंतरिक मानव संसाधन संबंधी मामला नहीं है. यात्रियों को हुई असुविधा के लिए नागरिक उड्डयन मंत्रालय की भूमिका भी प्रश्नों के कटघरे में है. स्थिति का लाभ उठाने के लिये अन्य एयरलाइंस द्वारा अपने यात्री किरायों में निर्मम वृद्धि एक अच्छा संकेत नहीं है. एक कंपनी की आपदा अन्य के लिए अवसर न हो, इसके लिए डायरेक्टर जनरल सिविल एविएशन को चिंता के अतिरिक्त, कुछ करने की आशा रखता है देश. ■

नवलय अनुबोध

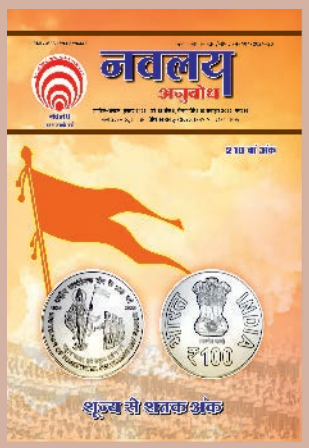

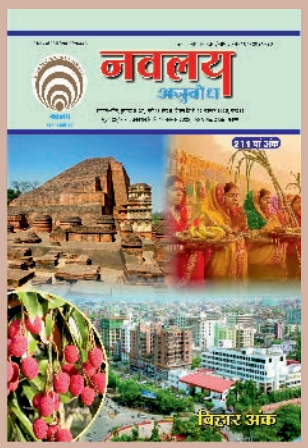

राष्ट्रवाद और संस्कृति के पोषण तथा समाज में सकारात्मक परिवर्तन के सार्थक अभियान का हिस्सा बनने के लिये नवलय अनुबोध पत्रिका के सदस्य बनकर सहभागी बनिये

द्विवार्षिक रू. 500/– वार्षिक सहयोग राशि रू. 300/– का भुगतान

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया की किसी भी शाखा में/ नेट बैंकिंग/गूगल पे/पेटीएम से कर सकते हैं

इस माह जिनसे सहयोग राशि प्राप्त हुई :
1. श्री नन्दकुमार सनमुखानी, भोपाल 2. श्री हिम्मत सिंह जैन, नीमच

खाते का नाम - नवलय अनुबोध (Navalaya Anubodh)

खाता क्र. - 3018974905

बैंक - सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, जेल रोड, भोपाल

IFSCode – CBIN 0283134

क्यू आर कोड को स्केन कर राशि प्रेषित कर सकते हैं।

NAVLAYA ANUBODH
10302432@cbin

पत्रिका की मुद्रित प्रति के लिये
आपका डाक का पता व प्रेषित राशि की सूचना
मो. क्र. 9755380050 पर भेजें

डाक पंजीयन- म.प्र./भोपाल/4-167/2024-26

RNI - MPBIL/2008/26448

नवलय

छोटे साहबजादों

बाबा जोरावर सिंह जी एवं बाबा फतेह सिंह जी

(26 दिसम्बर 1704) के अमर बलिदान को समर्पित

वीर बाल दिवस

पर उन्हें शत्-शत् नमन

प्रकाशक एवं मुद्रक राकेश कुमार जैन द्वारा स्वामित्व नवलय के लिए 54, जोन-2, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल-462011 से प्रकाशित एवं श्री श्रद्धा ऑफसेट प्रिंटर्स, एस-बी-2, लोअर ग्राउण्ड, विजय स्तम्भ, एम.पी. नगर, भोपाल द्वारा मुद्रित